नख-मयूखोन्मुखानामनुगलं (१) गलद्भिर्वलयैः कण्ठबन्धानिवोपपादयन्ती केकारवोद्विग्ना भवनशिखण्डिनाम्, पदे पदे च कुसुमधवलान् करेण गृहलता-पल्लवान् (२) मनसा च देवस्य गुणगणानवलम्बमाना तमेव क्रीड़ापर्वतकमागत-वती, यत्र स्थितवान् देवः (च)। तमुपेत्य च 'देवेनात्र मरकतशिला-मकरिका-प्रणाल-प्रस्रवण-सिच्यमान-हरित-लतामण्डपे शीकरिणि (३) शिलातले स्थितम्, अत्र गन्धोदक-परिमल-लीनालिजाल-जटिल-शिलाप्रदेशे स्नातम्, अत्र कुसुम-धूलि-सिकतिले गिरि-नदिका-तटे (४) भगवानर्च्चितः शूलपाणिः, अत्र क्षेपित-

---

केकाशब्देन उद्विग्ना कादम्बरी, अतएव जलधारावद्धवला ये नखमयूखाः कादम्बर्य्या एव नखकिरणास्तेषु उन्मुखानां जलधाराभ्रमेण उन्नमितवदनानां। अत्र भ्रान्तिमानलङ्कारो व्यक्तः। भवनशिखण्डिनां गृहपालित-मयूराणां, गलेषु कण्ठेष्वित्यनुगलं विभक्त्यर्थे अव्ययीभावः, गलद्भिः समर्पणमात्रेणैवाधः पतद्भिः वलयैः कटकैः, कण्ठबन्धान् उपपादयन्ती कुर्व्वतीव, सति सामर्थ्ये उद्वेजकानां निग्रहावश्यकत्वादिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। किञ्च पदे पदे प्रतिपदक्षेपं करेण हस्तेन, कुसुमैर्धवलान् गृहलतापल्लवान् भवनसंसृष्टवल्लीकिसलयानि अवलम्बमाना दधाना, तथा मनसा च कुसुमवद्धवलान् देवस्य भवतो गुणगणान् अवलम्बमाना दधाना चिन्तयन्ती।

(च) तमिति। किञ्च, कादम्बरी तं क्रीड़ापर्व्वतकमुपेत्य दिवसं क्षपितवतीत्यन्वयः। मरकतशिलाया यो मकरिकाप्रणाली मकराकारजलनिःसरणयन्त्रं तस्मात् प्रस्रवणेन जलनिर्गमेन सिच्यमानः, हरितो हरिद्वर्णः लतामण्डपो यस्मिन् तत्र, अतएव शीकरिणि जलबिन्दुवति अत्र शिलातले, देवेन चन्द्रापीड़ेन स्थितम्। गन्धोदक-परिमलैः सुगन्धजलसौरभैः लीनं संसक्तं यदलिजालं भ्रमरसमूहस्तेन जटिलो विषमीकृतो यः शिलाप्रदेशः

বলিয়া লক্ষ্য না করায় পুষ্পের উপরে পড়িয়া যাইবেন'—এই ভয়েই যেন ভ্রমরগণ শব্দ করিয়া তাঁহাকে বিক্ষিপ্ত পুষ্পগুলি জানাইয়া দিল; আবার তিনি গৃহপালিত ময়ূরগণের কেকারবে উদ্বিগ্ন হইয়া শাসনের নিমিত্ত তাহাদের গলদেশে বলয় অর্পণ করিয়া যেন গল-বন্ধন করিয়া দিলেন, তখন সেই বলয়গুলি নীচের দিকে সরিয়া পড়িতে লাগিল এবং সেই ময়ূরগণ জলধারার ন্যায় শুভ্রবর্ণ নখের কিরণের দিকে মুখ উত্তোলন করিতে লাগিল। এবং কাদম্বরীদেবী প্রত্যেক পদক্ষেপে, পুষ্প থাকায় ধবলবর্ণ গৃহলতার পল্লবগুলিকে হস্তে ধারণ করিয়া এবং পুষ্পের ন্যায় ধবলবর্ণ আপনার গুণগ্রাম মনে মনে চিন্তা করিয়া সেই ক্রীড়াপর্ব্বতে আসিলেন, যেখানে আপনি অবস্থান করিয়াছিলেন। (চ) সেখানে আসিলে পর, 'মরকতমণির মকরাকার জলযন্ত্র হইতে জলনিঃসরণে যাহার হরিতবর্ণ লতামণ্ডপটিকে সিক্ত করিয়াছিল এবং যেখানে জলবিন্দুসমূহ ছড়াইয়া পড়িতেছিল, এই সেই শিলাতল; এইখানে রাজপুত্র অবস্থান করিয়াছিলেন, ভ্রমরগণ গন্ধজলের সৌরভে সংলগ্ন হইয়া যাহাকে উঁচু নিচু করিয়াছিল, এই

---

(१) अनुपदं। (२) क्वचिद्‌गृहपदं नास्ति। (३) सीकरिणि। (४) गिरिनदीकाननतटे।

शशधर-रोचिषि स्फाटिक-(१) शिलातले भुक्तम्, अत्र संक्रान्त-चन्दन-रस-लाञ्छने मुक्ताशैलशिलापट्टे सुप्तम्' इति परिजनेन पुनरुक्तं निवेद्यमानानि देवस्यैव स्थान-चिह्नानि पश्यन्ती क्षपितवती दिवसम् (च)। दिवसावसाने च कथमपि महाश्वेता प्रयत्नादनभिमतमपि तस्मिन्नेव स्फटिकमणिशिलावेश्मन्याहारमकरोत्। अस्तमुपगते भगवति रवौ, उदिते चन्द्रमसि, तत्रैव कश्चित् कालं स्थित्वा चन्द्रकान्तमयीव चन्द्रोदये प्रत्यार्द्रीकृततनुश्चन्द्रबिम्ब-प्रवेशभयेनेव करौ कपोलयोः कृत्वा किमपि चिन्तयन्ती, मुकुलितेक्षणा क्षणमात्रं स्थित्वोत्थाय विमल-नख-निपतित-शशि-प्रतिमाभर-गुरुणेव कृच्छ्रादुत्क्षिपन्ती, लीला-मन्थर-गमन-पटूनि

पाषाणमयस्थानं तस्मिन्। कुसुमधूलिभिः पुष्पपरागैः सिकतिले सञ्जातसैकते अत्र गिरिनदिकातटे पार्वत्यक्षुद्र-सरित्तीरे। क्षेपितं क्षियं प्रापितं शशधररोचिश्चन्द्रालोको येन तस्मिन् चन्द्रादपि शुभ्रे इत्यर्थः। संक्रान्तं संलग्नं चन्दनरस एव लाञ्छनं चिह्नं यत्र तस्मिन्, मुक्ताशैलशिलापट्टे मुक्तातुल्यशुभ्रपार्वत्यपाषाणखण्डे। इतीत्थं परिजनेन पुनरुक्तं असकृद्यथा स्यात्तथा निवेद्यमानानि, देवस्य भवत एव। क्षपितवती अतिवाहितवती।

(छ) दिवसेति। चन्द्रापीडो यस्मिन् भुक्तवान् तस्मिन्नेवेत्यर्थः। चन्द्रकान्तमयीव चन्द्रकान्तमणिनिष्पन्नेव चन्द्रोदये प्रत्यार्द्रीकृता स्वती जलनिर्गमरूपघर्म्माविर्भावाच्च क्लिन्ना तनुः शरीरं यस्याः सा। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। केचित्तु चन्द्रकान्तमयी पुत्तलिकेवेति विवृण्वन्तः पूर्णोपमामाचक्षते। कृत्वा अर्पयित्वा, कामोद्दीपक-चन्द्रबिम्बप्रवेशबाधनार्थेति भावः। अत्र हेतूत्प्रेक्षालङ्कारः। मुकुलितेक्षणा मुद्रितनयना। विमलेषु नखेषु चरणयोरिव नखरेषु निपतिता याः शशिप्रतिमाश्चन्द्रप्रतिबिम्बानि तासां भरेण भारेण गुरुणेव भारवन्तीव, अन्यथा कृच्छ्रादुत्क्षेपणं नोपपद्यते इति भावः। लीलया विलासेन मन्थरगमने मन्दसञ्चरणे पटूनि दक्षाणि, पदानि चरणौ। न्यासानां बहुत्वेन बहुवचनमुपचारादिति दिक्। अत्र गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः।

সেই প্রস্তরময় স্থান; এইখানে রাজপুত্র স্নান করিয়াছিলেন। এই একটি ক্ষুদ্র পার্ব্বত্য-নদীর তীর, ইহা পুষ্পের রেণুতে বালুকাময় হইয়াছিল; এইখানে রাজপুত্র ভগবান্ শিবের পূজা করিয়াছিলেন। চন্দ্রকিরণেরও লজ্জাজনক এই স্ফটিকময় শিলাখণ্ডের উপরে চন্দ্রাপীড় ভোজন করিয়াছিলেন। এবং যাহার উপরে চন্দনের চিহ্ন পড়িয়াছিল, এই সেই মুক্তার ন্যায় শুভ্রবর্ণ পার্ব্বত্যশিলাখণ্ড; এইখানে রাজপুত্র শয়ন করিয়াছিলেন' এইভাবে পরিজনগণ বারংবার আপনারই অবস্থানের চিহ্নগুলি দেখাইয়া দিতে লাগিল, কাদম্বরী তাহা দেখিতে দেখিতে দিন অতিবাহিত করিলেন। (ছ) দিনের শেষভাগে মহাশ্বেতার চেষ্টায় কোন প্রকারে অনভিমত হইলেও সেই স্ফটিকমণিময় গৃহেই ভোজন করিলেন। তাহার পর ভগবান্ সূর্য্য অস্তমিত হইলে ও চন্দ্র উঠিলে সেই গৃহেই কিয়ৎকাল অবস্থান করিয়া, চন্দ্রোদয়ে চন্দ্রকান্ত-মণি-নির্ম্মিতের ন্যায় আর্দ্রদেহে, চন্দ্রমণ্ডলের প্রবেশের ভয়েই যেন গণ্ডযুগলের উপরে করযুগল

---

(১) স্ফটিক...।

पदानि शय्यागृहमगात् (छ)। शयन-निक्षिप्त-गात्रयष्टिश्च, ततः प्रभृति प्रबलया शिरोवेदनया विचेष्टमाना, दारुणेन च दाहरूपिणा ज्वरेणाभिभूयमाना केनाप्याधिना मङ्गलप्रदीपैः कुमुदाकरैश्चक्रवाकैश्च सार्द्धमनिमीलितलोचना दुःखदुःखेन क्षणदामनैषीत् (ज)। उषसि च मामाहूय देवस्य वार्त्ताव्यतिकरोपलम्भाय (१) सोपालम्भमादिष्टवती। (झ)

चन्द्रापीड़स्तदाकर्ण्य जिगमिषुः "अश्वोऽश्वः" इति वदन् भवनान्निर्ययौ। आरोपितपर्य्याणञ्च त्वरित-तुरग-परिचारकोपनीतमिन्द्रायुधमारुह्य, पश्चादारोप्य

(ज) शयनेति। किञ्च, शयने शय्यायां निक्षिप्ता स्थापिता गात्रयष्टिर्यया सा। ततः प्रभृति शयनादवधि। विचेष्टमाना स्पन्दमाना। केनाप्यनिर्वचनीयेन आधिना मनोव्यथया। मङ्गलप्रदीपैः शयनगृहवर्त्तिभिरिति शेषः। अनिमीलितलोचना अमुद्रितनयना सती। रात्रौ प्रदीपानां स्वत एव प्रकाशात् कुमुदानां चन्द्रोदयेन विकासात् चक्रवाकानाञ्च वियोगवशादनिमीलितलोचनात्वमिति भावः। दुःखदुःखेन गुरुतरकष्टेन क्षणदां रात्रिं अनैषीत् अतिवाहितवती। अत्र प्रदीपकुमुदयोरनिमीलितलोचनत्वं प्रकाशमात्रं कादम्बरीचक्रवाकयोस्तु नयनमुद्रणाभाव इति भेदेऽप्यभेदाध्यवसायादतिशयोक्तिस्तन्मूला च सहोक्तिरलङ्कारः।

(झ) उषसीति। देवस्य भवतः, वार्त्ताव्यतिकरोपलम्भाय कर्णे वार्त्तासम्पर्कप्राप्तये वृत्तान्तश्रवणायेत्यर्थः। सोपालम्भं सतिरस्कारम्। त्वं खलु मे विवेकः प्रियभृत्यः सन्नपि ममैवातिथिभूतस्य राजपुत्रस्येदानीमपि सुखसुप्तिवार्त्तामादातुं न गच्छसीति तिरस्कारप्रकारः।

(ञ) चन्द्रेति। आरोपितं यथास्थानमर्पितं पर्य्याणं पल्ययनं यस्य तं, त्वरितेन सत्वरेण तुरगपरिचारकेण अश्वरक्षकेण उपनीतमुपस्थापितं। पश्चात् स्वस्यैव पश्चाद्भागे। द्वारपालस्य अर्पितम्ताररं इन्द्रायुधो

স্থাপন করিয়া কোন বিষয় ভাবিতে লাগিলেন এবং মুদ্রিতনয়নে ক্ষণকাল থাকিয়া আবার উঠিলেন, নির্ম্মল নখসমূহের উপরে চন্দ্রের প্রতিবিম্ব পড়িয়াছিল, তাহার ভারে তাঁহার চরণযুগলও যেন ভারী হইয়া পড়িল; সুতরাং বিলাস-মন্দ-গমনে দক্ষ সেই চরণযুগলকে কষ্টক্রমে উত্তোলন করিতে করিতে শয়নগৃহে গমন করিলেন। (জ) তাহার পর শয্যার উপরে দেহখানি রাখিলেন এবং তদবধি অত্যন্ত শিরোবেদনায় ছটফট্ করিতে লাগিলেন ও দারুণ দাহ-জ্বরে আক্রান্ত হইলেন—এই অবস্থায় অনির্ব্বচনীয় মনঃপীড়ায়, মাঙ্গলিক প্রদীপ, কুমুদ ও চক্রবাকগণের সহিত অমুদ্রিতনয়নে ও অত্যন্ত দুঃখে রাত্রি অতিবাহিত করিলেন। (ঝ) এবং প্রাতঃকালে আমাকে ডাকিয়া তিরস্কার করিয়া আপনার বৃত্তান্ত জানিবার জন্য আদেশ করিলেন।

(ঞ) চন্দ্রাপীড় সেই কথা শুনিয়া কাদম্বরীর বাড়ী যাইতে ইচ্ছা করিলেন এবং "অশ্ব অশ্ব" এই কথা বলিতে বলিতে গৃহ হইতে নির্গত হইলেন। কোন অশ্বরক্ষক তাড়াতাড়ি পালান লাগাইয়া ইন্দ্রায়ুধকে আনিয়া উপস্থিত করিল; চন্দ্রাপীড় তাহাতে আরোহণ করিয়া

(१)...उपालम्भाय।

पत्रलेखाम्, स्कन्धावारे स्थापयित्वा (१) वैशम्पायनम्, अशेषं परिजनं (२) निवर्त्तंर च अन्यतुरगारूढ़ेनैव केयूरकेणानुगम्यमानो हेमकूटं ययौ। आसाद्य च कादम्बरी-भवनद्वारमवततार (३) अवतीर्य्य च (४) द्वारपालार्पिततुरङ्गः कादम्बरी-प्रथम-दर्शन-कुतूहलिन्या च पत्रलेखया चानुगम्यमानः प्रविश्य "क्व देवी कादम्बरी तिष्ठति" इति सम्मुखागतमन्यतमं वर्षवरं (५) अप्राक्षीत् (ञ)। कृतप्रणामेन च तेन "देव! मत्तमयूरस्य क्रीड़ापर्वतकस्याधस्तात् कमलवनदीर्घिकातीरे विरचितं हिमगृहमध्यास्ते" इत्यावेदिते केयूरकेणोपदिश्यमानवर्त्मा प्रमदवन-मध्येन गत्वा किञ्चिदध्वानं, मरकतहरितानां कदलीवनानां प्रभया शष्पीकृतरवि-

---

थेन सः। कादम्बर्य्याः प्रथमदर्शने कुतूहलमस्या अस्तीति तया पत्रलेखया, चकारात् केयूरकेण चानुगम्य-मानः। वर्षवरं नपुंसकम्। सहायेनतया प्राणैव राज्ञः सम्मतीकृतत्वात्तदनुमोदनेन च प्रविशन्तं चन्द्रापीड़ं न कश्चिन्निवारयामासेति बोध्यम्।

(ट) कृतेति। मत्ता मयूरा यस्मिन् तस्य। कमलवनेन पूर्णा दीर्घिका कमलवनदीर्घिका तस्या-स्तीरे, विरचितं निर्म्मितं हिमगृहं जलोद्गारयन्त्रसत्त्वात् शीतलं वेश्म, अध्यास्ते अधितिष्ठति। "आधारो-ऽधिशीङ्स्थासां कर्म्म" इत्यधिकरणस्य कर्म्मत्वम्। मरकतवत् हरिता हरिद्वर्णास्तेषां। शष्पीकृता नूतन-तृणवद्दृश्यमानीकृता रविकिरणा यत्र तं, अतएव हरितायमानं हरिद्वर्णीभूतं। अत्र शष्पीकरणासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिरलङ्कारो लुप्तोपमया सङ्कीर्य्यते।

পত্রলেখাকে পিছনের দিকে উঠাইয়া, বৈশম্পায়নকে শিবিরে রাখিয়া এবং ভৃত্যদিগকে সঙ্গে আসিতে নিষেধ করিয়া, হেমকূটপর্ব্বতে প্রস্থান করিলেন; কেয়ূরক অন্য কোন অশ্বে আরোহণ করিয়া তাঁহার পশ্চাৎ পশ্চাৎ যাইতে লাগিল। এই ভাবে চন্দ্রাপীড় কাদম্বরীর বাটীর দ্বারে উপস্থিত হইয়া অশ্ব হইতে অবতরণ করিলেন এবং অবতরণ করিয়া কোন দ্বারপালের নিকট অশ্বটি রাখিয়া ভিতরে প্রবেশ করিলেন, কাদম্বরীকে প্রথম দেখিবার নিমিত্ত কৌতুকবতী পত্রলেখা এবং কেয়ূরকও তাঁহার পশ্চাৎ পশ্চাৎ প্রবেশ করিতে লাগিল; পরে কোন নপুংসক সম্মুখে উপস্থিত হইলে চন্দ্রাপীড় তাহাকে জিজ্ঞাসা করিলেন—"কাদম্বরী-দেবী কোথায় আছেন?" (ট) সে প্রণাম করিয়া জানাইল—"রাজকুমার! মত্ত ময়ূরগণ যাহাতে অবস্থান করে, সেই ক্রীড়াপর্ব্বতের নীচে পদ্মবন-পরিপূর্ণ দীর্ঘিকার তীরে একখানি শীতল গৃহ নির্ম্মিত আছে; কাদম্বরীদেবী তাহাতে অবস্থান করিতেছেন। তাহার পর কেয়ূরক পথ বলিয়া দিতে দিতে চলিল—এই অবস্থায় চন্দ্রাপীড় প্রমদউদ্যানের মধ্য দিয়া কিছু পথ যাইয়া,

---

(१) संस्थापयित्वा। (२) अशेषपरिजनं। (३) अवततार तुरगात्।
(४) क्वचित् चकारो नास्ति। (५) वर्षधरं।

किरणं हरितायमानं दिवसं ददर्श (ट)। तेषाञ्च मध्ये निरन्तर-नलिनीदल-छन्नं हिमगृहमपश्यत् (ठ)। तस्माच्च निष्पतन्तमार्द्रांशुकच्छलेनाच्छोदजलेनेव संवीतम्, (ड) बाहुलताविष्टैर्मृणालवलयैराभरणकैरिव धवलितावयवम्, (ढ) आपाण्डुभिश्चैकश्रवणाश्रयैस्ताड़ङ्कीकृतैः(१) केतकीगर्भदलैरुपहसितदन्तपत्रम्,(ण) आलिखितचन्दनललाटिकानि मुखारविन्दानि बद्धसौभाग्यपदानीव (२) दधानम् (त) कृतचन्दनविन्दुविशेषकांश्च दिवापि स्पर्शलोभस्थितेन्दुप्रतिबिम्बानिव

(ठ) तेषामिति। तेषां कदलीवनानां। निरन्तरैर्घनैः, नलिनीदलैरानीतैः पद्मपत्रैः; छन्नमावृतम्।

(ड) तस्मादिति। किञ्च, तस्मात् हिमगृहात् निष्पतन्तं निर्गच्छन्तं, आर्द्रांशुकच्छलेन स्तिमितवसनव्याजेन, अच्छोदस्य सरसो जलेनेव संवीतमावृतदेहम्। आर्द्रांशुकाच्छोदजलयोः शुभ्रतासाम्यादिति भावः। अत्र आत्युत्प्रेक्षालङ्कारः। इतो द्वितीयैकवचनान्तपदानि परिजनमद्राक्षीदिति वक्ष्यमाणस्य परिजनमित्यस्य विशेषणानि।

(ढ) बाह्विति। आभरणकैरिव रजतालङ्कारैरिव बाहुलताविष्टैर्मृणालवलयैः धवलिताः शुभ्रीकृताः, अवयवा अङ्गानि यस्य तम्। अत्र श्रौतोपमालङ्कारः।

(ण) आपेति। किञ्च, आपाण्डुभिरतीवपाण्डुरैः, एकं श्रवणं कर्णं आश्रयो येषां तैः, ताड़ङ्कीकृतैः कर्णभूषणीकृतैः केतक्याः पुष्पस्य गर्भदलैः, उपहसितं स्वसौन्दर्यातिरेकात् परिहसितं दन्तपत्रं गजदन्तनिर्मितपत्राकाराभरणं यस्य तम्। अत्रोपहसितमित्यनेन सादृश्याक्षेपादार्थोपमालङ्कारः।

(त) आलीति। आलिखिताश्चित्रिताः चन्दनस्य ललाटिकास्तिलकविशेषा येषु तानि,- अतएव बद्धानि निर्मितानि सौभाग्यपदानि भर्तृप्रियतासूचकचिह्नानि येषु तानीव स्थितानि, मुखारविन्दानि दधानम्। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालुप्तोपमयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(थ) कृतेति। कृताश्चन्दनविन्दव एव विशेषकास्तिलकानि येषु तान्, अतएव दिवापि रात्रौ तु

মরকতমণির ন্যায় হরিদ্বর্ণ কদলীবনের প্রভায় সূর্য্যের কিরণগুলিকে নূতন তৃণের ন্যায় করায়, সে স্থানে দিনটিকে হরিদ্বর্ণ দেখিলেন। তাহার পর সেই কদলীবনের মধ্যে ঘন ঘন পদ্মপত্রে আচ্ছাদিত সেই হিমগৃহ দর্শন করিলেন। (ড) আরও দেখিলেন—কাদম্বরীর কতকগুলি পরিচারিকা সেই হিমগৃহ হইতে নির্গত হইতেছে, আর্দ্রবসনচ্ছলে অচ্ছোদ-সরোবরের জলেই যেন তাহাদের দেহ আবৃত করিয়াছে। (ঢ) অলঙ্কারের ন্যায় ভুজলতা-ধৃত কতকগুলি মৃণালবলয় তাহাদের অঙ্গপ্রত্যঙ্গ ধবলবর্ণ করিয়াছে। (ণ). পাণ্ডুবর্ণ ও কর্ণাভরণ কেতকী-পুষ্পের ভিতরের পত্রগুলি এক কর্ণে থাকিয়া গজদন্ত নির্ম্মিত পত্রাকার কর্ণালঙ্কারকে উপহাস করিতেছে। (ত) তাহাদের মুখপদ্মে সৌভাগ্যসূচক চিহ্নের ন্যায় চন্দন দ্বারা টিপ্ চিত্র করা ছিল। (থ) কপোলদেশে চন্দনবিন্দুর তিলক ছিল, তাহাতে বোধ হইতেছিল যে,

(१) ताल्ङ्कीकृतैः। (२)...पद्मानीव।

कपोलानुद्वहन्तम्, (थ) अपहृताशेषशिरीषसौभाग्याभिः शैवलमञ्जरीभिः कृतकर्णपूरम्, (द) कर्पूरधूलिधूसरेषु मलयज-रस-लव-लुलितेषु वकुलावली-वलयेषु स्तनेषु न्यस्तनलिनीपत्रप्रावरणम्, (ध) अनवरत-चन्दन-चर्च्चा-प्रणयन-पाण्डुरैः सन्ताप-रोष-स्फुदित-चन्द्र-करैरिव (१) करैः कल्पितमृणालदण्डानि विसतन्तुमयानि चामराणि बिभ्राणम्, (न) उन्नालैश्च कमलैः कुमुदैः कुवलयैः किसलयैः कदलीदलैः कमलिनीपलाशैः कुसुमस्तवकैश्चातपत्रीकृतैर्निवारिता-

---

चन्द्रोदयात्तत्प्रतिविम्बानि सम्भवन्त्येव किन्तु दिवसेऽपीत्यर्थः, स्पर्शलोभेन स्थितानि इन्दोश्चन्द्रस्य प्रतिविम्बानि येषु तानिव स्थितान्, चन्दनविन्दुचन्द्रप्रतिविम्बानां साम्यादिति भावः। कपोलानुद्वहन्तं गण्डदेशान् धारयन्तम्। अत्र चन्द्रप्रतिविम्बस्थित्युत्प्रेक्षणात् क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(द) अपेति। अपहृतानि अशेषाणि समस्तानि शिरीषस्य पुष्पस्य सौभाग्यानि श्वेतत्वकोमलत्व-शीतलत्वानि याभिस्ताभिः। अत्रान्यं नान्यसौभाग्यापहरणासम्भवाद्वस्तुसम्बन्धोऽसम्भवन् सौभाग्यसादृश्यमाक्षि-पतीत्यसम्भवद्वस्तुसम्बन्धा निदर्शनालङ्कारः।

(ध) कर्पूरेति। कर्पूरस्य धूलिभिः परागैर्धूसरेषु, मलयजरसस्य चन्दनद्रवस्य लवैर्विन्दुभिः लुलितेषु विच्छुरितेषु, तथा वकुलावलीनां वकुलकुसुममालानां वलयानि मण्डलानि येषु तेषु, स्तनेषु न्यस्तानि अर्पितानि नलिनीपत्रप्रावरणानि पद्मपत्रावरणानि यस्य तम्।

(न) अनेति। अनवरतं चन्दनचर्चाया चन्दनलेपनस्य प्रणयनेन करणेन पाण्डुराः शुभ्रास्तैः, अतएव सन्तापेन उद्दीपकतया सन्तापजननेन यो रोषश्चन्द्रं प्रति क्रोधस्तेन हेतुना स्फुदिताः पिष्टा ये चन्द्रस्य कराः किरणास्तैरिव, करैर्हस्तैः, कल्पितौ विहितौ मृणालमेव दण्डौ येषां तानि, विसतन्तुमयानि मृणालसूत्र-निर्म्मितानि चामराणि, बिभ्राणं धारयन्तम्। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः।

(प) उन्नालैरिति। किञ्च। उन्नतमुपरि स्थितं नालं येषां तैरिति सर्वत्र योज्यम्। नालमत्र हस्तं शाखादण्डञ्च यथासम्भवं ज्ञेयौ। कमलिनीपलाशैः पद्मिनीपत्रैः। आतपत्रीकृतैश्छत्रीकृतैर्मस्तकोपरि-धृतैरित्यर्थः। निवारित आतपः सूर्यालोको यस्य तम्।

তাহাদের স্পর্শের লোভেই যেন দিনের বেলায়ও চন্দ্রের প্রতিবিম্ব আসিয়া অবস্থান করিতেছে। (দ) তাহারা সমস্ত শিরীষকুসুমের সৌন্দর্য্যাপহারী শৈবালমঞ্জরী দ্বারা কর্ণালঙ্কার করিয়াছিল। (ধ) তাহাদের স্তনমণ্ডল কর্পূররেণুতে ধূসরবর্ণ ও চন্দন-বিন্দুতে পরিপূর্ণ ছিল, তাহার উপরে আবার বকুলফুলের মালা দুলিতেছিল এবং পদ্মপত্রের আবরণ ছিল। (ন) তাহাদের হাতগুলি নিরন্তর চন্দন লেপন করায় শুভ্রবর্ণ ছিল, তাহাতে, চন্দ্র সন্তাপ জন্মাইয়া থাকেন বলিয়া, তাঁহার প্রতি ক্রোধবশতঃ তাঁহারই নিষ্পিষ্ট কিরণসমূহের ন্যায় সেই হাতগুলিকে দেখা যাইতেছিল; সেই হস্ত সমূহদ্বারা তাহারা মৃণাল-দণ্ডসমন্বিত ও মৃণালসূত্রেই নির্ম্মিত কতকগুলি চামর ধারণ করিতেছিল। (প) এবং সেই পরিচারিকাদিগের মধ্যে কেহ পদ্ম, কেহ শ্বেতোৎপল, কেহ

---

(১)...আরক্তচন্দ্রকরৈরিব, সন্তাপরোষপ্রকটিত...।

तपम्, (प) जलदेवतानामिव समूहम्, वरुणश्रियामिव समागमम्, शरदामिव समाजम्, सरसीनामिव गोष्ठीवन्धम्, (फ) शिशिरोपचारनिपुणं कादम्बर्य्याः शरीरपरिचारकं शरीरप्रायं परिजनमद्राक्षीत्। (ब)

तेन च प्रणम्यमानः पादनखपतनभयादिव (१) त्वरितापसृतेन दीयमानमार्गः (भ) चन्दनपङ्ककृतवेदिकानां पुण्डरीककलिकाघटितघण्टिकानां विकसितसिन्धुवार-(२) कुसुममञ्जरीचामराणां लम्बितस्थूलमल्लिकामुकुलहाराणामाबद्धलवङ्ग-(३) पल्लव-चन्दन-मालिकानां दोलायमान-कुमुद-दामध्वजानां

(फ) जलेति। जलदेवतानां समूहमिव, क्लिन्नदेहत्वादिति भावः, एवमन्यत्रापि। जात्युत्प्रेक्षा। वरुणस्य याः श्रियः सम्पदस्तासां समागमं सम्मेलनमिव वरुणस्य जलदेवतात्वात्तच्छ्रियमपि जलक्लिन्नदेहत्वसम्भव इत्याशयः। सम्मिलितवरुणश्रीसमूहमिवेति विवक्षणादत्रापि जात्युत्प्रेक्षैव। शरदामृतूनां समाजं समूहमिव। जात्युत्प्रेक्षा। सरसीनां सरोवराणां गोष्ठीवन्धं सभानिर्म्माणमिव। अत्रापि सम्भ्रान्तसरसीनां समूहमिवेति तात्पर्य्याज्जात्युत्प्रेक्षैव।

(ब) शिशिरेति। शिशिरोपचारे शीतलक्रियायां निपुणस्तम्। शरीरप्रायं देहतुल्यं प्रियमित्यर्थः।

(भ) तेनेति। तेन परिजनेन, पादनखानां चन्द्रापीड़चरणनखराणां पतनभयादिव कोमलत्वात् स्वशिरोघर्षणेन स्खलनभयादिव त्वरितमपसृतेन कथञ्चिद्दूरं गतेन सता प्रणम्यमानो दीयमानमार्गश्च चन्द्रापीडः कदलीतोरणानां तलेन प्रविश्य सर्व्वतो निसृष्टदृष्टिर्वर्त्त्यमाणं सर्व्वं दृष्टवान् अन्यांश्चैवम्प्रकारान् वीक्षमाणः सन् हिमगृहकस्य मध्यभागमाससादेत्यन्वयः। अत्र हेतूत्प्रेक्षालङ्कारः।

(म) कदलीतोरणानि विशेषयन्नाह चन्दनेति। चन्दनस्य पङ्केन गाढ़द्रवेण कृता लिप्तीकृता वेदिका मूलबद्धभूमयो येषां तेषां। पुण्डरीककलिकाभिः श्वेतपद्मकोरकैः घटिता निर्म्मिता घण्टिकाः क्षुद्रघण्टा येषां तेषां। विकसितानां सिन्धुवारकुसुमानां मञ्जर्य्य एव चामराणि येषां तेषां। लम्बिताः स्थूलमल्लिकामुकुलानां

নীলোৎপল, কেহ পল্লব, কেহ কদলীপত্র, কেহ পদ্মপত্র এবং কেহ পুষ্পগুচ্ছ মস্তকের উপর রাখিয়া রৌদ্র নিবারণ করিতেছিল ; সেই পদ্ম প্রভৃতির নাল ও দণ্ড উপরে ছিল। (ফ) আর তাহাদিগকে জলদেবতা সমূহের ন্যায়, সম্মিলিত বরুণ-সম্পদের ন্যায়, শরৎকাল সমূহের ন্যায়, এবং একত্র সমবেত সরোবর সমূহের ন্যায় দেখা যাইতেছিল। (ব) এবং তাহারা শীতল কার্য্য করিতে দক্ষ ও নিজের শরীরের ন্যায় কাদম্বরীর প্রিয় ছিল।

(ভ) তাহার পর সেই পরিচারিকারা, চন্দ্রাপীড়ের চরণের নখ পড়িয়া যাইবার ভয়েই যেন তাড়াতাড়ি দূরে সরিয়া প্রণাম করিয়া পথ ছাড়িয়া দিলে, চন্দ্রাপীড় যে সকল কদলীতোরণের নীচ দিয়া প্রবেশ করিলেন, তাহার মূলের বেদীর উপরটা গাঢ় চন্দন দ্বারা লেপন করা হইয়াছিল, শ্বেতপদ্মের কলিকাদ্বারা তাহার ক্ষুদ্র ঘণ্টা নির্ম্মাণ করিয়াছিল, প্রস্ফুটিত নিসিন্দা ফুলের মালা

(१) पादतलपतन..., पादनखतपनंदाहभयादिव। (२)...सिन्दुवार...। (३) लवङ्ग...।

मृणालवेत्रहस्ताभिर्गृहीतरुचिरकुसुमाभरणाभिर्मधु-लक्ष्मीप्रतिकृतिभिरिव (१) द्वारपालिकाभिरधिष्ठितानां कदलीतोरणानां तलेन प्रविश्य सर्वतो निसृष्टदृष्टिर्दृष्टवान्—(म) क्वचिदुभय-तट-निखात-(२) तमालपल्लव-कृत-वन-लेखाः कुमुद-(३) धूलि-वालुका-पुलिन-मालिनीश्चन्दनरसेन-प्रवर्त्त्यमाना गृहनदिकाः,—(य) क्वचिन्निचुल-मञ्जरी-रचित-रक्त-चामराणां जलार्द्रवितानकानां तलेषुससिन्दूरकुट्टिमेषु आस्तीर्य्यमाणानि रक्तपङ्कजशयनानि, (र) क्वचिदेलारसेन सिच्यमानानि

कारा येषु तेषाम्। आबद्धाः संयोजिताः लवङ्गानां चन्दनानाञ्च कुसुमानां मालिका येषु तेषाम्। दोलायमानाः कुमुददामान्येव ध्वजाः पताका येषु तेषाम्। मृणालमेव वेत्रं हस्ते यासां ताभिः, गृहीतानि रुचिराणि कुसुमाभरणानि याभिस्ताभिः, तथा मधुलक्ष्म्याः वसन्तश्रियः प्रतिकृतिभिः प्रतिमूर्त्तिभिरिव। निसृष्टदृष्टिः दत्तदृष्टिः। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः।

(य) किं किं दृष्टवानित्याह क्वचिदिति। उभयतटयोर्गृहनदिकानामेव उभयतीरयोः निखातैः प्रोथितैस्तमालपल्लवैः कृता वनलेखा वनश्रेणयो यासां ताः, तथा कुमुदानां धूलयो रेणव एव वालुका स्तासां पुलिनमालाः सैकतश्रेणय आसां सन्तीति ताः, चन्दनस्य रसेन जलेन करणेन, प्रवर्त्त्यमाना निर्म्मीयमाणाः, गृहनदिकाभवनीय-क्षुद्रनद्यः, दृष्टवानित्यन्वयः, एवमन्यत्राप्यन्वयो बोध्यः।

(र) क्वचिदिति। निचुलमञ्जरीभिर्हिज्जलपुष्पमञ्जरीभिः रचितानि निर्म्मितानि रक्तानि लोहितवर्णानि चामराणि येषां तेषाम्, जलेनार्द्राणि यानि वितानकानि क्षुद्रक्षुद्रचन्द्रातपा स्तेषाम्, तलेषु अधोदेशेषु, ससिन्दूराणि सिन्दूररञ्जितानि यानि कुट्टिमानि बद्धभूमय स्तेषु, आस्तीर्य्यमाणानि प्रसार्य्यमाणानि, रक्तपङ्कजशयनानि रक्तवर्णपद्मशय्याः। "निचुलो हिज्जलोऽम्बुजः" इत्यमरः।

দ্বারা চামর করিয়াছিল, বড় বড় মল্লিকাফুলের হার ঝুলাইয়া রাখিয়াছিল, লবঙ্গ ও চন্দনফুলের মালা বাঁধিয়া দিয়াছিল, উপরে শ্বেতোৎপল-মালার পতাকা দুলিতেছিল এবং মৃণাল-যষ্টিহস্তা ও সুন্দর পুষ্পালঙ্কার-ধারিণী কতকগুলি দ্বারপালিকা, বসন্তলক্ষ্মীর প্রতিমূর্ত্তি সমূহের ন্যায় সেই কদলীতোরণগুলির নিকট অবস্থান করিতেছিল। তাহার পর চন্দ্রাপীড় সকল দিকে দৃষ্টিপাত করিয়া দেখিলেন—(য) কোন স্থানে চন্দন জলদ্বারা কতকগুলি ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র নদী নির্ম্মাণ করিয়াছে, সে গুলির দুই পারেই তমালের পল্লব পুতিয়া বন তৈয়ারি করিয়া দিয়াছে এবং ভিতরে শ্বেতোৎপলের রেণুরূপ বালুকার পুলিনশ্রেণী (বহুতর চড়া) রহিয়াছে; (র) কোন স্থানে উপরে কতকগুলি আর্দ্র চন্দ্রাতপ খাটান আছে, তাহাতে হিজলফুলের মঞ্জরী দিয়া রক্তবর্ণ চামর করিয়া দিয়াছে, তাহারই নীচে (মেঝেয়) সিন্দুর ছড়ান আছে, তাহার উপরে রক্তপদ্মের শয্যা পাতিয়া রাখিয়াছে; (ল) কোন স্থানে কতকগুলি স্ফটিকময় গৃহ রহিয়াছে, তাহার

---

(१)···प्रकृतिभिरिव। (२)···अवनिखात···। (३) कुसुदवन···।

स्पर्शानुमेयरम्यभित्तीनि (१) स्फटिकभवनानि, (२) (ल) क्वचिच्छिरीषपक्ष्म-कृतशाद्वलानां मृणालधारागृहाणां शिखरमारोप्यमाणानां धारा-कदम्ब-धूलि-धूसरितानां (३) यन्त्रमयूरकाणां कदम्बकानि, (व) क्वचित् सहकार-रस-सिक्तैः (४) जम्बूपल्लवैराच्छाद्यमानाभ्यन्तराः पर्णशालाः, (श) क्वचित् क्रीड़ित-कृत्रिम-करि-कलभ-यूथकाकुलीक्रियमाणाः काञ्चनकमलिनिकाः, (५) (ष) क्वचिद्-गन्धोदककूपेषु बद्ध-काञ्चन-सुधा-पङ्क-काम-पीठेषु स्थूल-विसलता-दण्ड-

(ल) क्वचिदिति। दर्शनायोग्यत्वात् स्पर्शेन अनुमेया ज्ञेया अतएव रम्या भित्तयो येषां तानि।

(व) क्वचिदिति। शिरीषाणां कुसुमानां पक्ष्मभिः केसरैः कृताः शाद्वलाः सतृणदेशा येषां तेषां, मृणालधारागृहाणां मृणालपूर्णजलोद्गारगृहाणां शिखरं उपरिदेशं आरोप्यमाणानां परिचारिकाभिर्नीय-मानानां, धाराकदम्बस्य जलधारासमूहस्य धूलिभिः कणैः धूसरिता धूसवर्णीकृतास्तेषाम्, यन्त्रमयूरकाणां यन्त्रात्मकचन्द्रशिखिनां कदम्बानि समूहान्। "पक्ष्म सूत्रादिसूक्ष्मांशे किञ्जल्के नेत्रलोमनि;" इति मेदिनी। "शाद्वलः शादहरिते" इत्यमरः।

(श) क्वचिदिति। सहकाररसेन आम्रनिर्य्यासेन सिक्ता आर्द्रीकृतास्तैः, जम्बूपल्लवैः आच्छाद्य-मानानि अभ्यन्तराणि यासां ताः, पर्णशाला उटजानि।

(ष) क्वचिदिति। क्रीड़ितेन निर्म्माणकौशलात् खेलाप्रवृत्तेन कृत्रिमेन करिकलभानां हस्तिशावकानां यूथकेन समूहेन आकुलीक्रियमाणाः सञ्चाल्यमानाः काञ्चनकमलिनिकाः स्वर्णपद्मिनीः।

(स) क्वचिदिति। बद्धानि निर्म्मितानि, काञ्चनं सुवर्णमेव सुधापङ्कः शुभ्रतासाधकलेपनद्रव्यं येषु तानि काञ्चनसुधापङ्कानि कामपीठानि पूजायां प्रयोजनीयानि मदनासनानि येषु तेषु, गन्धोदकानां चन्दनसंसृष्टजलानां

দেওয়ালগুলি সুন্দর এবং স্পর্শ দ্বারাই তাহা বুঝা যায়, আবার সেগুলিকে এলাচির রসে সিক্ত করিয়া রাখিয়াছে; (ব) কোন স্থানে কতকগুলি জল-যন্ত্রের গৃহ রহিয়াছে, তাহার নিম্নদেশ শিরীষপুষ্পের কেসর দ্বারা তৃণময় করিয়াছে, সেই ঘরগুলির উপরে কতকগুলি কৃত্রিম ময়ূর তুলিয়া দিয়াছে, জলধারাসমূহের কণাতে আবার সেই কৃত্রিম ময়ূরগুলিকে ধূসরবর্ণ করিয়াছে; (শ) কোন স্থানে কতকগুলি পর্ণশালা নির্ম্মাণ করা রহিয়াছে, তাহার অভ্যন্তরদেশ, আমের রসে সংসিক্ত জামের পল্লবে আচ্ছাদিত করিয়াছে; (ষ) কোন স্থানে অনেকগুলি স্বর্ণপদ্ম নির্ম্মিত রহিয়াছে, কৃত্রিম হস্তিশাবকগণ খেলায় প্রবৃত্ত হইয়া সেই স্বর্ণপদ্মগুলিকে সঞ্চালন করিতেছে; (স) কোন স্থানে চন্দনজলে পরিপূর্ণ কতকগুলি কূপ রহিয়াছে, তাহার তীরে আবার কামপীঠ নির্ম্মাণ করিয়া রাখিয়াছে, সেগুলিকে আবার সোণা গলাইয়া চূর্ণদ্রবের ন্যায় করিয়া, তাহা দ্বারা লেপিয়া দিয়াছে; সেই কূপগুলির তীরে অনেকগুলি পত্রপুটকের (পাতার

(१) स्पर्शानुमेयभित्तीनि। (२) अश्मभवनानि।
(३)···धूसरितानि,···धूसराणां। (४) सहकारतरुरसैः। (५)···कमलिनीकाः।

घटितारकाणि (१) क्षतक-(२) कैतकदल-जल-द्रोणिकानि (३) कुवलयावली-रज्जुभि-र्बध्यमानानि पत्र-(४) पुट-घटी-यन्त्रकाणि, (ख) क्वचित् स्फटिकबलाका-वली-वान्त-वारिधारा-लिखितेन्द्रायुधाः सञ्चार्य्यमाणा मायामेघमालाः, (ग) क्वचिदुपान्त-प्ररूढ़-(५) पाण्डु-यवाङ्कुरासु तरुण-मालती-कुड्मल-दन्तुरित-तरङ्गासु हरिचन्दन-द्रव-वापिकासु शिशिरीक्रियमाणा हारयष्टीः, (घ) क्वचिन्मुक्ताफल-क्षोद-रचितालवालकान् अनवरतस्थूल-(६) जलविन्दु-दुर्द्दिनमुत्सृजतो यन्त्रवृक्ष-

कूपेषु, स्थूलैः विसलतादण्डैः मृणालदण्डैः घटितानि निर्म्मितानि अराणि चक्रान्तर्गतसरलकाष्टानि येषां तानि, क्षतकानि कृत्रिमाणि कैतकदलानि केतकीपत्राण्येव जलद्रोणिका जलपात्रविशेषा येषु तानि, कुवलयावल्या नीलोत्पलसमूहस्य रज्जुभि र्नालसूत्रैः बध्यमानानि परस्परं बध्यमानानि, पत्रपुटान्येव घट्यः क्षुद्रघटा ता एव च यन्त्रकाणि तानि। "अरं शीघ्रे च चक्राङ्गे शीघ्रगे पुनरन्यवत्।" इति विश्वः।

(ख) क्वचिदिति। स्फटिकबलाकावलीषु स्फटिकनिर्म्मितबकश्रेणीषु वान्ता उद्गीर्णा वारिधारा याभिस्ताः, लिखितानि चित्रितानि इन्द्रायुधानि शक्रधनूंषि यासु ताः, तथा सञ्चार्य्यमाणा निर्म्माणकौशलेनैव परिचाल्यमानाः, मायामेघमालाः कृत्रिममेघश्रेणीः।

(ग) क्वचिदिति। उपान्तेषु प्रान्तसमीपेषु प्ररूढ़ा उत्पन्ना पाण्डवः पाण्डुरवर्णाः यवाङ्कुरा यासां तासु, तरुणैर्नूतनैः मालतीनां कुसुमानां कुड्मलैर्मुकुलैः दन्तुरिता विषमीकृतास्तरङ्गा यासां तासु, हरिचन्दनद्रववापिकासु श्वेतचन्दनरसपूर्णदीर्घिकासु, शिशिरीक्रियमाणाः प्रक्षालनेन शीतलीक्रियमाणाः, हारयष्टीर्मुक्तामालाः।

(घ) क्वचिदिति। मुक्ताफलक्षोदैर्मौक्तिकचूर्णैः रचितानि निर्म्मितानि आलवालानि जलरक्षणाय वृक्षत-वेष्टनानि येषां तान्, तथा अनवरतं स्थूलजलविन्दूनां दुर्द्दिनं वृष्टिं उत्सृजतस्त्यजतः, यन्त्रवृक्षकान् यन्त्रमयान् क्षुद्रवृक्षान्। "घनान्धकारि वृष्टौ च दुर्द्दिनं कवयो विदुः।" इति साह्रः।

ঠোঙার) ঘটীযন্ত্র (জলনিঃসারণের যন্ত্র) আছে, সে গুলিকে সাপলার সূতা দিয়া বাঁধিয়া রাখিয়াছে, তাহাতে আবার কেতকীফুলের পাতার কতকগুলি কৃত্রিম জলের ডোঙা ঝুলান আছে, মোটা মোটা মৃণাল দিয়া সেই ডোঙাগুলির আড়া তৈয়ার করিয়া দিয়াছে; (খ) কোন স্থানে নির্ম্মাণের কৌশলে কতকগুলি কৃত্রিম মেঘ চলিতেছে, তাহার উপরে ইন্দ্রধনু চিত্রিত রহিয়াছে, সেই মেঘের নীচে আবার স্ফটিক দ্বারা অনেকগুলি বকপক্ষী নির্ম্মাণ করিয়া রাখিয়াছে, তাহাদের গায়ের উপরে আবার মেঘে বৃষ্টি করিতেছে; (গ) কোন স্থানে শ্বেত-চন্দন জলে পরিপূর্ণ কতকগুলি দিঘী রহিয়াছে, তাহার তীরের নিকটে পাণ্ডুবর্ণ যবাঙ্কুর জন্মিয়াছে, নূতন মালতীফুলের কলিকা পড়িয়া সেই দীঘী গুলির তরঙ্গ গুলিকে উচু নীচু করিতেছে; পরিচারিকারা সেই দীঘীগুলিতে মুক্তার হার ধুইয়া ঠাণ্ডা করিতেছে; (ঘ) কোন স্থানে কতকগুলি যন্ত্রবৃক্ষ (কলের গাছ) রহিয়াছে, সে গুলি অবিশ্রান্ত বড় বড় জলবিন্দু বর্ষণ

(१)...दण्डारकाणि। (२) कनककैतक..., क्षतकैतक...। (३) दलद्रोणिकानि।
(४) कमलपत्र...। (५)...रूढ़...। (६) अनवरतचन्दनस्थूल...।

कान्, (ख) क्वचिद्विधुत-पक्ष-निक्षिप्त-शीकरानीत-नीहारा भ्रमन्तीर्यन्त्रमयी: पत्र-शकुनिश्रेणी:, (ग) क्वचिन्मधुकर-किङ्किणी-पङ्क्ति-पटुतर-रवा बध्यमाना: (१) कुसुमदामदोला:, (घ) क्वचिदुदरारूढ़-निर्गतोनाल-(२) नलिनी-च्छद-च्छादित-मुखान् प्रवेश्यमानान् शातकुम्भकुम्भान्, (ङ) क्वचिद्घटित-कदली-गर्भस्तम्भ-दण्डानि बध्यमानानि (३) चारुवंशाकृतीनि कुसुमस्तवकातपत्राणि, (च) क्वचित् कर-मृदित-कर्पूर-पल्लव-रसेनाधिवास्यमानानि विसतन्तुमयान्यंशुकानि,(छ)

(ख) क्वचिदिति। विधुतै: कम्पितै: पक्षै: पतत्रैर्निक्षिप्ता ये शीकरा जलबिन्दवस्तैरानीता उपस्थापिता उत्पादिता नीहारास्तुषारा याभिस्ता:, भ्रमन्तीर्घूर्णमाना:, यन्त्रमयीर्यन्त्रात्मिका:, पत्रशकुनिश्रेणी: पर्णनिर्म्मित पक्षिपङ्क्ती:।

(ग) क्वचिदिति। मधुकरा भ्रमरा एव किङ्किण्य: क्षुद्रघण्टिकास्तासां पङ्क्ते: श्रेण्या: पटुतर: अत्यर्थं रवो यासु ता:, बध्यमाना: परिचारिकाभिर्निर्म्मीयमाणा:। अत्र निरङ्गं केवलरूपकमलङ्कार:।

(घ) क्वचिदिति। उदरेषु अभ्यन्तरेषु आरूढ़ा उत्पन्ना: अथ च निर्गता मुखेभ्यो बहिर्गता उन्नाला उद्गतदण्डाश्च या नलिन्य: पद्मिन्यस्तासां छदै: पत्रैश्छादितानि मुखानि येषां तान्, प्रवेश्यमानान् शातकुम्भकुम्भान् सुवर्णकलसान्। अत्र छेकानुप्रासोऽलङ्कार:।

(ङ) क्वचिदिति। घटिता निर्म्मिता: कदलीनां रम्भाख्यानां गर्भस्तम्भा एव दण्डा येषां तानि, बध्यमानानि परिचारिकाभिर्निर्म्मीयमानानि, चारुवंशानां सुन्दरवेणूनां आकृतिरिवाकृतिर्येषां तानि, कुसुमस्तवकातपत्राणि पुष्पगुच्छच्छत्राणि। अत्र लुप्तोपमालङ्कार:।

(च) क्वचिदिति। करेण मृदिता विदलिता ये कर्पूरपल्लवास्तेषां रसेन निर्य्यासेन अधिवास्यमानानि सुरभीक्रियमाणानि, विसतन्तुमयानि मृणालसूत्रनिर्म्मितानि, अंशुकानि वसनानि।

করিতেছে এবং সেগুলির মূলে মুক্তাচূর্ণদ্বারা আলবাল নির্ম্মাণ করিয়া রাখিয়াছে; (খ) কোন স্থানে কতকগুলি পত্রনির্ম্মিত কলের পক্ষী রহিয়াছে, সেগুলি ঘুরিতেছে, আর পাখা কাঁপাইয়া জলবিন্দু নিক্ষেপ করিয়া নীহার সৃষ্টি করিতেছে; (গ) কোন স্থানে ফুলের মালা দিয়া দোলা তৈয়ার করিতেছে, তাহাতে ভ্রমররূপ কিঙ্কিণীর উচ্চরব হইতেছে; (ঘ) কোন স্থানে সুবর্ণ-কলস প্রবেশ করাইতেছে, সেগুলির ভিতরে পদ্মলতা জন্মিয়াছে, তাহার নাল উপরে উঠিয়াছে এবং তাহার পাতায় সেই কলসগুলির মুখ আচ্ছাদন করিয়াছে; (ঙ) কোন স্থানে পুষ্পগুচ্ছদ্বারা সুন্দর বংশের (বাঁশের) আকৃতি ছত্র নির্ম্মাণ করিতেছে, কলার থোড় দিয়া তাহার দণ্ড করিয়াছে; (চ) কোন স্থানে কতকগুলি মৃণালসূত্র-নির্ম্মিত বস্ত্র রহিয়াছে, সেগুলিকে হস্ত-মর্দ্দিত কর্পূর-পল্লবের রসে সুগন্ধ করিতেছে; (ছ) কোন স্থানে কতকগুলি মল্লিকা-পুষ্প-

(१)...पटुतरवाबध्यमाना:, पटुतराबध्यमाना:।

(२)...निर्गतोन्नाल...। (३)...दण्ड निबध्यमान चारु...।

क्वचिन्नवलीफलद्रवेणार्द्रीक्रियमाणान् तृणशून्य-(१) मञ्जरीकर्णपूरान्, (छ) क्वचिदम्भोजिनी-दल-व्यजनैर्वीज्यमानान् उपलभाजनभाजः (२) शीतौषधि-रसान्, (ज) अन्यांश्चैवंप्रकारान् शिशिरोपचारोपकरणकल्पनाव्यापारान् (३) परिजनेन कृतान् क्रियमाणांश्च वीक्षमाणः (झ) हिमगृहकस्य मध्यभागं हृदयमिव हिमवतः, जलक्रीड़ागृहमिव प्रचेतसः, जन्मभूमिमिव सर्वचन्द्रकलानाम्, कुलगृहमिव सर्वचन्दनवनदेवतानाम् प्रभवमिव सर्वचन्द्रमणीनाम्, निवासमिव सर्वमाघमासयामिनीनाम्, सङ्केतसदनमिव सर्वप्रावृषाम्, ग्रीष्मोष्मापनोदनोद्देशमिव (४) सर्वनिम्नगानाम्, बड़वानलसन्तापापनोदननिवास-

(छ) क्वचिदिति। तृणशून्यानां मल्लिकाकुसुमानां मञ्जरीकर्णपूरान् वल्लरीमयकर्णाभरणानि। "तृणशून्यं मल्लिकायां" इति विश्वः।

(ज) क्वचिदिति। अम्भोजिनीदलानि पद्मिनीपत्राण्येव व्यजनानि तैः। उपलभाजनानि पाषाणपात्राणि भजन्त इति तान्, शीताः शीतला ये ओषधीनां फलपाकान्तलतानां रसास्तान्।

(झ) अन्यानिति। शिशिरोपचाराः शीतलप्रक्रियास्तेषामुपकरणकल्पनाः सामग्रीनिर्माणानि तद्रूपा व्यापारास्तान् वीक्षमाणश्चन्द्रापीड़ः हिमगृहकस्य मध्यभागमाससादेत्यन्वयस्तूक्त एव।

(ञ) हिमगृहकस्य मध्यभागं विशेषयन्नाह हृदमिति। अत्र द्वितीयैकवचनान्तपदानि मध्यभागमित्यस्य विशेषणानि। हिमवतो हिमाचलस्य। प्रचेतसो वरुणस्य। कुलगृहं वंशपरम्परागतसदनमिव। प्रभवन्त्यस्मादिति प्रभवः उत्पत्तिस्थानं तमिव। अपादाने अल्। निवसन्त्यस्मिन्निति निवासो वासस्थानं तमिव। सर्वप्रावृषां सकलवर्षाऋतूनां सङ्केतसदनमिव सम्मेलनाय सङ्केतितं गृहमिव। सर्वनिम्नगानां समस्तनदीनां ग्रीष्मे ग्रीष्मकाले य ऊष्मा सन्तापस्तस्य अपनोदनं दूरीकरणं तस्य उद्देशं स्थानमिव। बड़वानलेन यः सन्तापस्तस्य यदपनोदनं तस्य निवासमाश्रयमिव। विद्युतः अयमिति वैद्युतो यो दहनो वह्निस्तेन यो दाहस्तस्य

মঞ্জরীর কর্ণালঙ্কার রহিয়াছে, সেগুলিকে নোয়াড়ি (নোয়াইল) ফলের রস দ্বারা আর্দ্র করিতেছে; (জ) কোন স্থানে পাষাণময় পাত্রে শীতল লতার কতকগুলি রস রহিয়াছে, তাহাতে আবার পরিচারিকারা পদ্মপাতার পাখা দিয়া বাতাস করিতেছে; (ঝ) পরিজনগণ শীতলতা সম্পাদন করিবার জন্য এই প্রকার অন্যান্য সামগ্রী সকল সংগ্রহ করিতেছিল ও করিয়াছিল; চন্দ্রাপীড় তাহা দেখিতে দেখিতে যাইয়া সেই হিমগৃহের মধ্যস্থানে উপস্থিত হইলেন। (ঞ) সেই হিমগৃহের মধ্যস্থানটিকে হিমালয়ের যেন হৃদয়, বরুণের যেন জলকেলির গৃহ, সমস্ত চন্দ্রকলারই যেন জন্মভূমি, সকল চন্দন-বন দেবতাদেরই যেন পৈতৃক বাসস্থান, সমস্ত চন্দ্রকান্ত-মণিরই যেন উৎপত্তি-স্থান, মাঘমাসের সকল রাত্রিরই যেন আবাসভূমি, সকল বর্ষাকালেরই যেন সম্মিলিত হইবার সঙ্কেত-গৃহ, সমস্ত নদীগণেরই যেন গ্রীষ্ম-সন্তাপ-নিবৃত্তির জন্য নির্দ্দিষ্ট স্থান, সকল সমুদ্রগণেরই যেন বাড়বানল-সন্তাপ দূর করার জন্য বাসগৃহ, সকল

(१) तृणयुक...। (२)...भाजनान्। (३)...परिकल्पनाव्यापारान्। (४)...अपनोदोद्देशमिव।

मिव सर्वसागराणाम्, वैद्युत-दहन-दाह-प्रतीकार-स्थानमिव सर्वजलधराणाम्, इन्दु-विरह-दु:सह-दिवसातिवाहन-स्थानमिव कुमुदिनीनाम्, हरहुताशननिर्वापणक्षेत्रमिव मकरध्वजस्य, (ञ) दिनकर-करैरपि सर्वतो जलयन्त्र-धारा-सहस्र-समुत्सारितैरतिशीतस्पर्शभयनिवृत्तैरिव परिहृतम्, (ट) अनिलैरपि कदम्ब-केसरोत्कर-वाहिभि: कण्टकितैरिवानुगतम्, (ठ) कदलीवनैरपि पवनचलितदलैर्जाड्यजनितवेपथुभिरिव परिवारितम् (ड) अलिभिरपि कुसुमामोदमदमुखररावबद्धदन्तवीणैरिव वाचालितम्, (ढ) लताभिरपि निरन्तर-मधुकर-पटल-जटिलाभिर्गृहीतनील-प्रावरणकाभिरिव विराजितमाससाद। (ण)

प्रतीकारस्थानमिव। इन्दोश्चन्द्रस्य विरहेण दु:सहो यो दिवसस्तस्य अतिवाहनस्थानमिव। तथा मकरध्वजस्य मदनस्य, हरस्य यो हुताशनस्तृतीयनेत्रजातो वह्निस्तस्य निर्वापणक्षेत्रमिव। सर्वेषां वात्यन्तशीतलत्वादिति भाव:, अत्रोत्प्रेक्षालङ्कारत्रय।

(ट) दिनेति। दिनकरस्य सूर्य्यस्य करै: किरणैरपि, सर्वतो जलयन्त्राणां धारासहस्रेण समुत्सारितै-र्दूरीकृतै:, अतएव अतिशीतस्पर्शभयेन निवृत्तैरिव सद्भि:, परिहृतं परित्यक्तम्। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कार:।

(ठ) अनिलैरिति। अनिलैर्वायुभिरपि, कदम्बानां कुसुमानां केसरोत्करं किञ्जल्कसमूहं वहन्तीति तै:, अतएव कण्टकितै रोमाञ्चितैरिव सद्भि:, कदम्बकेसराणां रोमाञ्चसाम्यादिति भाव:, अनुगतं समन्वितम्। अत्रापि रोमाञ्चजननस्यैवोत्प्रेक्षणात् क्रियोत्प्रेक्षा।

(ड) कदलीति। कदलीवनैरपि पवनेन वायुना चलितानि कम्पितानि दलानि पत्राणि येषां तै:, अतएव जाड्येन शैत्येन जनितो वेपथु: कम्पो येषां तैरिव सद्भि: परिवारितं परिवेष्टितम्। क्रियोत्प्रेक्षा।

(ढ) अलिभिरिति। अलिभिर्भ्रमरैरपि कुसुमामोदेन पुष्पसौरभेण यो मदो हर्षस्तेन मुखरैर्मुखरै: सद्भि:, अतएव आबद्धा विहिता दन्तवीणा शीतातिशयेन दन्तघर्षणजनित: शब्दो यैस्तैरिव सद्भि:, वाचालितं मुखरीकृतम्। क्रियोत्प्रेक्षा।

(ण) लताभिरिति। लताभिरपि निरन्तरेण घनेन मधुकरपटलेन जटिलाभिरावृताभि:, अतएव

মেঘগণেরই যেন বিদ্যুৎ-সম্ভূত-অগ্নি-কর্ত্তৃক দাহের প্রতীকার-স্থান, কুমুদিনীগণের যেন চন্দ্র-বিরহে দুঃসহ দিন অতিবাহিত করিবার স্থান এবং কামদেবের যেন হর-নয়নাগ্নি-নির্ব্বাপণের ক্ষেত্র বলিয়া বোধ হইতেছিল। (ট) সকল দিকের জলযন্ত্রের ধারা সমূহ, সূর্য্যের কিরণগুলিকে অপসারিত করিয়াছিল; তাহাতে বোধ হইতেছিল যে সেই সূর্য্যের কিরণগুলি, অত্যন্ত শীতস্পর্শ-ভয়ে নিবৃত্তি পাইয়াই যেন সেই হিমগৃহ পরিত্যাগ করিয়াছে। (ঠ) বায়ুও, কদম্বকুসুমের কেসরসমূহ বহন করিতেছিল বলিয়া রোমাঞ্চিত হইয়াই যেন সেই গৃহমধ্যে বিচরণ করিতেছিল। (ড) বায়ুবেগে পাতাগুলি কাঁপিতেছিল বলিয়া কদলীবনগুলিও যেন শীতে কাঁপিতে থাকিয়া সেই ঘরখানিকে বেষ্টন করিয়া রহিয়াছিল। (ঢ) ভ্রমরগণও, পুষ্পের সৌরভে আনন্দ বশতঃ রব করিতেছিল; তাহাতে বোধ হইতেছিল যেন, তাহারা অত্যন্ত শীতবশতঃ দন্তঘর্ষণের রব করিতে আরম্ভ করিয়া ঘরখানিকে মুখর করিয়াছে। (ণ) লতাসমূহও, ঘন ভ্রমরসমূহে আবৃত

क्रमेण च तत्रान्तर्बहिश्चातिबहलेन पिण्डहार्य्येणेवोपलिप्यमानोऽतिशीतलेन स्पर्शेनामन्यतात्मनो मनश्चन्द्रमयं, कुमुदमयानीन्द्रियाणि, ज्योत्स्नामयान्यङ्गानि, मृणालिकामयीं धियम् (त)। अगणयच्च हारमयान् (१) अर्ककिरणान्, चन्दनमयमातपम्, कर्पूरमयं पवनम्, उदकमयं कालम्, तुषारमयं त्रिभुवनम्। (थ)

एवंविधस्य च तस्यैकदेशे सखीकदम्बपरिवृताम्, अशेषसरित्परिवारामिव भगवतीं गङ्गां हिमवतो गुहातलगताम्, (द) कुल्याभ्रमि-भ्रमितेन कर्पूर-

---

गृहीतानि शीतनिवारणार्थं धृतानि नीलानि प्रावरणानि आच्छादनवस्त्राणि याभिस्ताभिरिव सतीभिः, विराजितम् परिशोभितम्। क्रियोत्प्रेक्षा।

(त) क्रमेणेति। किञ्च। अत्र हिमगृहे, अन्तर्बहिश्च अतिबहलेन नितान्तप्रचुरेण, पिण्डवत् मृदादिपिण्डवत् हार्य्येण हर्त्तुं योग्येन हस्तधारणयोग्येनेत्यर्थः, अतएव तेनोपलेपनसम्भव इति भावः, अतिशीतलेन स्पर्शेन, उपलिप्यमान इव चन्द्रापीडः, आत्मनो मनश्चन्द्रमयं चन्द्रनिष्पन्नममन्यत। इत्यमन्यताप्यन्वयः। अत्र प्रथमापि वाच्या क्रियोत्प्रेक्षा, अमन्यतेति क्रियाया अप्युत्प्रेक्षावाचकत्वादपरा अपि वाच्या एव अतश्च क्रियोत्प्रेक्षाणामासाञ्च मिथोनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

(थ) अगणयदिति। किञ्च। अर्ककिरणान् हारमयान् मुक्ताप्रालम्बनिष्पन्नान्, अगणयदमन्यत शीतलत्वसाम्यादिति भावः। अन्यतामेवमेवार्थो भावश्च बोध्यः। अत्रापि अगणयदिति क्रियाया उत्प्रेक्षावाचकत्वात् निष्पादार्थे च मयट्प्रत्ययात् पञ्चैव वाच्याः क्रियोत्प्रेक्षास्तासाञ्च पूर्ववत् संसृष्टिः।

(द) एवमिति। किञ्च। एवंविधस्य तस्य हिमगृहस्यैकदेशे चन्द्रापीडः कादम्बरीं व्यलोकयदिति दूरवर्त्तिन्या क्रिययान्वयः। अत्र स्त्रियां द्वितीयैकवचनान्तपदानि कादम्बरीमिति वक्ष्यमाणस्य विशेषणानि। सखीकदम्बेन वयस्यासमूहेन परिवृतां, अतएव अशेषाः सरितः परिवारा यस्यास्तां, हिमवतो गिरेर्गुहातलगतां भगवतीं गङ्गामिव स्थिताम्। अत्रोपमालङ्कारः।

ছিল বলিয়া অত্যন্ত শীতবশতঃ গাত্রে নীলবর্ণ বস্ত্র ধারণ করিয়াই যেন সেই ঘরখানির শোভা করিয়াছিল।

(ত) ক্রমে সেই গৃহমধ্যে অত্যন্তপ্রচুর ও মৃৎপিণ্ডপ্রভৃতির ন্যায় হস্ত-ধারণ-যোগ্য অত্যন্ত শীতল স্পর্শে অন্তরে ও বাহিরে উপলিপ্ত হইয়াই যেন চন্দ্রাপীড়, নিজের মনকে চন্দ্রময়, ইন্দ্রিয়গুলিকে কুমুদময়, অঙ্গসমূহকে জ্যোৎস্নাময় এবং বুদ্ধিকে মৃণালময় ভাবিতে লাগিলেন। (থ) আর সূর্য্যের কিরণগুলিকে মুক্তামালাময়, রৌদ্রকে চন্দনময়, বায়ুকে কর্পূরময়, সেই সময়টিকে জলময় এবং ত্রিজগৎকে শিশিরময় মনে করিতে লাগিলেন।

(দ) তাহার পর চন্দ্রাপীড় দেখিলেন—হিমালয়ের গুহার ভিতরে অবস্থিত ও সমস্ত নদীগণে পরিবেষ্টিত ভগবতী গঙ্গাদেবীর ন্যায় কাদম্বরী, এইরূপ সেই হিমগৃহের এক দিকে

---

(१) नीहारमयान्।

रस-स्रोतसा कृतपरिवेशाया मृणालदण्डमण्डपिकायास्तले कुसुमशयनमधिशयानाम्, (ध) हाराङ्गद-वलय-रशना-नूपुरैर्मृणालमयैर्निगड़ैरिव संयतामीर्ष्यया (१) मन्मथेन, (न) चन्दनधवले स्पृष्टामिव ललाटे शशलाञ्छनेन, (प) बाष्पवारिवाहिनि चुम्बितामिव चक्षुषि वरुणेन, (फ) वर्द्धितनिश्वास-(२) मरुति दष्टामिव मुखे मातरिश्वना,(ब) सन्तापप्रतप्तेष्वध्यासितामिवाङ्गेषु पतङ्गेन,(३)(भ)

(ध) कुल्येति। कुल्या तन्मण्डपिकाया एव समन्तादवस्थिता कृत्रिमा अल्पा सरित् तस्यां या भ्रमिः भ्रत एव भ्रमणं तया भ्रमितेन घूर्णितेन, कर्पूररसस्रोतसा कृतः परिवेशः परिवेष्टनं यस्यास्तस्याः, मृणालान्येव दण्डाः स्तम्भा यस्याः सा चासौ मण्डपिका चेति तस्याः, तले अधोदेशे, कुसुमशयनं पुष्पशय्यां अधिशयानामधितिष्ठन्तीम्।

(न) हारेति। मन्मथेन ईर्ष्यया, निगडैः शृङ्खलास्वरूपैः, मृणालमयैर्मृणालनिर्म्मितैः, हाराङ्गदवलयरशनानूपुरैः संयतां बद्धामिव। अत्र निरङ्गकेवलरूपकक्रियोत्प्रेक्षयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(प) चन्दनेति। शशलाञ्छनेन चन्द्रेण, चन्दनेन चन्दनलेपनेन धवले ललाटे स्पृष्टामिव, लिप्तचन्दनच्छलादिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः, तेन चौम्बनपापह्नुतिर्व्यज्यते। ललाट इति गवि बद्धा गौरित्यादिवदधिकरण एव सप्तमी। उत्तरत्राप्येवम्।

(फ) बाष्पेति। वरुणेन बाष्पवारिवाहिनि चक्षुषि चुम्बितामिव, तद्बाष्पवारिच्छलाद्वरुणस्य च जलमयत्वादिति भावः। पूर्ववदुत्प्रेक्षयापह्नुतिर्व्यज्यते।

(ब) वर्द्धितेति। मातरिश्वना वायुना, वर्द्धितो मदनेन दीर्घीकृतो निश्वासमरुद्यस्मिन् तस्मिन् मुखे अधर इत्यर्थः दष्टां कृतदन्तघातामिव, तन्निश्वासच्छलादिति भावः। पूर्ववदलङ्कारो ध्वनिश्च।

(भ) सन्तापेति। पतङ्गेन सूर्य्येण, सन्तापप्रतप्तेषु मदनोत्तापतप्तेषु अङ्गेषु अध्यासितामधिष्ठितामिव, अङ्गेषु तथैवोत्तापानुभवादिति भावः। क्रियोत्प्रेक्षा। "पतङ्गौ पक्षिसूर्य्यौ च" इत्यमरः।

সখীগণে পরিবেষ্টিত হইয়া অবস্থান করিতেছেন। (ধ) একখানি ক্ষুদ্র মণ্ডপের নীচে পুষ্পময় শয্যার উপরে তিনি শয়ন করিয়াছেন; সেই মণ্ডপখানির স্তম্ভগুলি মৃণালময় ছিল এবং চারিদিকে কৃত্রিম একটি ক্ষুদ্র নদী নিজেই ঘুরিতেছিল, তাহাতে তাহার কর্পূরময় জলস্রোতও ঘুরিতে থাকিয়া সেই মণ্ডপখানিকে পরিবেষ্টন করিতেছিল। (ন) কামদেব ঈর্ষাবশতঃ শৃঙ্খলস্বরূপ ও মৃণালনির্ম্মিত হার, কেয়ূর, বলয়, কাঞ্চীদাম ও নূপুর দ্বারা কাদম্বরীকে যেন বন্ধন করিয়া রাখিয়াছিলেন। (প) কাদম্বরীর ললাটে চন্দন লেপন করায় তাহা শুভ্রবর্ণ হইয়াছিল, সুতরাং চন্দ্র যেন সেই স্থানে স্পর্শ করিয়াছিলেন। (ফ) নয়ন, অশ্রুজল বহন করিতেছিল; সুতরাং বরুণ যেন তাহাতে চুম্বন করিয়াছিলেন। (ব) ওষ্ঠের নিকট দিয়া দীর্ঘনিশ্বাস নির্গত হইতেছিল; অতএব বায়ু যেন তাহাতে দংশন করিয়াছিলেন। (ভ) মদন-সন্তাপে সন্তপ্ত

(१) ईर्ष्यया। (२) निःश्वास...। (३) पतङ्गेन।

कन्दर्पदाहदीपिते गृहीतामिव हृदये हुतभुजा, (म) स्वेदिनि परिष्वक्तामिव वपुषि जलेन, (य) दैवतैरपि विलुप्यमानसौभाग्यामिव सर्वांशैः, (र) हृदयेन सह प्रियतमसमीपमिवोपगतैरङ्गैरुपजनितदौर्बल्याम्, (ल) आम्लानचन्दन-पाण्डुरञ्च रोमाञ्चमनवरतहारस्पर्शलग्नं मुक्ताफलकिरणपुञ्जं (१) इवोद्वहन्तीम्, (व) स्वेदशीकरिणोश्च कपोलपालीं पक्षपवनेन वीजयद्भिरनुकम्प्यमाना-

(म) कन्दर्पेति। हुतभुजा वह्निना, कन्दर्पदाहदीपिते मदनोत्तापतप्ते हृदये गृहीतामिव, मदनज्वलनादिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षयापह्नुतिर्व्यज्यते।

(य) स्वेदिनीति। जलेन जलसामान्येन स्वेदिनि घर्मवति, वपुषि देहे परिष्वक्तामालिङ्गितामिव, स्वेदजलत्वादिति भावः। पूर्ववदलङ्कारो ध्वनिश्च।

(र) दैवतैरिति। दैवतैरपि पूर्वोक्तमन्मथशशलाञ्छनादिभिर्देवैरपि सर्वांशैः विलुप्यमानं पृथक् पृथक् सम्भोगेन विनाश्यमानं सौभाग्यं भर्तृप्रियत्वं यस्यास्तामिव, परपुरुषसम्भोगे नारीणां भर्तृप्रियत्वलोपस्य स्वाभाविकत्वादिति भावः। अत्र सौभाग्यलोपोत्प्रेक्षणात् क्रियोत्प्रेक्षा, तया च निरतिशयसौन्दर्यमस्या ध्वनितम्।

(ल) हृदयेनेति। हृदयेन सह, प्रियतमस्य चन्द्रापीडस्य समीपमुपगतैरिवाङ्गैः उपजनितं दौर्बल्यं दुर्बलता यस्यास्ताम्. गमनपरिश्रमेण दौर्बल्यं भवत्येवेति भावः। क्रियोत्प्रेक्षा।

(व) आम्लानेति। किञ्च, आम्लानेन अल्पशुष्केन चन्दनेन पाण्डुरं शुभ्रं रोमाञ्चं, अनवरतहारस्पर्शेन लग्नं मुक्ताफलानां हारान्तर्गतानां मौक्तिकानां किरणपुञ्जमिव उद्वहन्तीं देहे दधानाम्। तादृशरोमाञ्च-मुक्ताकिरणपुञ्जयोः शुभ्रतासाम्यादिति भावः। जात्युत्प्रेक्षा।

(श) स्वेदेति। किञ्च, पक्षपवनेन, स्वेदशीकरिणौ घर्मबिन्दुमतौ कपोलपालौ कादम्बर्या गण्डयुगलं वीजयद्भिः, अवतंसकुसुमेषु ये मधुकरास्तैरनुकम्प्यमानां दयापात्रीक्रियमाणामिव, स्वेदशीकरलोपायैव वीजनादिति भावः। क्रियोत्प्रेक्षा।

সমস্ত অঙ্গেই যেন শূর্য্য অধিষ্ঠান করিতেছিলেন। (ম) মদনদাহে প্রজ্বলিত হৃদয়ে অগ্নি যেন ধারণ করিয়াছিলেন। (য) কাদম্বরীর দেহ হইতে ঘর্ম্ম নির্গত হইতেছিল বলিয়া বোধ হইতেছিল—যেন জল তাঁহাকে আলিঙ্গন করিয়াছে। (র) এই ভাবে দেবগণও যেন সকল প্রকারে কাদম্বরীর সৌভাগ্য নষ্ট করিতেছিলেন। (ল) হৃদয়ের সহিত কাদম্বরীর সমস্ত অঙ্গই যেন প্রিয়তম চন্দ্রাপীড়ের নিকট গিয়াছিল, তাই তাহারাই তাঁহার দুর্ব্বলতা জন্মাইয়াছিল। (ব) ঈষৎ শুষ্ক চন্দনে কাদম্বরীর রোমাঞ্চগুলি শুভ্রবর্ণ হইয়াছিল, তাহাতে বোধ হইতেছিল যে, অনবরত হার সংস্পর্শে দেহে সংলগ্ন মুক্তার কিরণপুঞ্জই যেন সে, ধারণ করিতেছে। (শ) কাদম্বরীর গণ্ডযুগল হইতে ঘর্ম্মবিন্দু নির্গত হইতেছিল ; এ দিকে ভ্রমরগণ, মস্তকভূষণ পুষ্পরাশির উপর

(१)···निकरपुञ्जं।

मिवावतंसकुसुममधुकरैः, (घ) अवतंस-कुसुम-मधुकर-(१) रव-दहन-दग्ध-मिव (२) श्रोत्रमपाङ्गनिर्गतेनाश्रुस्रोतसा सिञ्चन्तीम्, (ङ) अतिप्रवृत्तस्य चाश्रुणो निर्वाहप्रणालिकामिव कर्पूरकेतकोकलिकां कर्णे कलयन्तीम्, (च) आयत-श्वास-विधुति-तरलितेन च सन्ताप-भय-पलायमानेन देहप्रभावितानेनेवांशुकेन विमुच्यमानकुचकलसाम्, (छ) आपतत्-प्रचल-चामर-प्रतिविम्बञ्च (३) कुच-कलसयुगलं प्रियान्तिकगमनौत्सुक्यकृतपक्षमिव करतलेन निरुन्धतीम्, (४) (ज)

(घ) अवेति। अवतंसकुसुममधुकराणां रव एव दहन उद्दीपकतया वह्निस्तेन दग्धमिव श्रोत्रं कर्णं, अपाङ्गान्नेत्रप्रान्तान्निर्गतेन अश्रुस्रोतसा सिञ्चन्तीम्, दाहशान्त्यर्थमिति भावः। अन्योऽपि दग्धं वस्तु जलेन सिञ्चति। अत्र निरङ्गकेवलरूपकक्रियोत्प्रेक्षयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ङ) अतीति। किञ्च, अतिप्रवृत्तस्य आधिक्येन निर्गतस्य अश्रुणः, निर्वाहप्रणालिकामिव निर्गमन-नालमिव कर्पूरवत् या केतक्याः पुष्पस्य कलिका शुभ्रेत्यर्थस्तां कर्णे कलयन्तीं बिभ्रतीम्, जलनिर्गमनालवत् केतकीकलिकाया अपि लम्बमानत्वादिति भावः। जात्युत्प्रेक्षा।

(च) आयतेति। किञ्च, आयतो दीर्घो यः श्वासस्तेन या विधुतिः कम्पनं तया तरलितेन चञ्चली-कृतेन, सन्तापभयपलायमानेन देहप्रभाणां वितानेन बाहुल्येनेव अंशुकेन उत्तरीयवसनेन विमुच्यमानौ परि-त्यज्यमानौ कुचकलसौ यस्यास्ताम्। जात्युत्प्रेक्षा।

(छ) आपतदिति। आपतन्तौ निपतन्तौ प्रचलयोरुभयपार्श्वान्दोलनाच्चलितयोश्चामरयोः प्रतिविम्बे प्रति-च्छायाद्वयं यस्मिन् तत्, अतएव प्रियस्य चन्द्रापीडस्य अन्तिके गमनाय यदौत्सुक्यमुत्कण्ठा तेन कृतौ पक्षौ पतत्रयुगलं यस्य तदिव कुचकलसयुगलं करतलेन निरुन्धतीं अवरुन्धतीम्, अन्यथा यदि गच्छदेवेति भावः। अत्र पक्षकरणोत्प्रेक्षणात् क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। चामरप्रतिविम्बयुगलं स्तनयुगलस्य पक्षस्थानीयं, चामरयोश्च-लनात्तत्प्रतिविम्बयोरपि चलनं, तच्चलनाच्च एकैकस्यापि द्वित्वप्रतीतिः, अतएव च गमनसम्भावनेति बोध्यम्।

থাকিয়া পক্ষসঞ্চালন পূর্ব্বক সেই গণ্ডযুগলে বাতাস করিতেছিল, তাহাতে বোধ হইতেছিল যেন তাহারা কাদম্বরীর প্রতি দয়া প্রকাশ করিতেছে। (ঘ) শিরোভূষণ-পুষ্পস্থিত ভ্রমরগণের রবস্বরূপ অগ্নিতে কর্ণযুগল যেন দগ্ধ করিয়াছিল; তাই কাদম্বরী, নয়ন-প্রান্ত-নির্গত অশ্রুজলে সেই কর্ণযুগলকে সিক্ত করিতেছিলেন। (ঙ) অধিক পরিমাণে নির্গত অশ্রুজলের নিঃসরণ-পথের ন্যায় কর্পূরতুল্য শুভ্রবর্ণ কেতকী-পুষ্পের কলিকা কর্ণে ধারণ করিতেছিলেন। (চ) উত্তরীয় বসন, দীর্ঘ নিশ্বাসবেগে কম্পিত হইয়া, স্তনযুগলকে পরিত্যাগ করিয়া পড়িয়া গিয়াছিল; তাহাতে বোধ হইতেছিল যে, দেহের কান্তিপ্রবাহ যেন সন্তাপের ভয়ে পলাইয়া যাইতেছে। (ছ) (দুই জন পরিচারিকা দুই দিকে থাকিয়া দুইটি চামর আন্দোলন করিতেছিল) সুতরাং কাদম্বরীর স্তনযুগলে সেই চঞ্চল চামরযুগলের প্রতিবিম্ব পড়িতেছিল; তাহাতে বোধ হইতেছিল যে, প্রিয়তম

(१) अवतंसमधुकर...। (२)...रव-दव-दहन...।
(३) आपतत् प्रचलचामर...,क्वचित्तु चकारो नास्ति। (४) निरुन्धन्तीम्।

मुहुर्मुहुर्भुजलतया तुषारशिलाशालभञ्जिकामालिङ्गन्तीम्, (क) मुहुः कपोलफलकेन कर्पूरपुत्रिकामाश्लिष्यन्तीम्, (ख) मुहुश्चरणारविन्देन चन्दनपङ्कप्रतियातनामामृशन्तीम्. (१) (ग) स्तनसंक्रान्तेनात्ममुखेनापि कुतूहलिनेव परिवृत्य विलोक्यमानाम्, (घ) कर्णपूरपल्लवेनापि स्वप्रतिबिम्बपल्लवशायिना (२) सोत्कण्ठेनेव चुम्ब्यमानकपोलफलकाम् (ङ) हारैरपि मुक्तात्मभिर्मदनपरवशैरिव प्रसारितकरैरालिङ्ग्यमानाम्, (च) मणिदर्पणमुरसि निहितं 'नोदेतव्य-

(क) मुहुरिति। भुजलतया तुषारशिलाशालभञ्जिकां शीतलप्रस्तरनिर्म्मितपुत्तलिकां मुहुर्मुहुरालिङ्गन्तीम्, सन्तापशान्त्यर्थमिति भावः।

(ख) मुहुरिति। कपोलफलकेन कर्पूरस्य पुत्रिकां पुत्तलिकां मुहुराश्लिष्यन्तीम्, पूर्ववद्भावः।

(ग) मुहुरिति। चरणारविन्देन चन्दनपङ्कस्य गाढ़चन्दनद्रवस्य प्रतियातनां प्रतिमूर्त्तिं मुहुरामृशन्तीं आमर्शं कुर्वतीम्, पूर्व्ववद्भावः। एतेन तापातिशयो व्यज्यते।

(घ) स्तनेति। स्तनयोः संक्रान्तेन प्रतिबिम्बितेन आत्ममुखेनापि, कुतूहलिनेव 'अस्याः कीदृशी दशा जाता' इति कौतुकवतेव सता, परिवृत्य विवृत्य, प्रतिबिम्बस्य बिम्बाभिमुख्यादिति भावः, विलोक्यमानाम्। अत्र गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ङ) कर्णेति। कर्णपूरपल्लवेनापि कर्णाभरणीभूतकिसलयेनापि, स्वस्य प्रतिबिम्बे अर्थात् कपोलपतिते प्रतिबिम्बभूते पल्लवे शेते तिष्ठतीति तेन, एतेनास्यापि तापवत्त्वं सूचितं, सोत्कण्ठेनेव सता, चुम्ब्यमानं कपोलफलकं यस्यास्ताम्। गुणोत्प्रेक्षा।

(च) हारैरिति। मुक्त आत्मा येषां तैर्जीवन्मुक्तैरपि मदनपरवशैरिवेति विरोधः, मुक्ता मौक्तिकानि आत्मानः स्वरूपाणि येषां तैर्मुक्तामयैरिति समाधानं, तादृशैर्हारैरपि प्रसारिताः कराः किरणा हस्ताश्च यैस्तादृशैः सद्भिः आलिङ्ग्यमानाम्। अत्र विरोधाभासगुणोत्प्रेक्षयोरेकाश्रयानुप्रवेशरूपः सङ्करः, तेन चास्याः सौन्दर्य्यातिशयो व्यज्यत इत्यलङ्कारेण वस्तुध्वनिः।

চন্দ্রাপীড়ের নিকটে যাইবার জন্য উৎকণ্ঠাই যেন স্তনযুগলের দুই দুইখানা পাখা করিয়া দিয়াছে; তাই কাদম্বরী করতল দ্বারা সেই স্তনযুগলকে অবরুদ্ধ করিতেছিলেন। (ক) কাদম্বরী বাহুলতা দ্বারা, শীতল-প্রস্তর-নির্ম্মিত একটি পুত্তলিকাকে বারংবার আলিঙ্গন করিতেছিলেন। (খ) কপোলদ্বারা কর্পূরের একটি পুত্তলিকাকেও বারংবার স্পর্শ করিতেছিলেন। (গ) পাদপদ্ম দ্বারা গাঢ় চন্দনের একটি প্রতিমূর্ত্তিকে বারংবার আমর্শন করিতেছিলেন। (ঘ) নিজের মুখখানাও স্তনের উপরে প্রতিবিম্বিত হইয়া কৌতুকবশতই যেন ফিরিয়া দেখিতেছিল। (ঙ) কর্ণের অলঙ্কার পল্লবটিও গণ্ডদেশে নিজের প্রতিবিম্ব-পল্লবে সংলগ্ন হইয়া উৎকণ্ঠার সহিতই যেন কাদম্বরীর গণ্ডে চুম্বন করিতেছিল। (চ) মুক্তাময় মালাগুলিও কামার্ত্ত হইয়া যেন কর প্রসারণ করিয়া কাদম্বরীকে আলিঙ্গন করিতেছিল। (ছ) কাদম্বরী, বক্ষঃস্থলে

(१) आमृशन्तीम्। (२) स्वप्रतिबिम्बशायिना।

मद्य त्वया' (१) इति जीवितस्पर्शमयं शपथं शशिनमिव कारयन्तीम्, (छ) करिणीमिव सम्मुखागतप्रमदवनगन्धवारणप्रसारितकराम्, (ज) प्रस्थितामिवानभीष्टदक्षिणवातमृगागमनाम्, (झ) मदनाभिषेकवेदिकामिव कमलाहतचन्दनधवलपयोधरकलसावष्टब्धपार्श्वाम्, (ञ) आकाशकमलिनीमिव

(छ) मणीति। उरसि निहितं शैत्यसम्पादनाय वक्षसि स्थापितं, मणिदर्पणमिव शशिनं शीतलत्वे तलवर्त्तुलत्वसाम्यात् मणिमयदर्पणरूपं चन्द्रं, 'त्वया चन्द्रेण अद्य न उदितव्यं न उदयभाजा भवितव्यम्, मम तापातिशयसम्भवादिति भावः,' इति एतत्प्रार्थनानन्तरमित्यर्थः, जीवितस्पर्शमयं स्वजीवनस्पर्शनपूर्वकं शपथं 'अद्य नाहमुदेष्यामि' इत्यं शपथं कारयन्तीमिव, मणिदर्पणरूपचन्द्रस्य तदानीं हृदयस्पर्शित्वादिति भावः। अन्योऽपि जीवनस्थानहृदयस्पर्शपूर्वकं दृढ़ं शपथं करोति। अत्र "मुखं तव कुरङ्गाक्षि! सरोजमिति नान्यथा।" इति दर्पणोदाहृतवत् समासाभावेऽपि निरङ्गं केवलरूपकं क्रियोत्प्रेक्षा चानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ज) करिणीमिति। करिणीं हस्तिनीमिव, सम्मुखे आगतो यः प्रमदवनस्य प्रमदनामकान्तःपुरोद्यानस्य गन्धः सौरभं तस्य वारणाय प्रसारितौ करौ हस्तौ यया ताम्, विरहिण्याः सौरभस्य उद्दीपकतया कष्टजनकत्वादिति भावः। अन्यत्र तु सम्मुखागते प्रमदे प्रकृष्टमदे वनगन्धवारणे वन्यगन्धहस्तिनि तं प्रतीत्यर्थः प्रसारितः करः शुण्डा यया ताम्। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः।

(झ) प्रस्थितामिति। प्रस्थितां देशान्तरे चलितां स्त्रियमिव, अनभीष्टं दक्षिणवातस्य मलयवायोः मृगस्य मृगमदसौरभस्य चागमनं यस्यास्ताम्, विरहिण्या दक्षिणपवनकस्तूरीसौरभादीनामतीवोद्दीपकत्वादिति भावः। अन्यत्र तु अनभीष्टं दक्षिणे पार्श्वे वातमृगस्य वातप्रमीनामकहरिणस्य आगमनं यस्यास्ताम्, स्त्रीणां प्रयाणे दक्षिणभागे हरिणस्य अशुभसूचकतया वसन्तराजीयादौ प्रसिद्धत्वादिति भावः। पूर्णोपमा।

(ञ) मदनेति। मदनस्य कन्दर्पस्य अभिषेकः स्नानं तस्य वेदिका परिष्कृता भूमिस्तामिव, कमलैः कमलदलैः आहतौ शैत्यार्थमाच्छादितौ चन्दनेन चन्दनलेपनेन धवलौ, यौ पयोधरकलसौ कुचकुम्भौ ताभ्यामवष्टब्धौ आक्रान्तौ पार्श्वौ यस्यास्ताम्। अन्यत्र तु कमलाहतौ जलस्य शीतलतारक्षणाय पद्मपत्राच्छादितमुखौ, तथा चन्दनधवलानि चन्दनमिश्रणेन शुभ्रवर्णानि पयांसि जलानि धरतो धारयत इति तौ यौ कलसौ स्नान-

স্থাপিত মণিময় দর্পণরূপ চন্দ্রকে 'আজ তুমি উদিত হইও না' এইরূপ প্রার্থনার পর নিজের জীবন স্পর্শ করাইয়া 'আজ আমি উদিত হইব না' এইরূপ শপথই যেন করাইতেছিলেন। (জ) হস্তিনী যেমন সম্মুখে উপস্থিত মদমত্ত বন্য গন্ধহস্তীর প্রতি শুণ্ড প্রসারণ করে; কাদম্বরীও তেমন নিকটে আগত প্রমদোদ্যানের সৌরভকে নিবারণ করিবার জন্য হস্ত প্রসারণ করিয়াছিলেন। (ঝ) দেশান্তরে প্রস্থিত স্ত্রীলোকের যেমন দক্ষিণভাগে বাতপ্রমী হরিণের আগমন অভীষ্ট নহে; কাদম্বরীরও তেমন দক্ষিণ বায়ু ও কস্তূরী-সৌরভের আগমন অভীষ্ট ছিল না। (ঞ) কামদেবের স্নান-স্থানের উভয় পার্শ্বে যেমন চন্দন-মিশ্রণে শুভ্রবর্ণ জলে পরিপূর্ণ ও পদ্মপত্রাচ্ছাদিত কুম্ভযুগলে অধিষ্ঠিত থাকে; কাদম্বরীর পার্শ্বদ্বয়ও তেমন কমলদলে আবৃত ও

(१) विनोदितव्यमितम्।

स्वच्छाम्बरतलदृश्यमानमृणालकोमलोरुमूलाम्, (ट) कुसुमचापलेखामिव (१) मदनारोपित-गुणकोटिकान्ततराम्, (ठ) मधुमासदेवतामिव शिशिरहारिणीम्, (ड) मधुकरीमिव कुसुममार्गणाकुलाम्, (ढ) चन्दनविलेपनामनङ्गरागिणीञ्च, बालां मन्मथजननीञ्च, मृणालिनीमभ्यर्थिततुषारस्पर्शाञ्च, कादम्बरीं व्यलोकयत् । (ण)

कुम्भौ ताभ्यां अवष्टब्धौ आश्रितौ पार्श्वौ यस्यास्ताम् । पूर्णोपमा, तथा धनिनो व्यक्त्यन्तरस्यापि स्थानस्थाने तथाविधकलससम्भवेऽपि मदनमात्रोपादानादविशेषे विशेषाख्यदोषः, स च 'राजाभिषेकवेदिकामिव' इति पाठेन समाधेयः ।

(ट) आकाशेति । आकाशकमलिनीमिव आकाशगङ्गापद्मिनीमिव, स्वच्छस्य अतीवनिर्मलस्य अम्बरस्य परिहितवसनस्य तले दृश्यमानं मृणालवत् कोमलं तदानीमपि निर्लोमत्वात् सुन्दरं ऊरुमूलं सक्थिमूलदेशो यस्यास्ताम् । अन्यत्र तु स्वच्छे निर्मले अम्बरतले आकाशे दृश्यमानं मृणालं कोमलं ऊरुमूलं ह्रदमूलदेशश्च यस्यास्ताम् । पूर्णोपमा । पूर्वकादम्बरीवर्णनायामपीदं विशेषणमभिहितम् ।

(ठ) कुसुमेति । कुसुमचापलेखा पुष्पमयधनुर्यष्टिस्तामिव, मदनेन मदनावेशेन आरोपिता या गुणकोटयो विशेषसौन्दर्यादयो गुणग्रामास्ताभिः कान्ततरा मनोहरतरा ताम् । अन्यत्र तु मदनेन कामदेवेन आरोपितो गुणो मौर्वी ययोस्ताभ्यां कोटिभ्यां अग्रदेशाभ्यां कान्ततरां मनोहरतराम् । पूर्णोपमा ।

(ड) मध्विति । मधुमासस्य वसन्तकालस्य देवतामिव, शिशिरः शीतलः हारो मुक्तामाला अस्या अस्तीति सा ताम् । अन्यत्र तु शीतर्तुं निवारिणीम् । पूर्णोपमा ।

(ढ) मध्विति । मधुकरीं भ्रमरीमिव, कुसुममार्गणेन पुष्पबाणेन कामेन आकुला विह्वला ताम् । अन्यत्र तु कुसुममार्गणे मधुपानाय पुष्पान्वेषणे आकुला व्यग्रा ताम् । पूर्णोपमा ।

(ण) चन्दनेति । चन्दनस्य विलेपनमङ्गरागो यस्यास्ताम्, अथ च अङ्गरागोऽस्या अस्तीति अङ्गरागिणी न अङ्गरागिणीत्यनङ्गरागिणी अङ्गरागरहिता तामिति विरोधः, अनङ्गरागः कामानुरागोऽस्या अस्तीति तामिति समाधानम् । बालां कन्यां अथ च मन्मथजननीं मदनस्य मातरमिति विरोधः, मदनोद्दीपनया जनयित्री-

---

চন্দনলেপনে শুভ্রবর্ণ স্তনকুম্ভদ্বয়ে আক্রান্ত ছিল। (ট) বিমল আকাশে যেমন আকাশ-গঙ্গা-জাত পদ্মিনীর কোমল ও বৃহৎ মূলদেশ এবং মৃণাল দেখা যায় ; সেইরূপ কাদম্বরীরও নির্ম্মল বসনের নীচ দিয়া মৃণালের ন্যায় কোমল উরুযুগলের মূলদেশ দেখা যাইতেছিল। (ঠ) কামদেব গুণারোপণ করিলে সেই অগ্রদেশ দ্বারা পুষ্পময় ধনু যেমন অত্যন্ত সুন্দর হয় ; কাদম্বরীও তেমন কামাবেশজনিত গুণসমূহে অত্যন্ত সুন্দর হইয়াছিলেন। (ড) বসন্তকালের দেবতা যেমন শীতকাল নিবারণ করেন, কাদম্বরীও তেমন শীতল হার ধারণ করিতেছিলেন। (ঢ) ভ্রমরী যেমন পুষ্পান্বেষণে ব্যস্ত থাকে, কাদম্বরীও তেমন কামাবেশে বিহ্বল ছিলেন। (ণ) আর কাদম্বরী চন্দনের অঙ্গরাগ ধারণ করিতেছিলেন, অথচ অঙ্গরাগবিহীন (কামানুরাগিণী) ছিলেন ;

---

(१) कुसुमचापचापलेखामिव ।

अथ सा यथादर्शनमागत्यागत्य चन्द्रापीड़ागमनमावेदयन्तं परिजनमुत्तरलतारकेण चक्षुषा विलोक्य (१) "कथय, किं सत्यमागतो दृष्टस्त्वया, कियत्यध्वनि क्वासौ" इति प्रतिमुखं निक्षिप्तनामाक्षरं (२) पप्रच्छ (त)। प्रवर्द्धमान-(३) धवलिम्ना चक्षुषा दृष्ट्वा च सम्मुखमापतन्तं तं दूरादेव वरारोहा (थ) नवग्रहा करिणीवोरुस्तम्भविधृता विचेष्टमानाङ्गी (द) कुसुमशयनपरिमलोपगतैः

मिति तत्परिहारः। मृणालिनी पद्मिनी, अथ च अभ्यर्थितः प्रार्थितः तुषारस्पर्शो हिमसंसर्गो यया तामिति पद्मिन्या हिमसंसर्गे विनाशावश्यम्भावेऽपि तत्प्रार्थनया विरोधः, मृणालिनीं सन्तापशान्त्यै मृणालवतीं तापातिशयाच्च प्रार्थितशीतस्पर्शामिति समाधानम्। अत्र प्रत्येकविशेषण-एव विरोधाभासोऽलङ्कारः।

अहो! इयं खलु कामार्त्तकादम्बरीवर्णनामाधुरी सर्वथैव सहृदयहृदयविनोदविधायिनी।

(त) अथेति। सा कादम्बरी, उत्तरला आवेगादतीवचञ्चला तारका यस्य तेन तादृशेन चक्षुषा विलोक्य, आगत्यागत्य दर्शनमनतिक्रम्येति यथादर्शनं येन येन भावेन दृष्टस्तेन तेन भावेनेत्यर्थः, चन्द्रापीड़स्य आगमनमावेदयन्तं परिजनं। इति एतत् प्रतिमुखं प्रत्येकमुखे निक्षिप्तानि प्रत्येकेनैवोच्चारणादर्पितानि नामाक्षराणि चन्द्रापीड़ेतिनामवर्णा यस्मिन् कर्म्मणि तद्यथा तथा पप्रच्छ। प्रच्छिर्द्विकर्म्मकः। एतेन चन्द्रापीड़दर्शनावेगातिशयो व्यज्यते।

(थ) प्रवर्द्धेति। किञ्च। वरौ विशालौ आरोहौ नितम्बौ यस्याः सा वरारोहा, कादम्बरी, प्रवर्द्धमानः प्रीत्या बाहुल्येनोपचीयमानो धवलिमा शुभ्रता यस्य तेन चक्षुषा, सम्मुखमापतन्तमागच्छन्तं तं चन्द्रापीड़ं दूरादेव दृष्ट्वा कुसुमशयनादुत्तस्थावित्यन्वयः।

(द) तदानीन्तनावस्थां कादम्बरीं विशेषयन्नाह नवेति। नवो ग्रहो ग्रहणं यस्याः सा नूतनधृतेत्यर्थः करिणीव, ऊर्वोः स्तम्भेन सात्त्विकभावोदयजातया स्तब्धतया विधृता व्याहतगमना, अन्यत्र तु उरुस्तम्भे विशाल-

কুমারী অথচ মদনজননী (কামোদ্দীপনাকারিণী) ছিলেন এবং পদ্মিনী অথচ তুষারপাতের প্রার্থনা করিতেছিলেন (মৃণাল ধারণ করিতেছিলেন এবং অন্যান্য শীতল স্পর্শ প্রার্থনা করিতেছিলেন)।

(ত) তাহার পর, পরিজনগণ যে যে ভাবে চন্দ্রাপীড়কে দেখিয়াছিল, আসিয়া আসিয়া সেই সেই ভাবে কাদম্বরীর নিকট চন্দ্রাপীড়ের আগমন জানাইতেছিল; তখন কাদম্বরী চঞ্চলনয়নে তাহাদের প্রতি দৃষ্টিপাত করিয়া জিজ্ঞাসা করিতেছিলেন "বল, — সত্যই কি তিনি আসিয়াছেন, তুমি দেখিয়াছ? তাহা হইলে কত দূরে আছেন এবং কোথায় আছেন?" ইহার পর প্রত্যেকেই চন্দ্রাপীড়ের নাম উচ্চারণ করিতেছিল। (থ) তদনন্তর বিশালনিতম্বা কাদম্বরী, চন্দ্রাপীড়কে সম্মুখে আসিতে দেখিয়া দূর হইতেই পুষ্পশয্যা হইতে গাত্রোত্থান করিলেন; তখন তাঁহার নয়নযুগল আরও ধবলবর্ণ হইল। (দ) নূতনধৃত হস্তিনী যেমন বিশাল বন্ধনস্তম্ভে আবদ্ধ থাকিয়া দেহ সঞ্চালন করে; কাদম্বরীও তেমন উরুস্তম্ভবশতঃ

(१) क्वचित् विलोक्येति नास्ति। (२) निक्षिप्तनामाक्षरं। (३) वर्द्धमान,..।

परवशा मुखरमधुकरकुलैरिवोत्थाप्यमाना, (१) (ध) सम्भ्रम-च्युतोत्तरीया (२) हारकिरणानुरसि कर्त्तुमिच्छन्ती, (न) मणिकुट्टिमनिहितेन वामकरतलेन हस्तावलम्बनं निजप्रतिमामिव याचमाना, (प) स्रस्तकेशकलाप-संयमन-श्रमितेन गलत्स्वेदसलिलेन दक्षिणकरेणाभ्युक्ष्येव (३) आत्मानमर्पयन्ती, (फ)

बन्धनस्तम्भं विधृतां आबद्धा, अतएव विचेष्टमानाङ्गी निश्चेष्टदेहा विशेषेण कम्पमानदेहा च। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः।

(ध) कुसुमेति। परवशा पराधीना शरीरजडतया स्वयमुत्थातुमसमर्थेत्यर्थः, अतएव कुसुमशयनस्य पुष्पशय्यायाः परिमलेन सौरभलोभेनेति तात्पर्यं उपगतैरुपस्थितैः, मुखरैः शब्दायमानैः, मधुकरकुलैः भ्रमरगणैः उत्थाप्यमाना उत्तोल्यमानेव। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(न) सम्भ्रमेति। सम्भ्रमेण उत्थानत्वरया च्युतं पतितं उत्तरीयं वसनं यस्याः सा, अतएव उरसि वक्षसि हारकिरणान् कर्त्तुमर्पयितुमिच्छन्तीव, स्तनयोरावरणायेति भावः। अत्र प्रतीयमाना क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(प) मणीति। मणिकुट्टिमे मणिमयबद्धभूमौ निहितेन स्थापितेन वामकरतलेन, निजप्रतिमां कुट्टिमसंक्रान्तं स्वप्रतिबिम्बं हस्तावलम्बनं याचमानेव, तदर्थमेव तत्र वामकरस्थापनादिति भावः। एतेनोत्थानासामर्थ्यं सूचितम्। क्रियोत्प्रेक्षा। याचिर्द्विकर्म्मकः।

(फ) स्रस्तेति। स्रस्तस्य स्खलितस्य केशकलापस्य संयमनेन बन्धनेन श्रमितस्तद्व्यापारणादायासितस्तेन, अतएव गलन्ति स्वेदसलिलानि यस्मात्तेन दक्षिणकरेण, अभ्युक्ष्य आत्मानं अर्पयन्तीव चन्द्रापीडाय ददतीव, स्वेदसलिलानामिवाभ्युक्षणसलिलरूपत्वादिति भावः। क्रियोत्प्रेक्षा। अन्योऽपि दीयमानं पदार्थमभ्युक्ष्य ददाति।

চলিতে না পারিয়া অঙ্গগুলিকে নিশ্চেষ্ট রাখিয়াছিলেন। (ধ) শরীরের অসারতাবশতঃ কাদম্বরী উঠিতে পারিতেছিলেন না; সুতরাং পুষ্পশয্যার সৌরভ-লোভে উপস্থিত শব্দায়মান ভ্রমরগণই যেন তাঁহাকে উঠাইতেছিল। (ন) ত্বরাবশতঃ উত্তরীয় বসন পড়িয়া গিয়াছিল; তাই কাদম্বরী হারের কিরণগুলিকেই যেন বক্ষঃস্থলের আবরণ করিতে ইচ্ছা করিতেছিলেন। (প) মণিময় ভূমিতে স্থাপিত বাম হস্ত দ্বারা নিজের প্রতিবিম্বের নিকটই যেন হস্তধারণ প্রার্থনা করিতেছিলেন। (ফ) স্খলিত কেশকলাপ বন্ধন করায় দক্ষিণ হস্ত পরিশ্রান্ত হইয়াছিল, তাই তাহা হইতে ঘর্মজল নির্গত হইতেছিল; সুতরাং কাদম্বরী যেন সেই দক্ষিণ হস্ত দ্বারা অভ্যুক্ষণ করিয়া চন্দ্রাপীড়কে আত্মসমর্পণ করিতেছিলেন। (ব) কাদম্বরীর পূর্বের

---

(१) आच्छाद्यमाना। (२)...उत्तरीयका, उत्तरीयांशुका। (३) समभ्युक्ष्येव।

चलित-(१) त्रिक-ताम्यत्त्रिवली-(२) तरङ्गित-रोमराजितया निष्पीड्यमानेव सर्वरसाननङ्गेन, (ब) अन्तःप्रविष्टललाटिका-चन्दनरसमिश्रमिव (३) चक्षुषा क्षरन्ती शिशिरमानन्दजलम् (भ) आनन्द-(४) वारिविन्दु-वेणिकया चलिता-वतंस-(५) धूलि-धूसरं प्रियप्रतिभा-प्रवेशलोभेनेव कपोलफलकं प्रक्षालयन्ती, (म) ललाटिकाचन्दनभरेणेव किञ्चिदधोमुखी तत्क्षणमपाङ्ग-भाग-पुञ्जित-(६) तारकया तन्मुखलग्नयेव दीर्घया दृष्ट्याकृष्यमाणा कुसुमशयनादुत्तस्थौ। (य)

(ब) चलितेति। चलितं उत्थानवेगात् कम्पितं यत् त्रिकं पृष्ठवंशाधरास्थि तेन ताम्यन्ती क्लिश्यमाना या त्रिवली तया तरङ्गिता कम्पिता रोमराजिर्यस्यास्तस्या भावस्तया हेतुना, अनङ्गेन सर्वरसान् निष्पीड्य-मानेव निःसारयितुं मर्द्यमानेव, चलितत्रिकस्य निष्पीडनयन्त्रतुल्यत्वादिति भावः। क्रियोत्प्रेक्षा।

(भ) अन्तरिति। अन्तःप्रविष्टो ललाटान्तःस्थो यो ललाटिकाचन्दनरसस्तन्मिश्रमिव, अतएव शिशिरं शीतलं आनन्दजलं आनन्दाश्रु चक्षुषा क्षरन्ती निःसारयन्ती। गुणोत्प्रेक्षा।

(म) आनन्देति। आनन्दवारिविन्दूनां आनन्दाश्रुकणानां वेणिकया प्रवाहेण, चलितानां अवतंसानां शिरोभूषणभूतपुष्पाणां धूलिभिः परागैर्धूसरं स्वं कपोलफलकं, प्रियप्रतिमायाश्चन्द्रापीडप्रतिविम्बस्य प्रवेशलोभेनेव तत्कपोले प्रवेशेच्छयेव प्रक्षालयन्ती, प्रक्षालनाभावे धूलिधूसरत्वे च प्रतिविम्बप्रवेशासम्भव इति भावः। गुणोत्प्रेक्षा।

(य) ललाटिकेति। ललाटिकाचन्दनस्य भरेण भारेणेव किञ्चिदधोमुखी, अपाङ्गभागे नयनप्रान्तदेशे पुञ्जिता सञ्जातपुञ्जभावा तारका यस्यास्तया, तन्मुखलग्नया चन्द्रापीडवदनसंसक्तया, अतएव दीर्घया दृष्ट्या चक्षुषा आकृष्यमाणेव। एतस्तन्मुखलग्नत्वात् ततश्चाकर्षणाद्दृष्टिर्दीर्घीभूता रज्जुवदिति भावः। क्रियोत्प्रेक्षा।

অস্থি চলিতেছিল, তাই উদরের থর তিনটিও কাঁপিতেছিল, তাহাতে রোমরাজিও কম্পিত হইতেছিল; সুতরাং কামদেব যেন কাদম্বরীকে নিষ্পীড়ন করিয়া সমস্ত রস নিঃসারণ করিতেছিলেন। (ভ) কাদম্বরী নয়নদ্বারা যে আনন্দাশ্রু নিঃসারণ করিতেছিলেন, তাহা, ললাটের ভিতরে প্রবিষ্ট চন্দন-তিলকের রস-মিশ্রণেই যেন শীতল হইয়াছিল। (ম) মস্তকভূষণ পুষ্পের রেণুতে গণ্ডদেশ ধূসরবর্ণ হইয়াছিল, সুতরাং তাহাতে প্রিয়তম চন্দ্রাপীড়ের প্রতিবিম্ব প্রবেশ করাইবার লোভেই যেন আনন্দাশ্রুবিন্দুপ্রবাহ দ্বারা সেই গণ্ডদেশ প্রক্ষালন করিতেছিলেন। (য) ললাট-তিলকের চন্দনের ভারেই যেন কাদম্বরী কিঞ্চিৎ অধোমুখী হইলেন, নয়নের তারাটি তাহার প্রান্তভাগে যাইয়া পুঞ্জীভূত হইল এবং নয়নযুগল চন্দ্রাপীড়ের মুখমণ্ডলে সংলগ্ন হইয়া আরও দীর্ঘ হইল, সেই নয়নকর্তৃক আকৃষ্যমাণ হইয়াই যেন কাদম্বরী পুষ্পশয্যা হইতে উঠিয়াছিলেন।

---

(१) वलित…। (२) ताम्यत्त्रिवली…। (३)…चन्दनरसामिव। (४) नन्द…।
(५) चटितावतंस…। (६)…पुञ्जित…।

चन्द्रापीड़स्तु समुपसृत्य पूर्ववदेव तां महाश्वेताप्रणामपुरःसरं दर्शितविनयः प्रणनाम। कृतप्रतिप्रणामायाञ्च तस्यां पुनस्तस्मिन्नेव कुसुमशयने समुपविष्टायां (१) प्रतीहार्य्या समुपनीतां (२) जाम्बूनदमयीमासन्दिकां रोचिष्णुरत्न-प्रत्युप्त-पादां पादेनैवोत्सार्य्य क्षितावेवोपाविशत् (र)। अथ केयूरकः "देवि! देवस्य चन्द्रापीड़स्य प्रसादभूमिरेषा पत्रलेखा नाम ताम्बूलकरङ्कवाहिनी" इत्यभिधाय पत्रलेखामदर्शयत्। अथ कादम्बरी दृष्ट्वा तां 'अहो! मानुषीषु पक्षपातः प्रजापतेः' इति चिन्तयाम्बभूव। कृतप्रणामाञ्च तां सादरं "एह्येहि" इत्यभिधायात्मनः समीपे सकुतूहलपरिजनदृश्यमानां पृष्ठतः समुपावेशयत्। दर्शनादेवोपारूढ़प्रीत्यतिशयया च मुहुर्मुहुरेनां सोपग्रहं करकिसलयेन पस्पर्श। (ल)

(र) चन्द्रेति। महाश्वेतायाः प्रणामः पुरःसरः अग्रवर्त्ती यस्मिन् कर्म्मणि तद्यथा तथा। तां कादम्बरीम्। जाम्बूनदमयीं स्वर्णनिर्म्मितां, रोचिष्णुभिर्दीप्तिशीलैः रत्नैः प्रत्युप्ताः खचिताः पादा यस्यास्ताम्, आसन्दिकामासनविशेषम्, उत्सार्य्य अपसार्य्य, क्षितावेवोपाविशत्, विनयप्रदर्शनस्यावश्यकत्वादिति भावः।

(ल) अथेति। प्रसादभूमिरनुग्रहपात्रम्। प्रजापतेः पक्षपातः प्राण्यन्तरस्त्रीभ्यः सौन्दर्य्यातिशयनिर्म्माणादिति भावः। तां पत्रलेखाम्। सकुतूहलैरात्मनः परिजनैर्दृश्यमाना ताम्। पृष्ठत आत्मनः समीप इत्यन्वयः। उपारूढ़ उत्पन्नः प्रीत्यतिशयो यस्याः सा कादम्बरी। एनां पत्रलेखां। सोपग्रहं सस्नेहम्।

(র) চন্দ্রাপীড় নিকটবর্ত্তী হইয়া পূর্ব্বের ন্যায়ই বিনয়প্রদর্শনপূর্ব্বক মহাশ্বেতাকে প্রণাম করিয়া কাদম্বরীকে প্রণাম করিলেন; কাদম্বরীও প্রতিপ্রণাম করিয়া পুনরায় সেই পুষ্পশয্যাতেই উপবেশন করিলেন; তাহার পর প্রতীহারী স্বর্ণময় একখানি কেদেরা আনিয়া উপস্থিত করিল, তাহার পায়াগুলি দীপ্তিশীল রত্নে খচিত ছিল; চন্দ্রাপীড় চরণদ্বারাই সেখানিকে সরাইয়া রাখিয়া ভূতলেই উপবেশন করিলেন। (ল) তাহার পর কেয়ূরক বলিল—"দেবি! এই কন্যাটি, রাজকুমার চন্দ্রাপীড়ের তাম্বূলকরঙ্কবাহিনী ও অনুগ্রহের পাত্র; ইহার নাম পত্রলেখা" এই কথা বলিয়া পত্রলেখাকে দেখাইল। তদনন্তর কাদম্বরী পত্রলেখাকে দেখিয়া চিন্তা করিলেন 'মনুষ্য-রমণীর প্রতি বিধাতার পক্ষপাত আশ্চর্য্য'। তাহার পর পত্রলেখা কাদম্বরীকে প্রণাম করিলে কাদম্বরী তাহাকে "এস এস" এই কথা বলিয়া নিজের নিকটে পিঠের দিকে বসাইলেন; তখন পরিজনবর্গ কৌতুকের সহিত পত্রলেখাকে দেখিতে লাগিল এবং দর্শনের পরই পত্রলেখার প্রতি কাদম্বরীর অত্যন্ত প্রীতি জন্মিল; তাই তিনি পাণিপল্লব দ্বারা স্নেহের সহিত বারংবার পত্রলেখাকে স্পর্শ করিতে লাগিলেন।

(१) उपविष्टायां। (२) उपनीतां।

चन्द्रापीड़स्तु सपदि कृतसकलागमनोचितोपचारस्तदवस्थां चित्ररथतनया-मालोक्याचिन्तयत्—'अतिदुर्विदग्धं हि मे हृदयमद्यापि न श्रद्दधाति। भवतु, पृच्छामि तावदेनाम् निपुणालापेनेति' (व)। प्रकाशमब्रवीत्—"देवि! जानामि कामरतिं निमित्तीकृत्य प्रवृत्तोऽयमविरलसन्तापतीव्रो व्याधिः (१) (श)। सुतनु! सत्यं न तथा त्वामिव व्यथयति यथास्मान् (ष)। इच्छामि देहदानेनापि स्वस्थामत्रभवतीं कर्त्तुम् (स)। उत्कम्पिनीमनुकम्पमानस्य कुसुमेषु-

(व) चन्द्रेति। सपदि तदैव, कृतः सकलानां मदलेखादिजनानां आगमनोचितोपचारः स्वस्य नवा-गमनयोग्याभिनन्दनादिव्यवहारो येन सः। सैवावस्था कामार्त्तदशा यस्यास्तां चित्ररथतनयां कादम्बरीम्। अतिदुर्विदग्धं अत्यन्तदुःशिक्षितं प्रकृतनिर्णयानर्हमिति यावत्, यथाद्यापि न श्रद्दधाति ममोद्देशेनैवेयं कामार्त्तेति न विश्वसिति, प्रकृतनिर्णयार्हत्वे त्ववश्यमेवेतत् श्रद्दधीतेति भावः। निपुणालापेन वाक्पटुजनोचिता-लापेन व्यङ्ग्यार्थपूर्णवाक्येनेत्यर्थः।

(श) प्रकाशमिति। जानामि वक्ष्यमाणमहं मन्ये। कां कामपि अनिर्वचनीयां अरतिं विरागं निमित्तीकृत्य, अविरलेन निरन्तरेण सन्तापेन तीव्रो महान् अयं व्याधिः प्रवृत्तस्त्वय्युत्पन्नः। व्यङ्ग्यार्थस्तु कामरति, मदनानुरागं। अविरलेन सन्तापेन शरीरोत्तापेन तीव्र इति।

(ष) सुतन्विति। हे सुतनु! एष त्वदाश्रित एव व्याधिः, यथा अस्मान् व्यथयति, सत्यमेव तथा न त्वामित्यन्वयः, पीड़ा हि स्वाश्रितजनादपि स्निग्धं जनमधिकं पीड़यतीति लोकवादस्य सत्यत्वादिति भावः। एष काम इति व्यङ्ग्योऽर्थः। अत्रानुरूपो भावो यथा शाकुन्तले—"तपति तनुगात्रि! मदनस्त्वामनिशं मां पुन-र्दहत्येव।"

(स) अतएवाह इच्छामीति। देहदानेनापि शरीरपातेनापि अत्रभवतीं माननीयां त्वां स्वस्थां सुस्थां कर्त्तुमिच्छामि, स्वदेहतोऽपि तवाधिकप्रियत्वादिति भावः। व्यङ्ग्यार्थस्तु देहदानेनापि रतिसम्भावेन तुभ्यं देहार्पणेनापीति।

(व) চন্দ্রাপীড় তখনই মদলেখা প্রভৃতি সকলেরই অভিনবাগমনোচিত সম্ভাষণাদি করিয়া কাদম্বরীর সেই অবস্থা দেখিয়া চিন্তা করিলেন—'আমার চিত্ত, অত্যন্ত কুশিক্ষায় শিক্ষিত; যেহেতু,—এখনও ইহার প্রকৃত অবস্থা বিশ্বাস করিতেছে না। যাহা হউক, ভঙ্গীপূর্ণবাক্যে ইহাকে জিজ্ঞাসা করি' (শ) এইরূপ চিন্তা করিয়া প্রকাশ্যে বলিলেন—'দেবি! আমি মনে করি,—কোন অনির্ব্বচনীয় বৈরাগ্যনিবন্ধন আপনার এই রোগ জন্মিয়াছে; এবং নিরন্তর সন্তাপিত করায় ভয়ঙ্কর হইয়া দাঁড়াইয়াছে। (ষ) হে সুন্দরি! এই রোগ আমাকে যেরূপ ব্যথিত করিতেছে, সত্যই আপনাকে সেরূপ করিতেছে না। (স) অতএব আমি দেহপাত করিয়াও আপনাকে সুস্থ করিতে ইচ্ছা করি। (হ) রোগের প্রভাবে আপনি কাঁপিতেছেন,

(१) अविचलसन्तापतन्त्रो व्याधिः।

पीड़या पतितामवेक्षमाणस्य पततीव मे हृदयम् (ङ)। अनङ्गदे तनुभूते (१) ते भुजलते गाढ़सन्तापया (२) च दृष्ट्या वहति स्थलकमलिनीमिव (३) रक्ततामरसाम् (च)। दुःखितायाञ्च त्वयि परिजनेऽपि चानवरतक्षतास्रुविन्दुपातेन वर्त्तते मुक्ताभरणता। गृहाण स्वयंवरार्हाणि मङ्गलप्रसाधनानि। सकुसुमशिलीमुखा हि शोभते नवालता" इति (४)। (छ)

(ङ) उत्कम्पिनीति। उत्कम्पिनीं व्याधिप्रभावादत्यन्तकम्पवतीं त्वां अनु लक्ष्यीकृत्य कम्पमानस्य, तथा पीड़या व्याधियातनया कुसुमेषु पतितं पुष्पेषु शयितां त्वां अवेक्षमाणस्य पश्यतो मे मम हृदयं पततीव वहिर्गच्छतीव, त्वत्कष्टदर्शनेन दारुणकष्टोदयादिति भावः। व्यङ्ग्यार्थस्तु उत्कम्पिनीं प्रबलकामोदयात् कम्पाख्यसात्त्विकभाववतीं त्वां अनुकम्पमानस्य रमणेन दयाविषयीकर्त्तुमिच्छतः, तथा कुसुमेषोः पुष्पवाणस्य कामस्य पीड़या, पतितां स्वस्थाङ्गीं त्वामवेक्षमाणस्य मे मम हृदयं पततीव त्वां रमयितुं धावतीव।

(च) अनेति। तनुभूते व्याधिप्रभावात् कृशीभूते ते तव भुजलते बाहुलताद्वयं अनङ्गदे अङ्गदाभ्यां केयूराभ्यां रहिते जाते इति शेषः, पूर्वतः कृशत्वेनेदानीं तद्धारणासम्भवादिति भावः। तथा गाढ़ः सन्तापो यस्यां तया दृष्ट्या च, रक्तं लोहितवर्णं तामरसं पद्मं यत्र तां स्थलकमलिनीं वहसीव, एतदुभयमपि महादुःखकरमिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। व्यङ्ग्यार्थस्तु अनङ्गं कामं कामोद्दीपनां ददातीत्यनङ्गदा तस्याः सम्बोधनं। ते तव भुजलते तनुभूते कामपीड़या कृशीभूते। तथा गाढ़सन्तापया तीव्रमदनसन्तापसूचिकया दृष्ट्या, दृष्टिपातेन च, स्थले पद्मिन्यादिनायिकास्थले कमलिनी पद्मिनीरूपा तां चतुर्विधयोषिदन्तर्गतपद्मिनीरूपमात्मानमित्यर्थः, अरसां शृङ्गाररहितां रमणरूपशृङ्गारफलवर्जितां, रक्तां केवलमनुरक्तां वहसीव, प्रापयसीव, तीव्रमदनतापसूचकेन दृष्टिपातेन पद्मिनीभूतस्यात्मनो मदनानुरागं सूचयसीवेति सरलार्थः। वहतेर्द्विकर्मकत्वात् स्थलकमलिनीमित्यस्यापि कर्मत्वम्।

(छ) दुःखीति। किञ्च, त्वयि दुःखितायां व्याधिवशात् सञ्जातदुःखायां सत्यां, परिजनेऽपि च अनवरतं क्षतो योऽस्रुविन्दुपातस्तेन सह मुक्ताभरणता त्यक्तालङ्कारता वर्त्तते, अतीवानुरक्ततया त्वद्दुःखोदयादिति भावः। अतएव स्वयं त्वं, वराणि उत्कृष्टानि च तानि अर्हाणि स्वयोग्यानि चेति तानि वरार्हाणि, मङ्गलप्रसाधनानि माङ्गलिकालङ्कारान् गृहाण, तथा सति परिजनेनापि लब्धाश्वासेन सता पुनरप्याभरणं गृह्यतेति भावः। तथा च नवा

সুতরাং আপনাকে দেখিয়া আমিও কম্পিত হইতেছি; আপনি রোগের যাতনায় পুষ্পশয্যার উপরে পড়িয়া রহিয়াছেন, ইহা দেখিয়া আমার প্রাণ যেন বাহির হইতেছে। (ক) রোগের প্রভাবে আপনার বাহুলতা দুইটি কৃশ হইয়া গিয়াছে, সুতরাং তাহাতে কেয়ূর নাই; তীব্র সন্তাপে সন্তপ্ত নয়নযুগল যেন রক্ত-পদ্ম-সমন্বিত স্থলপদ্মিনীকে ধারণ করিতেছে। (ক) বিশেষতঃ আপনি দুঃখিত রহিলে পরিজনবর্গও অবিশ্রান্ত অশ্রু বর্ষণ করিয়া অলঙ্কার

(१) अनङ्गदेवतनुभूते। (२) गाढ़सन्तापतया। (३) स्थलकमलिनीव।

(४) अपि च अनवरत..., परिजनोऽपि चानवरतक्षतास्रुविन्दुपातेन वर्त्तते। मुक्ताभरणतां गृहाण।... कुसुमशिलीमुखान्तर्हिता शोभते यथा लता इति।

अथ कादम्बरी बालतया स्वभावमुग्धापि कन्दर्पेणोपदिष्टयेव प्रज्ञया तमशेषमस्याव्यक्तव्याहारसूचितं (१) अर्थं मनसा जग्राह, मनोरथानान्तु तावतीं भूमिमसम्भावयन्ती शालीनतास्वावलम्बमाना तूष्णीमेवासीत्। केवलमुत्पादितान्यव्यपदेशा तत्क्षणं तमाननामोदमधुकरपटलान्धकारितं (२) द्रष्टुमिव स्मितालोकमकरोत् (ख)। ततो मदलेखा प्रत्यवादीत्—"कुमार! किं कथयामि,

---

नूतना लता, कुसुमैः पुष्पैः शिलीमुखैर्भ्रमरैश्च सह वर्त्तत इति सकुसुमशिलीमुखा सत्येव शोभते न पुनरकुसुमशिलीमुखेत्यर्थः। अतस्त्वमपि सप्रसाधनेव शोभसे न पुनरप्रसाधनेति त्वया प्रसाधनमवश्यमेव ग्रहणीयमिति भावः। अत्र दृष्टान्तोऽलङ्कारः। व्यङ्ग्यार्थस्तु त्वयि दुःखितायां मदनवेदनया सञ्जातदुःखायां सत्यां परिजनोऽपि च अनवरतक्षताश्रुबिन्दुपातेन सह मुक्ताभरणतया त्यक्तालङ्कारता वर्त्तते, त्वद्दुःखेनैव दुःखोदयादिति पूर्वं एव भावः। अतएव स्वयंवरार्हाणि स्वयंवरयोग्यानि, मङ्गलप्रसाधनानि हस्तसूत्रादीनि माङ्गलिकाभरणानि, गृहाण धारय। अस्यामप्यवस्थायां त्वं शोभितैवासीति प्रथगेवाह सकुसुमेति। न विद्यते बालता शैशवं यस्याः सा नबालता युवतिः, कुसुममेव शिलीमुखो बाणो यस्य स कुसुमशिलीमुखः कामः, तेन सह वर्त्तत इति सा तथाविधैव शोभते, न पुनरकामेति भावः। "गमिकर्म्मीकृतनैकनीवृता" इत्यादिवत् नबालतेत्यत्र "नभ्राण्नपादि"त्यादिना नञ्प्रकृत्ये"ति नलोपाभावः, तथा "यमकादौ भवेदैक्यं डलोर्बवोरलोस्तथा" इति नियमादौ डाबकारान्तस्थवकारयोरभेदः। एतदनुरूपो भावो यथा मालतीमाधवे—"महभाग! सुश्लिष्टगुणतया" इत्यादि प्रथमाङ्के।

(ख) अथेति। अव्य व्याहारसूचितं अस्पष्टवाक्यप्रतिपादितं। जग्राह बुबुधे। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। तावतीं भूमिं सङ्गमरूपमत्युच्चविषयं। शालीनतां लज्जाशीलतां। उत्पादितान्यव्यपदेशा प्रकटितान्यच्छला। आननामोदेन मुखसौरभेणागतमित्यर्थः यन्मधुकरपटलं भ्रमरसमूहस्तेन 'अन्धकारितं' सञ्जातान्धकारं तं चन्द्रापीड़ं द्रष्टुमिव स्मितालोकमकरोत्, अन्धकारावृतं घटादिकमालोकयितुं दीपालोकवदिति भावः। अत्र तथागतमधुकरपटलेन अन्धकारितत्वासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिः क्रियोत्प्रेक्षा चानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

•(ग) तत इति। प्रत्यवादीत् प्रत्युत्तरमकार्षीत्। अकथनीयः कथयितुमशक्यः, निरतिशयतीव्रतया

পরিত্যাগ করিয়া থাকে; অতএব আপনি নিজে, নিজের উপযুক্ত উৎকৃষ্ট মাঙ্গলিক অলঙ্কার ধারণ করুন; কারণ—নবীন লতা, পুষ্প ও ভ্রমর-সমন্বিত হইয়াই শোভা পায়।

(খ) তদনন্তর কাদম্বরী বালকতানিবন্ধন স্বভাবতই সরল হইলেও, কামদেবকর্তৃক উপদিষ্ট হইয়াই যেন, চন্দ্রাপীড়ের সেই অস্পষ্ট-বাক্য-সূচিত সমস্ত অর্থই মনে মনে বুঝিলেন; কিন্তু ততদূর আশার বিষয় সম্ভাবনা করিতে না পারিয়া, লজ্জা অবলম্বন করিয়া নীরব হইয়া রহিলেন এবং তখন অন্য কোন ছল প্রকাশ করিয়া, মুখ-সৌরভে উপস্থিত ভ্রমরগণের অন্ধকারে আবৃত চন্দ্রাপীড়কে দেখিবার জন্যই যেন ঈষৎ হাস্যের প্রভা প্রকাশ করিলেন। (গ) তাহার পর মদলেখা প্রত্যুত্তর করিল,—"রাজকুমার! বলিব কি, ইহার এই ভয়ঙ্কর সন্তাপ বর্ণনীয়

---

(१) अस्य वत्मसूचितं। (२)···अन्धकारितं सुखं।

दारुणोऽयमकथनीयः खलु सन्तापः। अपि च कुमारभावोपेतायाः (१) किमिवास्या यन्न सन्तापाय (ग)। तथाहि मृणालिन्याः शिशिरकिसलयमपि हुताशनायते, ज्योत्स्नाप्यातपायते, (घ) ननु किसलयतालवृन्तवातैर्मनसि जायमानं किं न पश्यसि (२) खेदम्? धीरत्वमेव प्राणसन्धारणहेतुरस्याः" इति (ङ)। कादम्बरी तु हृदयेन तमेव मदलेखालापमस्य प्रत्युत्तरीचकार (च)। चन्द्रापीड़ोऽप्युभयथा घटमानार्थतया सन्देहदोलारूढ़ेनैव चेतसा महाश्वेतया

वाग्विषयातीतत्वात्, मदनजनिततया लज्जाकरत्वाच्चेति भावः। कुमारभावोपेतायाः कौमार्य्यमापन्नायाः सुतरामेवात्यन्तकोमलाया इति भावः, अस्याः कादम्बर्य्याः सम्बन्धे किमिव वस्तु अस्ति यन्न सन्तापाय सम्पद्यते। व्यङ्ग्यार्थस्तु—कुत्सितो मारो मदनो यस्मात्तस्मिन् कुमारे परमसुन्दरे त्वयि भावोपेताया अनुरागमापन्नायाः अथवा कुत्सितो यो मारः कन्दर्पस्तस्य भावोपेताया आविष्क्रियां प्राप्तायाः।

(घ) सन्तापविरोधिनामपि तज्जनकत्वप्रतिपादनेन सर्व्ववस्तूनामेव सन्तापकत्वं प्रतिपादयितुमाह तथाहीति। मृणालिन्याः पद्मिन्याः शिशिरकिसलयमपि शीतलपल्लवमपि हुताशनायते हुताशनवदाचरति। आतपायते सूर्य्यालोकवदाचरति। उभयत्रापि सन्तापयतीत्यर्थः। अनयोः प्रत्येकं क्यङ्गतोपमालङ्कारः, तेन च शीतलपदार्थात् सन्तापोत्पत्तेर्विषमालङ्कारो व्यज्यत इत्यलङ्कारेणालङ्कारध्वनिः।

(ङ) नन्विति। आमन्त्रणे ननुशब्दः। किसलयं पल्लवमेव तालवृन्तं व्यजनं तस्य वातैः। तालवृन्तशब्दस्य अवयवार्थाननुसन्धानेन रूढ़िवशात् समुदायेनैव व्यजनप्रतीतिरिति नानुपपत्तिः। तथा च शाकुन्तलेऽपि—"सञ्चारयामि नलिनीदलतालवृन्तम्।" खेदं क्लान्तिम्। अथ तादृशसन्तापे कथं प्राणधारणमित्याह धीरत्वमिति।

(च) कादेति। अस्य चन्द्रापीड़ोक्तवाक्यस्य, प्रत्युत्तरीचकार, आत्मनोऽपि तथैव वक्तव्यत्वादिति भावः।

(छ) चन्द्रेति। उभयथा घटमानार्थतया कुमारभावशब्दस्य कौमार्य्यं स्वस्मिन्ननुरागश्चेति द्विप्रकारेण सङ्गच्छमानार्थकतया हेतुना, सन्देहः मदनुरागार्थ एव कुमारभावशब्दः प्रयुक्तो न वेति संशय एव दोला तामारूढ़े-

---

নহে। আর, কুমারভাবাপন্ন কাদম্বরীর পক্ষে এমন কোন্ বস্তু আছে, যাহা সন্তাপ জন্মায় না। (ঘ) দেখুন—পদ্মলতার শীতল পল্লবও অগ্নির ন্যায় ব্যবহার করে এবং জ্যোৎস্নাও রৌদ্রের ন্যায় আচরণ করে। (ঙ) আর দেখিতেছেন না কি? যে, পল্লবময় ব্যজনের বায়ুতে ইহার চিত্তে কষ্ট জন্মিতেছে, তবে ধৈর্য্যই ইহার প্রাণ-ধারণের কারণ।" (চ) কাদম্বরী কিন্তু মনে মনে সেই মদলেখার কথাগুলিকেই চন্দ্রাপীড়-বাক্যের প্রত্যুত্তরস্থানপাতী করিলেন। (ছ) 'কুমারভাব' শব্দটির অর্থ, দুই প্রকারেই সঙ্গত হয় বলিয়া, 'আমার প্রতি অনুরাগার্থে 'কুমারভাব' শব্দটি প্রয়োগ, করিয়াছে কি না'—এই জাতীয় সংশয়রূপ-দোলারূঢ় চিত্তে চন্দ্রাপীড়, মহাশ্বেতার সহিত প্রণয়বৃদ্ধিনিবন্ধন মনোহর আলাপে বহু সময় অবস্থান করিয়া, সেই

---

(১) सुकुमार...। (২) पश्यति।

सह प्रीत्युपचयचतुराभिः कथाभिः (१) महान्तं कालं (२) स्थित्वा तथैव महता यत्नेन मोचयित्वात्मानं स्कन्धावारगमनाय कादम्बरीभवनान्निर्ययौ। (छ)

निर्गतञ्च तं तुरङ्गममारुरुक्षन्तं पश्चादागत्य केयूरकोऽभिहितवान्—"देव! मदलेखा विज्ञापयति—'देवी कादम्बरी (३) प्रथमदर्शनजनितप्रीतिः पत्त्रलेखां निवर्त्यमानामिच्छति, पश्चादयास्यति' इति श्रुत्वा देवः प्रमाणम्।" इत्याकर्ण्य चन्द्रापीड़ः "केयूरक! धन्या स्पृहणीया च पत्त्रलेखा, यामिवमनुबध्नाति दुर्लभो देवीप्रसादः, प्रवेश्यताम्" इत्यभिधाय पुनः स्कन्धावारमेवाजगाम (ज)। प्रविशन्नेव पितुः समीपादागतमभिज्ञाततरं (४) आलेख-हारकमद्राक्षीत्। धृत-तुरङ्गमश्च प्रीतिविस्फारितेन चक्षुषा दूरादेवाप्रच्छत्—"अङ्ग! कच्चित् कुशली

नेव। प्रीत्युपचयेन प्रणयवृद्ध्या चतुरा निपुणास्ताभिः कथाभिरालापैः। महान्तं कालं बहुक्षणं। तथैव तादृशीभिश्चतुराभिः कथाभिरेव। आत्मानं मोचयित्वा ताभ्यो निष्क्राम्य अनुमतिं कारयित्वेत्यर्थः।

(ज) निर्गतमिति। तुरङ्गममश्वं आरुरुक्षन्तं आरोढुमिच्छन्तं तं चन्द्रापीड़म्। पत्त्रलेखायाः प्रथम-दर्शनेनैव जनिता प्रीतिर्यस्याः सा। निवर्त्यमानां भवता अत्रैव स्थाप्यमानाम्। पश्चादयास्यति पत्त्रलेखेति शेषः। देवो भवान्, प्रमाणं कर्त्तव्यनिर्द्धारयिता। देव्याः प्रसादः कादम्बर्य्या अनुग्रहः। अनुबध्नाति अनुसरति विषयीकरोतीत्यर्थः। प्रवेश्यतां पत्त्रलेखेति शेषः।

(झ) प्रविशन्निति। प्रविशन्नेव स्कन्धावार इति शेषः। अभिज्ञाततरं अत्यन्तपरिचितं, अतएव

ভাবেই গুরুতর যত্নে আপনাকে মুক্ত করাইয়া কেল্লায় যাইবার নিমিত্ত কাদম্বরীর গৃহ হইতে নির্গত হইলেন।

(জ) চন্দ্রাপীড় কাদম্বরীর গৃহ হইতে নির্গত হইয়া অশ্বে আরোহণ করিতে ইচ্ছা করিতেছিলেন, এমন সময়ে, পিছনের দিক্ হইতে আসিয়া কেয়ূরক বলিল—"রাজকুমার! মদলেখা জানাইতেছেন যে, 'পত্রলেখা প্রথম দর্শনেই কাদম্বরীদেবীর সন্তোষ জন্মাইয়াছেন; সুতরাং কাদম্বরী দেবী ইচ্ছা করিতেছেন যে, আপনি পত্রলেখাকে এখানে রাখিয়া যান; পত্রলেখা পরে যাইবেন' এই কথা শুনিয়া এখন আপনি যাহা স্থির করেন।" চন্দ্রাপীড় ইহা শুনিয়া বলিলেন—"কেয়ূরক! পত্রলেখা ধন্য ও সকলেরই বাঞ্ছনীয়; কারণ, যাহার উপরে দুর্লভ কাদম্বরীদেবীর অনুগ্রহ পড়িয়াছে; অতএব তুমি ইহাকে ভিতরে প্রবেশ করাও" এই কথা বলিয়া পুনরায় কেল্লাতে আসিলেন। (ঝ) কেল্লার ভিতরে প্রবেশ করিতে করিতেই দেখিতে পাইলেন যে, অত্যন্ত পরিচিত এক জন পত্রবাহক পিতার নিকট হইতে আসিয়াছে;

(१) मधुरालापगर्भाभिः कथाभिः। (२) कालञ्च।
(३) खलु प्रथम…। (४) अभिज्ञाततरं।

तात: सह सर्वेण परिजनेन, अम्बा च सर्वान्त:पुरै:” इति (ञ)। अथासावुपसृत्य प्रणामानन्तरं—“देव ! यथाज्ञापयसि” इत्यभिधाय लेखद्वितयमर्पयाम्बभूव। युवराजस्तु शिरसि कृत्वा स्वयमेव च तदुन्मुच्य क्रमशः पपाठ। (ञ)

‘स्वस्ति, उज्जयिनीत: सकल-राजन्य-शिखण्ड-शेखरीकृत-चरणारविन्द: परम-माहेश्वरो महाराजाधिराजो देवस्तारापीड़: सर्वसम्पदामायतनं चन्द्रापीड़-मुदच्चचारु-चूड़ामणि-मरीचि-चक्र-चुम्बिन्युत्तमाङ्गे चुम्बन्नन्दयति (ट)। कुशलिन्य: प्रजा:, किन्तु (१) कियानपि कालो भवतोऽदृष्टस्य (२) गत:, (३) बलवदुत्कण्ठितं

विपक्षप्रेरिततया न सन्देह इति भाव:। आलेखहारकं पत्रवाहकं। अङ्गेति. सम्बोधनसूचकमव्ययम्। कच्चिदिति अवगमार्थे। सर्वान्त:पुरै: सर्वाभिरन्त:पुरस्थस्त्रीभि: सह। इति कच्चित् अवगन्तुमिच्छामीत्यर्थ:।

(ञ) अथेति। असौ आलेखहारक:। यथा आज्ञापयसि पृच्छसि तथा ते सर्वे एव कुशलिन इत्यर्थ:। लेखद्वितयं पत्रद्वयं। तत् लेखद्वितयं उन्मुच्य आवरकात् प्रच्याव्य।

(ट) स्वस्तीति। स्वस्ति तवाशीरस्त्वित्यर्थ:। “स्वस्त्याशी: क्षेमपुण्यादा”वित्यमर:। “आशीर्वचन-संयुक्तं पुत्त्रपत्रे पदक्रमम्।” इति पत्रकौमुद्यां वररुचिवचनात् प्रथममेव स्वस्तिपदप्रयोग इति बोध्यम्। सकलै राजन्यै: सामन्तै: शिखण्डेषु मौलिषु शेखरीकृतं भूषणीकृतं चरणारविन्दं यस्य स:, परममाहेश्वरो महाशैव:। उज्जयिनीत: सकाशात्। उदच्चदुद्गच्छत् चारु मनोहरं यत् चूड़ामणिमरीचीनां चक्रं समूह-स्तत् चुम्बति स्पृशतीति तस्मिन्, उत्तमाङ्गे मस्तके चुम्बन् सन्, सर्वसम्पदामायतनं भाजनं चन्द्रापीड़ं नन्दयति अभिनन्द्य लिखतीत्यर्थ:। अयमंशो लेखकेन प्रचलितरीत्यैव लिखित इति बोध्यम्।

(ठ) कुशेति। प्रजा: कुशलिन्य: सन्ति, किन्तु अदृष्टस्य अस्माभिरनवलोकितस्य भवत:, कियानपि बहुतर इत्यर्थ: कालो गत:। अतएव नोऽस्माकं हृदयं बलवदुत्कण्ठितम्। देवी तव माता विलासवती च,

তখন তিনি অশ্ব ধারণ করিয়া প্রীতিপ্রফুল্ল নেত্রে দূর হইতেই জিজ্ঞাসা করিলেন—"ভদ্র ! সকল পরিজনবর্গের সহিত পিতৃদেব ও সকল অন্তঃপুরস্থ রমণীগণের সহিত মাতৃদেবী কুশলে আছেন ত ? ।" (ঞ) তাহার পর সেই পত্রবাহক নিকটে আসিয়া প্রণাম করিয়া বলিল— "আপনি যাহা জিজ্ঞাসা করিয়াছেন, তাঁহারা সেইরূপই কুশলে আছেন" এই কথা বলিয়া দুইখানি পত্র সমর্পণ করিল। তখন যুবরাজ পত্র দুইখানি মস্তকে স্পর্শ করাইয়া নিজেই তাহা খুলিয়া ক্রমে পাঠ করিলেন।

(ট) 'তোমার মঙ্গল হউক; সমস্ত সামন্তগণ যাঁহার পাদপদ্মকে মস্তকের অলঙ্কার করিয়াছেন, পরমশৈব ও দেবতার তুল্য প্রভাবশালী সেই মহারাজাধিরাজ তারাপীড়, চূড়ার মণি হইতে উত্থিত-মনোহর-কিরণরাশি-সংস্পর্শী মস্তকে চুম্বন করিয়া, সকল-সম্পদ্‌ভাজন চন্দ্রাপীড়কে অভিনন্দিত করিয়া লিখিতেছেন। (ঠ) প্রজারা ভাল আছে, কিন্তু তোমার

(१) किन्न। (२) दृष्टस्य। (३) क्वचित् गत इति नास्ति।

नो हृदयम्, देवी च सहान्तःपुरैर्ग्लानिमुपनीता, अतो लेखवाचन-(१) विरतिरेव प्रयाणकालतां (२) नेतव्येति' (ठ)। शुकनासप्रेषिते द्वितीयेऽप्यमुमेवार्थं लिखितमवाचयत्। अस्मिन्नेवावसरे समुपसृत्य वैशम्पायनोऽपि लेखद्वितयमपरमात्मीयमस्मादभिन्नार्थमेवादर्शयत्। (ड)

अथ "यथाज्ञापयति तातः" इत्युक्त्वा तथैव (३) तुरगाधिरूढः प्रयाणपटहमवादयत् (४)। समीपे स्थितञ्च महताश्वीयेन (५) परिवृतं महाबलाधिकृतं बलाहकपुत्रं मेघनादनामानमादिदेश—(ढ) "भवता पत्रलेखया सहागन्तव्यम्, नियतञ्च केयूरकस्तामादायैतावतीं भूमिमागमिष्यति, (६) तन्मुखेन

अन्तःपुरैस्तत्स्थस्त्रीभिः सह ग्लानिं मनःकष्टं उपनीता त्वयैव प्रापिता। अतो लेखवाचनविरतिरेव पत्रपाठसमाप्तिकाल एव प्रयाणकालतां उज्जयिनीं प्रति यात्राकालतां। इदमेकं पत्रम्।

(ड) शुकेति। अस्मादुक्तचन्द्रापीड़पत्रात्। आत्मीयं स्वकीयं, अपरं लेखद्वितयं पत्रद्वयं पितुः शुकनासस्यैकं राज्ञश्चैकमित्यर्थः, अदर्शयत् चन्द्रापीड़ायेति शेषः।

(ढ) अथेति। तथैव पूर्ववदेव। प्रयाणपटहं यात्राढक्काम्। महता विशालेन, अश्वीयेन अश्वसैन्यसमूहेन। महाबलं सैन्यं तत्र अधिकृतं तदध्यक्षतायां नियुक्तं, बलाहकस्य प्रधानसेनापतेः पुत्रम्।

(ण) भवतेति। नियतञ्च निश्चितञ्च। आगमिष्यति अवश्यमेवात्र भवदवस्थानवार्त्ताप्राप्तिसम्भवात् तत्र च भवतो गमनासम्भवादिति भावः। तस्य केयूरकस्य मुखेन। अवधारणे ननुशब्दः। इयं सा जगत्-

---

সহিত দেখা নাই—এই অবস্থায় বহুকাল অতীত হইয়া গিয়াছে; অতএব আমার মন বড়ই উৎকণ্ঠিত হইয়াছে এবং অন্তঃপুরস্থ সমস্ত রমণীগণের সহিত মহারাণীও মনের কষ্টে কাতর হইয়া পড়িয়াছেন; অতএব তুমি পত্রপাঠের সমাপ্তিকালকেই যাত্রার কাল করিবে।' (ড) শুকনাসের প্রেরিত দ্বিতীয় পত্রও পড়িয়া দেখিলেন যে, এই বিষয়ই লিখিত আছে। এই সময়েই বৈশম্পায়নও আসিয়া, এই পত্র হইতে অভিন্ন-অর্থ-সম্পন্ন নিজের আর দুইখানি পত্র চন্দ্রাপীড়কে দেখাইলেন।

(ঢ) তাহার পর 'পিতৃদেব যেরূপ আদেশ করিয়াছেন (তাহাই করিব)" এই কথা বলিয়া চন্দ্রাপীড়, সেই ভাবেই অশ্বে আরোহণ করিয়া যাত্রার ঢাক বাজাইলেন এবং নিকটবর্ত্তী, বিশাল অশ্বসৈন্যে পরিবেষ্টিত ও বিপুল সৈন্যের অধ্যক্ষ মেঘনাদ নামে বলাহকের (প্রধান সেনাপতির) পুত্রকে আদেশ করিলেন,—(ণ) "আপনি পত্রলেখার সহিত আসিবেন; নিশ্চয়ই তাহাকে নিয়া কেয়ূরক এই পর্য্যন্ত আসিবে; তখন কেয়ূরকের মুখে প্রণাম জানাইয়া

---

(१) लेखवाचना...। (२) प्रयाणकालता, प्रयाणकारणतां।
(३) तथैव च। (४) अदापयत्। (५) महता श्वेताश्वीयेन। (६) इति।

विज्ञाप्या प्रणम्य देवी कादम्बरी। नन्वियं सा त्रिभुवननिन्दनीया निरनुरोधा निष्परिचया च (१) दुर्ग्रहा प्रकृतिर्मर्त्यानाम्, येषामकाण्डविसंवादिन्यः प्रीतयो न गणयन्ति निष्कारणवत्सलताम्। एवं गच्छता मयात्मनो नीतः स्नेहः कपट-कूट-जालिकताम्, प्रापिता भक्तिरलीक-काकु-करण-कुशलताम्, पातितमुपचार-मात्रमधुरं (२) धूर्त्ततायामात्मार्पणम्, प्रकटितं वाङ्मनसयोर्भिन्नार्थत्वम् (ण)। आस्तां तावदात्मा, अस्थानाहितप्रसादा दिव्ययोग्या देव्यपि वक्तव्यतां नीता। जनयन्ति हि पश्चाद्वैलक्ष्यमभूमिपातिताः (३) व्यर्थाः प्रसादास्तद्दृष्टयो

प्रसिद्धा। निरनुरोधा कस्याप्यनुरोधेन न परिवर्त्तनीयेत्यर्थः, निष्परिचया परिचयेनापि नान्यथा करणीयेति तात्पर्य्यम्, दुर्ग्रहा दृढकृतया दुर्बोधा, मर्त्यानां मनुष्याणां प्रकृतिः स्वभावः। येषां मर्त्यानां, अकाण्डे अनवसरे विसंवादिन्यो व्यभिचारिण्यः प्रीतयः प्रेमाणः, निष्कारणवत्सलतां कस्याप्यकारणस्नेहं, न गणयन्ति नानुसरन्ति। उक्तमेवार्थं समर्थयितुमाह एवमिति। एवमनेन प्रकारेण सहसैवेत्यर्थः। आत्मनः स्वस्य स्नेहः प्रीतिः, कपटी धूर्त्तो यः कूटजालिक ऐन्द्रजालिकस्तस्य भावस्तां धूर्त्तेन्द्रजालिकव्यवहारत्वमित्यर्थः, नीतः प्रापितः। भक्तिरनुरक्तिः, अलीककाकुकरणे मिथ्यावक्रोक्तिरचनायां कुशलतां नैपुण्यं प्रापिता। उपचारमात्रेण केवलेन वाग्व्यवहारेण मधुरं, नतु वस्तुतो मधुरमिति भावः, आत्मार्पणं आत्मप्रदानं, धूर्त्ततायां पातितं स्थापितं पर्य्यवसायितमित्यर्थः। तथा वाङ्मनसयोर्भिन्नार्थत्वं विसंवादित्वं प्रकटितम्, 'इच्छामि इहदानेनापि स्वस्य सवभवतीं कर्त्तुम्' इत्याद्यभिधाय सहसैव प्रस्थानादिति भावः। तथा च प्राक् प्रीतिं प्रदर्श्य सहसैव महाश्वेताकादम्बरीप्रभृतीनां तादृशीमकारणवत्सलतामगणयित्वा स्वदेशप्रस्थानान्मनुष्याणां प्रकृतिर्दुर्ग्रहैवेति समुदायाशयः। अत्र नन्वियमित्यादिसामान्यस्य एवमित्यादिविशेषेण समर्थनादर्थान्तरन्यासोऽलङ्कारः, स च कपटकूटजालिकतारोपस्य प्रकृतोपयोगितया परिणामः, तथा प्रकृतेर्दुर्ग्रहत्वप्रतिपादनकार्य्यं प्रति बहुतरकारणोपन्यासात् समुच्चयश्च, इत्येतेषामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(त) आस्तामिति। आत्मा अस्मत्सम्बन्धिनी कथेत्यर्थः आस्तां तावत् दूरे तिष्ठतु। अस्थाने अपात्रे आहितो न्यस्तः प्रसादः अनुग्रहो यया सा, तथा दिव्ययोग्या स्वर्गीयजनोचिता देव्यपि कादम्बर्य्यपि वक्तव्यतां

কাদম্বরীদেবীকে জানাইবেন যে,—'এই সেই ত্রিভুবনের নিন্দনীয়, অনুরোধানপেক্ষী, পরিচয়-বিহীন ও দুর্ব্বোধ্য মনুষ্যদিগের স্বভাব; যে মনুষ্যদিগের প্রণয়, অসময়ে বিপরীত হইয়া যায় ও অকারণ বাৎসল্যকে গণনা করে না।' দেখুন—আমি এই ভাবে প্রস্থান করিয়া নিজের স্নেহকে ধূর্ত্ত ঐন্দ্রজালিকের ব্যবহারে উপনীত করিয়াছি, অনুরাগকে মিথ্যা বক্রোক্তি-রচনায় নিপুণ করিয়াছি, কেবল বাক্যব্যবহারে সুমধুর আত্ম-সমর্পণকে ধূর্ত্ততায় পর্য্যবসিত করিয়াছি এবং বাক্য ও মনের বিভিন্ন ভাব প্রকাশ করিয়াছি। (ত) নিজের কথা দূরে থা'ক, যিনি অপাত্রে অনুগ্রহ বর্ষণ করিয়াছেন এবং যিনি স্বর্গীয় লোকেরই যোগ্য; সেই কাদম্বরীদেবীকেও

(१) क्वचित् चकारो नास्ति। (२) उपचारमधुरं। (३) अभूमिपाताः।

महताम् (त)। न खलु देवीं प्रति प्रबललज्जातिभारमन्थरं मे हृदयं यथा महाश्वेतां प्रति। नियतमिनामलीकाध्यारोपणवर्णिताम्मद्गुणसम्भारामस्थान-पक्षपातिनीमसकृदुपालप्स्यते देवी (थ)। तत् किं करोमि, गरीयसी गुरोराज्ञा प्रभवति (१) देहमात्रकस्य, हृदयेन तु हेमकूटनिवासव्यसनिना लिखितं जन्मान्तरसहस्रस्य दास्यपत्रं (२) देव्याः (द)। न दत्तमस्याटविकस्य गौल्मिके-

निन्दनीयतां नीता मया प्रापिता, विदेशादागतेनाज्ञातकुलशीलेन चन्द्रापीड़ेन सह कथं मैत्री कृतेति निन्दां प्रापितेत्यर्थः। हि यस्मात्, अभूमौ अपात्रे पातिता न्यस्ताः, अतएव व्यर्था निष्फलाः, महतां प्रसाद एवामृतं तत्पूर्णा दृष्टय इति प्रसादामृतदृष्टयः सुस्निग्धा दृष्टिपाता इत्यर्थः, पश्चात् वैलक्ष्यं लज्जां जनयन्ति, आत्मनिन्दा-वशादिति भावः। अत्र सामान्येन विशेषसमर्थनरूपोऽर्थान्तरन्यासोऽलङ्कारः।

(थ) नेति। देवीं कादम्बरीं। प्रबला अतिगुर्वी या लज्जा तस्या अतिभारेण मन्थरं जड़म्। ननु कथं तव हृदयं महाश्वेतां प्रत्येवातिरिक्तं प्रबललज्जातिभारमन्थरमित्याह नियतमिति। देवी कादम्बरी, अलीकाध्यारोपणेन मिथ्यारोपेण वर्णितः अस्मद्गुणानां सम्भारः समूहो यया ताम्, तथा अस्थाने अपात्रे पक्ष-पातिनी ताम्, एनां महाश्वेतां नियतं निश्चितं असकृत् उपालप्स्यते तिरस्करिष्यति, तद्विश्वासेन आत्मनोऽपि पक्षपातस्य निष्फलत्वादिति भावः। अत्र वाक्यार्थहेतुकं काव्यलिङ्गमलङ्कारः।

(द) तत् किं देवीप्रसादमेव विस्मरिष्यसीत्याह तदिति। गुरोः पितुः। देह एव देहमात्रं ततः कुत्सायां कप्रत्ययः, तस्य प्रभवति देहमात्र एवाधिपत्यं कर्त्तुं शक्नोति, सुतरां देहमात्रमेवोज्जयिनीं यास्यतीति भावः। तु किन्तु हेमकूटनिवासे व्यसनि आसक्तिमत् तेन हृदयेन, देव्याः कादम्बर्याः समीपे जन्मान्तरसहस्रस्य दास्यपत्रं लिखितं लिखित्वा दत्तं, सुतरां हृदयं तत्समीप एव चिरं स्थास्यतीति देवीप्रसादं न विस्मरिष्यामीति भावः।

(ध) इतश्च विस्मरणासम्भव इत्याह न दत्तमिति। गौल्मिकेन गुल्माधिकृतेन सैन्याध्यक्षेण, आटविकस्य

আমি নিন্দার ভাজন করিয়াছি। কারণ, অনুগ্রহামৃতে পরিপূর্ণ মহৎ লোকের দৃষ্টিপাত, অপাত্রে বিন্যস্ত হইয়া নিষ্ফল হইলে, সে, পরিশেষে নিজেরই লজ্জা জন্মাইয়া থাকে। (থ) কাদম্বরীদেবীর প্রতি আমার হৃদয়, সেরূপ গুরুতর লজ্জাভারে অলস নহে; যেরূপ মহাশ্বেতার প্রতি। কারণ,—মহাশ্বেতা, মিথ্যা আরোপ করিয়া আমার গুণগ্রাম বর্ণনা করিয়াছেন এবং অপাত্রে পক্ষপাত করিয়াছেন; সুতরাং কাদম্বরীদেবী নিশ্চয়ই তাঁহাকে বারংবার তিরস্কার করিবেন। (দ) তবে করিব কি, গুরুতর পিতার আদেশ কেবল দেহের উপরেই আধিপত্য করিতে পারে; (তাই দেহই উজ্জয়িনীতে যাইতেছে) কিন্তু হেমকূটে বাস করিবার জন্য অনুরাগী হৃদয়, কাদম্বরীদেবীর নিকটে সহস্র জন্মান্তরের জন্য দাস্যপত্র লিখিয়া দিয়াছে। (ধ) সৈন্যাধ্যক্ষ যেমন দুষ্ট ব্যাধকে যাইতে দেন না, সেইরূপ দেবীর অনুগ্রহ

(१) प्रभवति हि। (२) दास्यपट्टं।

नैव (१) देवीप्रसादेन गन्तुम्, सर्वथा गतोऽस्मि पितुरादेशादुज्जयिनीम् (ध)। प्रसङ्गतोऽसज्जनकथा-(२) कीर्त्तनेषु स्मर्त्तव्यः खलु चन्द्रापीड़चण्डालः (न)। मा चैवं मंस्थाः, यथा जीवन् पुनर्देवीचरणारविन्दवन्दनानन्दमननुभूय (३) स्थास्यति चन्द्रापीड़ इति (प)। महाश्वेतायाश्च सप्रदक्षिणं शिरसा पादौ वन्दनीयौ। मदलेखायाश्च कथनीयः प्रणाम-पूर्वमशिथिलः कण्ठग्रहः। गाढ़मालिङ्गनीया च तमालिका। अस्मद्वचनादशेषः प्रष्टव्यः कुशलं कादम्बरीपरिजनः, रचिताञ्जलिना च भगवानामन्त्रणीयो हेमकूटः" इति। (फ)

दुष्टवनचरस्येव, देव्याः कादम्बर्य्याः प्रसादेन अनुग्रहेण, अस्य मल्लक्षणस्य जनस्य गन्तुं न दत्तं, यथा समीपस्थः सैन्याध्यक्षो दुष्टं वनेचरं बलादावध्नाति देवीप्रसादोऽपि मां तथैवेत्यर्थः। तर्हि कथं प्रस्थातुमर्हसीत्याह सर्वथेति। गतोऽस्मि प्रस्थितोऽस्मि। पितुरादेशात् शरीरमात्रमेव गच्छति न पुनर्मनस्तस्य देवीप्रसादेनाबद्धत्वादिति सर्वथा प्रस्थातुं नार्हत्येवेति भावः। अत्रोपमालङ्कारः "गुल्मा रुक्स्तम्बसेनाश्च" इत्यमरः।

(न) प्रसङ्गत इति। चन्द्रापीड़ एव चण्डालश्चन्द्रापीड़चण्डालः, अनुगृहीतुरपि दुःखदत्वादिति भावः।

(प) मा चैवमिति। एतेनावश्यमेव पुनरप्यागमनं सूचितम्। अत्र वृत्त्यनुप्रासोऽलङ्कारः। यद्यपि कादम्बर्य्यां निर्णीयमानभाविभार्य्यात्वेन सर्वोऽपि व्यवहारः सङ्गच्छते, तथापि भक्तिभावप्रकाशो विनयसूचनया परमप्रेमजननाय।

(फ) महेति। महाश्वेताया महाहितैषितया तपस्वितया च केवलं सस्नेहा भक्तिरेव प्रदर्शिता। अशिथिलो गाढ़ः, कण्ठग्रह आलिङ्गनम्। मदलेखायास्तु कादम्बर्य्याः सखित्वेन समानस्थानपातितया प्रणामनिवेदनम्, तदाश्रितत्वेन किञ्चिन्न्यूनतया च गाढ़ालिङ्गनविज्ञापनसाहसम्। आत्मनस्तु कादम्बर्य्याः परिजनत्वनिवेदनात् समानस्थानपातितया प्रेमास्पदतया च परिजनीभूतायास्तमालिकायाः केवलगाढ़ालिङ्गनविज्ञापनम्। परिजनेषु कुशलप्रश्ननिवेदनन्तु तेभ्यः परिचर्य्यालाभेन प्रणयोदयात् कादम्बर्य्याः प्रेमाकर्षणाय तेष्वप्यात्मीयताप्रकाशस्यावश्यकत्वाच्च। आमन्त्रणीयः सम्भाषणीयः। हेमकूटामन्त्रणनिवेदनमपि च कादम्बर्य्या एव प्रेमाकर्षणाय तत्प्रेमाधीनतत्प्रेमप्रकाशपरत्वात्।

আমাকে যাইতে দিতেছে না ; তথাপি পিতার আদেশেই উজ্জয়িনীতে যাইতেছি। (ন) তবে প্রসঙ্গক্রমে দুর্জ্জনের কথা বলিবার সময়ে চণ্ডালচরিত্র চন্দ্রাপীড়কে যেন স্মরণ করেন। (প) আর এরূপ যেন মনে না করেন যে,—চন্দ্রাপীড় জীবিত থাকিয়া পুনরায় কাদম্বরীদেবীর পাদপদ্ম-সেবার আনন্দ অনুভব না করিয়া থাকিবে। (ফ) এবং প্রদক্ষিণ করার সহিত মস্তকদ্বারা মহাশ্বেতাদেবীর চরণে নমস্কার জানাইবেন ; নমস্কারপূর্ব্বক গাঢ় আলিঙ্গনের কথা মদলেখাকে বলিবেন ; তমালিকাকে গাঢ় আলিঙ্গন জানাইবেন ; আর আমার কথানুসারে কাদম্বরীদেবীর

---

(१) आटविकशीघ्रिकेणेव, देव्या हस्ते न दत्तमस्याः। दक्षिकशीघ्रिकेणेव।

(२) प्रसङ्गतो जनकथा...। (३)...चरणारविन्दमननुभूय।

एवमादिश्य तं, "सुहृदादि साधनमक्लेशयता शनैः शनैर्गन्तव्यम्" इत्युक्त्वा वैशम्पायनं स्कन्धावारभारे (१) न्ययुङ्क्त (ब) स्वयमपि च तथारूढ़ एव गमन-हेला-हर्ष-हेषारव-कम्पित-कैलासेन खुर-ताण्डव-खण्डितभुवा कान्त-कुन्त-लता-वन-वाहिना तरुण-तुरगप्रायेण (२) अश्वसैन्येनानुगम्यमानस्तमेव लेखहारकं पर्य्याणलग्नमभिनवकादम्बरी-वियोगशून्येनापि हृदयेनोज्जयिनीवार्त्तां (३) पृच्छन् प्रतस्थे। (भ)

क्रमेण चातिप्रवृद्धप्रकाण्ड-पादप-प्रायया, (म) मालिनीलतामण्डपैः (४)

(ब) एवमिति। तं मेघनादम्। सुहृदादि मित्रनृपतिवर्गप्रभृतिकं, साध्यते युद्धमनेनेति साधनं सैन्यं, अक्लेशयता यथासमयं भोजनशयनादिसम्पादनेन क्लिष्टमकुर्वता त्वयेति शेषः।

(भ) स्वयमिति। तथा पूर्व्वप्रकारेण आरूढ़ एव इन्द्रायुधमिति शेषः। गमनमेव हेला विलासस्तया यो हर्ष आनन्दस्तस्माद् यो हेषारवस्तेन कम्पितः कैलासो गिरिर्येन तेन। खुराणां ताण्डवेन उद्धतनृत्येन हठाघातेनेत्यर्थः खण्डिता विदारिता भूर्येन तेन। तथा कान्ताः सुन्दराः कुन्ताः शस्त्रविशेषा लम्बमानत्वाल्लता इव तासां वनं समूहं वहतीति तेन। अत्र लुप्तोपमा। तरुणास्तुरगाः प्राया बहुला यत्र तेन। पर्य्याणे पल्ययने लग्नः अश्वान्तरारोहणेन संसक्तदेहस्तं, लेखहारकं पत्रवाहकं।

(म) क्रमेणेति। चन्द्रापीड़ः क्रमेण च शून्यया अटव्या दिवसं गत्वा परिणते रविबिम्बे दूरत एव चिर-प्ररूढ़स्य रक्तचन्दनतरोरुपरि बद्धं महान्तं रक्तध्वजं ददर्शेत्यन्वयः। इतः स्त्रियां तृतीयैकवचनान्तपदानि अटव्येति

সমস্ত পরিজনবর্গকে মঙ্গল জিজ্ঞাসা করা জানাইবেন এবং কৃতাঞ্জলি হইয়া মাহাত্ম্যশালী হেমকূট পর্ব্বতকে সম্ভাষণ করিবেন।

(ব) এই ভাবে মেঘনাদকে আদেশ করিয়া বলিলেন—"বৈশম্পায়ন! তুমি মিত্র-রাজন্যবর্গ-প্রভৃতি সৈন্যগণকে কষ্ট না দিয়া ধীরে ধীরে যাইবে" এই কথা বলিয়া সৈন্যরক্ষার ভারে বৈশম্পায়নকে নিযুক্ত করিলেন। (ভ) নিজেও, সেইভাবেই অশ্বে আরোহণ করিয়া নূতন কাদম্বরীবিয়োগে শূন্যমনা হইলেও, পালানে সংলগ্নদেহ ও অন্য অশ্বে আরূঢ় সেই পত্রবাহকের নিকট উজ্জয়িনীর বৃত্তান্ত জিজ্ঞাসা করিতে করিতে প্রস্থান করিলেন; তখন অশ্বারোহী সৈন্যগণ তাঁহার পশ্চাৎ পশ্চাৎ যাইতে লাগিল; সেই অশ্বারোহী সৈন্যের মধ্যে বহুসংখ্যকই তরুণবয়স্ক অশ্ব ছিল; অশ্বগণ হেলার সহিত গমনের সময় আনন্দবশতঃ হেষারবে কৈলাস-পর্ব্বতকে কম্পিত করিতেছিল, নৃত্যপ্রায় খুরের আঘাতে ভূতল বিদীর্ণ করিতেছিল এবং সেই সৈন্যগণ লতাসমূহের ন্যায় দীর্ঘ দীর্ঘ কুন্তনামক অস্ত্রসমূহ ধারণ করিতেছিল।

(ম) চন্দ্রাপীড় ক্রমশঃ, শূন্য বনের মধ্য দিয়া যাইতে যাইতে দিন অতিবাহিত করিয়া সূর্য্যমণ্ডল প্রায় অস্তমিত হইলে ও দিনের আলোকগুলি বিম্বফলের ন্যায় অরুণবর্ণ দেখা যাইতে

(१)...भरे। (२) खुरपातनताण्डव-खण्डित-भूमण्डलेन तुरगप्रायेण। (३) उज्जयिनीमार्गे।
(४)...मण्डलैः।

मण्डलिततरुषण्डया, (य) गजपति-(१) पातित-पादप-परिहार-वक्रीकृत-मार्गया, (र) जन-(२) जनित-तृण-पर्ण-काष्ठ-कोटि-कूट-प्रकटित-वीर-पुरुष-(३) घात-स्थानया, (ल) महापादप-मूलोत्कीर्ण-कान्तार-दुर्गया, (व) तृषित-पथिक-खण्डित-दलोज्झितामलकीफल-निकरया, (श) विकसित-करञ्ज-मञ्जरी-रजोविच्छुरित-तटेस्तट-तरु-बद्ध-(४) पटच्चर-कर्पट-ध्वज-चिह्नैरिष्टकाश्रित-(५)

वक्ष्यमाणस्य विशेषणानि। अतिप्रवृद्धा अतीववृद्धिं गताः प्रकाण्डाः स्कन्धदेशा येषां ते तादृशाः पादपाः प्राया बहुला यस्यां तथा।

(य) मालिनीति। मालिनीनामकलतानां मण्डपैर्मण्डलितं वेष्टितं तरुषण्डं वृक्षसमूहो यस्यां तथा।

(र) गजेति। गजपतिभिः पातितानां पादपानां परिहारेण परित्यागेन वक्रीकृतो मार्गः पन्था यस्यां तथा।

(ल) जनेति। जनैः पथिकलोकैः जनितं आत्मरक्षणाय संगृहीतं यत् तृणपर्णकाष्ठानां कोटेः कोटिसंख्यायाः कूटं राशिः तेन प्रकटितं सूचितं वीरपुरुषाणामपि घातस्थानं हिंस्रजन्तुभिर्वधस्थानं यस्यां तथा। पथिका हि तादृशवनमध्ये हिंस्रजन्तुभ्य आत्मरक्षणाय तृणादिकूटमध्ये प्रविश्य रात्रौ निवसन्तीति प्रसिद्धिः। अत्र च्छेकानुप्रासवृत्त्यनुप्रासयोरेकाश्रयानुप्रवेशरूपः सङ्करः।

(व) महेति। महापादपानां मूलेषु उत्कीर्णा निखन्य निर्मिताः कान्तारदुर्गा वनदुर्गामूर्त्तयो यस्यां तथा।

(श) तृषितेति। तृषितैः पिपासातुरैः पथिकैः खण्डितानि चर्वितानि दलानि कियन्ति खण्डानि येषां तानि उज्झितानि चर्वणानन्तरं परित्यक्तानि च एवम्भूतानि यानि आमलकीफलानि तेषां निकरः समूहो यस्यां तथा। "दलं शस्त्रीच्छदोत्सेधावद्ध्यं खण्डपर्णयोः।" इति विश्वः।

(ष) विकसितेति। विकसितानां करञ्जमञ्जरीणां रजोभिः परागैः विच्छुरितानि व्याप्तानि तटानि तीराणि येषां तैः। तटतरुषु बद्धा ये पटच्चराणां चौराणां कर्पटा वस्त्रखण्डा त एव ध्वजचिह्नानि येषां तैः।

লাগিলে, দূর হইতেই পুরাতন এক রক্তচন্দনবৃক্ষের উপরে বদ্ধ বিশাল এক রক্তবর্ণ ধ্বজ দেখিতে পাইলেন। সেই শুষ্ক বনের মধ্যে বহুসংখ্যক বৃক্ষেরই স্কন্ধদেশ (গুড়ি) খুব বৃদ্ধি পাইয়াছিল। (য) মালিনীলতার মণ্ডপে বৃক্ষসমূহ পরিবেষ্টিত ছিল। (র) বৃহৎ হস্তিগণ যে সকল বৃক্ষ উন্মূলন করিয়াছিল, পথিকগণ তাহা পরিত্যাগ করিয়া সরিয়া যাওয়ায় পথগুলি বক্র হইয়াছিল। (ল) হিংস্র জন্তু হইতে আত্মরক্ষা করিবার নিমিত্ত পথিকগণ কোটি কোটি তৃণ, পর্ণ ও কাষ্ঠের রাশি সংগ্রহ করিয়া রাখিয়াছিল; তাহাতে সে স্থানে বলবান্ পুরুষেরও হত্যা হইত, ইহা প্রকাশ পাইয়াছিল। (ব) পথিকগণ প্রকাণ্ড প্রকাণ্ড বৃক্ষের মূলে বনদুর্গার মূর্ত্তি খোদিত করিয়া রাখিয়াছিল। (শ) পিপাসার্ত্ত পথিকগণ এক এক দিক্ চর্ব্বণ করিয়া আমলকী-ফলসমূহকে ফেলিয়া দিয়াছিল। (ষ) এবং সেই বনমধ্যে কতকগুলি পুরাতন কূপ ছিল; প্রস্ফুটিত করমচা-মঞ্জরীর রেণুতে সেই কূপগুলির তীরদেশ ব্যাপ্ত হইয়াছিল;

---

(१) वनगजपति···। (२) अजन...। (३)...पुरुषच्छदय...। (४) तटबद्ध··· (५) इष्टकचित...।

शुष्क-पल्लव-विष्टरानुमित-पथिक-विश्रामैर्विश्रान्त-कार्पटिक-प्रस्फोटित-(१) चरण-धूलि-(२) धूसर-किसलय-लाञ्छितोपकण्ठैः पत्र-सङ्करासुरभीकृताशिशिर-पङ्किल-विवर्णास्वादुजलैर्व्रतति-ग्रन्थि-ग्रथित-पर्णपुट-तृण-पूली-(३) चिह्नानुमेयैः जरत्कान्तार-कूपैरसुलभ-सलिलतया अनभिलषितोद्देशया, (क) मधु-विन्दु-स्यन्दि-सिन्दुवार-(४) वनराजि-रजोधूसरित-तीराभिश्च कुब्जक-(५) लताजालकैर्जटिलीकृत-सैकताभिः अध्वगोत्खात-वालुका-कूपिकोपलभ्यमान-(६) कलुष-स्वल्प-सलि-

---

इष्टकासु स्थिता ये शुष्कपल्लवानां विष्टरा उपवेशनायास्तरणानि तैरनुमिताः पथिकानां विश्रामा येषु तैः। विश्रान्ता ये कार्पटिकास्तीर्थयात्रिकास्तैः प्रस्फोटिताः पल्लवद्वारा ताडनेनैव विकीर्णा याश्चरणधूलयस्ताभिर्धूसराणि यानि किसलयानि पल्लवानि तैर्लाञ्छितः उपकण्ठः समीपदेशो येषां तैः। पत्राणां नानाविधवृक्षपर्णानां सङ्करेण मिश्रणेन असुरभीकृतानि दुर्गन्धीकृतानि अशिशिराणि उष्णानि, पङ्किलानि आविलानि, विवर्णानि अस्वादूनि च जलानि येषां तैः। व्रततिग्रन्थिभिर्लताग्रन्थिभिर्ग्रथिता याः पर्णपुटयुक्तास्तृणपूल्यस्तृणनिर्मितपत्रपुटाधारविशेषास्ता एव चिह्नानि तैरनुमेयैर्दूराद्दृश्यमानत्वेनानुमातुं योग्यैः। पथिका हि रज्जोः पात्रस्य चाभावे तृणैः पूलीं निर्माय तत्र च पत्रपुटं निधाय लतया बद्धा तेन कूपाज्जलमुत्तोलयन्तीति प्रसिद्धिः। जरन्तः पुरातना ये कान्तारस्य महावनस्य कूपास्तैर्हेतुभिः, असुलभानि दुष्प्रापाणि सलिलानि येषु उद्देशेषु ते तथा तेषां भावस्तया हेतुना, अनभिलषिता गन्तुमनिष्टा उद्देशाः स्थानानि यस्यास्तया। अत्र स्वभावोक्तिरलङ्कारः।

(क) मध्विति। किञ्च, मधुविन्दुस्यन्दिन्यो मकरन्दकणवर्षिण्यो याः सिन्दुवारवनराजयस्तासां रजोभिः परागैः धूसरितानि धूसरवर्णीकृतानि तीराणि यासां ताभिः। कुब्जकानि क्षुद्रक्षुद्रनिकुञ्जानि तेषां लताजालकैर्लतासमूहैः, जटिलीकृतानि व्याप्तानि सैकतानि पुलिनानि यासां ताभिः। तथा अध्वगैः पथिकैः उत्खाता वालुकामपसार्य निर्मिता या वालुकासु कूपिकाः क्षुद्रक्षुद्रकूपास्तासु उपलभ्यमानानि कलुषाणि आविलानि

তীরজাত বৃক্ষে চৌরগণের বস্ত্রখণ্ড সকল বদ্ধ ছিল এবং সেই বস্ত্রখণ্ডগুলিই সেই কূপগুলির ধ্বজচিহ্ন হইয়াছিল; ইটের উপরে শুষ্ক পল্লবের আস্তরণ পাতা ছিল, তাহাতে পথিকগণের বিশ্রাম করার অনুমান হইতেছিল; তীর্থযাত্রিগণ বিশ্রাম করিবার সময়ে যে সকল পল্লবদ্বারা চরণের ধূলি ঝাড়িয়া ফেলিয়াছিল, সেই ধূলিতে ধূসরবর্ণ সেই সকল পল্লবে কূপগুলির প্রান্তভাগ চিহ্নিত ছিল; নানাবিধ বৃক্ষের পত্র মিশ্রিত হওয়ায় কূপগুলির জল,—দুর্গন্ধ, উষ্ণ, কর্দ্দমাক্ত, অন্যবর্ণ ও কটুরস ছিল এবং তৃণগুলিতে (খড়ের ঝোতে) সংস্থাপিত ও লতাবদ্ধ পত্রপুটরূপ চিহ্ন দেখিয়া দূর হইতেই সেই কূপগুলির অনুমান হইত; এই জাতীয় কূপমাত্র থাকায় জল সুলভ ছিল না বলিয়া লোকে সেই বনভূমিতে যাইতে ইচ্ছা করিত না। (ক) এবং কতকগুলি শুষ্ক পার্ব্বত্য নদীতে সেই বনের মধ্যস্থান উঁচু নীচু করিয়াছিল; মধুবিন্দুবর্ষী সিন্দুবার বৃক্ষের (নিসিন্দা গাছের) বনশ্রেণী হইতে রেণু পতিত হইয়া সেই নদীগুলির তীরদেশ ধূসরবর্ণ

---

(१)...प्रस्फुटित, स्फोटित...। (२) .धूलि...।
(३) तृणोलुपपुलाक...। (४)...सिन्धु वार...। (५) कुलक...। (६)...कूपकोपलभ्यमान...।

लाभिः शुष्क-गिरिनदिकाभिर्विषमीकृतान्तरालया, (स) कुक्कुट-(१) कौलेयक-रटितानुमीयमान-गुल्म-गहन-ग्रामटिकया शून्यया दिवसमटव्या गत्वा, (ह) परिणते रविविम्बे, (२) विम्वारुणातपविसरे वासरे, (च) निःशाखीकृत-कदम्ब-शाल्मली-पलाश बहुलैः शिखर-शेषैक-पल्लव-विड़म्बितातपत्रैः पादपैः, ऊर्द्ध-स्थित-(३) प्ररोह-स्थूल-स्थाणु-मूल-ग्रन्थि-(४) जटिलेषु हरितालकपिल-पक्व-वेणु-

खल्पानि च सलिलानि यासु ताभिः। शुष्का या गिरिनदिकाः पर्वतीयाः क्षुद्रनद्यस्ताभिः विषमीकृतानि उच्चावचीकृतानि अन्तरालानि मध्यभागा यस्यास्तया। अत्र वृत्त्यनुप्रासोऽलङ्कारः।

(ह) कुक्कुटेति। कुक्कुटानां चरणायुधपक्षिणां कौलेयकानां कुक्कुराणाञ्च रटितैः शब्दैः अनुमीयमाना-स्तेषां ग्राम्यत्वादिति भावः, गुल्मगहनेषु तरुलतानिविड़स्थानेषु ग्रामटिकाः क्षुद्रक्षुद्रग्रामा यस्यां तया। तथा शून्यया निर्जनया, अटव्या वनेन वन्यपथेनेत्यर्थः, दिवसं गत्वा दिनमतिवाह्येत्यर्थः। अन्वयस्तूक्तः। स्वल्पार्थे चौप्रत्ययस्तमादित्वात् ततः स्वार्थे कः।

(च) परीति। रविविम्बे सूर्य्यमण्डले, परिणते चरमावस्थापन्ने अस्तोन्मुखे सतीत्यर्थः, तथा वासरे दिवसे, विम्बवत् विम्बफलवत् अरुणो रक्तवर्णः आतपविसरः सूर्य्यालोकसमूहो यस्मिन् तादृशे सति। अत्र लुप्तोपमाच्छेकानुप्रासयोः संसृष्टिः।

(क) निःशाखेति। निःशाखीकृता अरण्यवासिभिः शाखाशून्यीकृताः कदम्बशाल्मलीपलाशाः स्वनाम-प्रसिद्धा वृक्षा एव बहुलाः प्रचुरा येषु तैः, तथा शिखरेषु उपरिभागेषु शेषा अवशिष्टा एके एकैके ये पल्लवास्तै-र्विड़म्बितानि अनुकृतानि आतपत्राणि छत्राणि यैस्तैः, पादपैरसंख्यैर्वृक्षैः। विरलीकृत इति वक्ष्यमाणस्य कर्तृपदमेकमेतत्। अत्रार्थोपमालङ्कारः। किञ्च, ऊर्द्धस्थिता दण्डायमानीभूताः प्ररोहा नवाङ्कुरा येषां ते तथाभूता ये स्थूलाः स्थाणवः निःशाखास्तरुस्तम्भास्तेषां मूलग्रन्थिभिर्मूलदेशैर्जटिलानि व्याप्तानि तैः। हरिताल धातुविशेषस्तद्वत् कपिलैः पिङ्गलवर्णैः पक्ववेणुविटपपटलैः परिणतवंशशाखासमूहैः रचिता विहिता वृतिर्वेष्टनं येषां तैः। मृगेभ्यः पशुभ्यः पशुकर्तृकप्रियङ्गुभक्षणादित्यर्थः भयेन कृतास्तृण-पुरुषास्तृणनिर्म्मितपुरुषाकृतिपदार्था

করিয়াছিল; পুঞ্জীভূত লতাসমূহে পুলিনভাগ ব্যাপ্ত করিয়াছিল আর সেই সকল নদীতে বালির ভিতরে পথিকগণ, ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র কূপ খনন করিয়াছিল, তাহাতে কর্দ্দমাক্ত অল্প অল্প জল পাওয়া যাইত এবং সেই বনের ভিতরে নিবিড়-তরুলতাময় স্থানে ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র গ্রাম ছিল; (হ) বন-কুকুড়া ও কুকুরের শব্দে সেই গ্রামগুলিকে অনুমান করা হইতেছিল। (ক্ষ) (ম চিহ্নিত স্তম্ভের প্রথমে, এই অংশের অনুবাদ দ্রষ্টব্য)। (ক) সেই বনের বহুতর ক্ষেত্রে অসংখ্য বৃক্ষ ছিল; তাহার মধ্যে শাখাবিহীন কদম্ব, শাল্মলী ও পলাশবৃক্ষই বহুসংখ্যক ছিল, উপরিভাগে এক একটি পল্লবমাত্র থাকায় সেই বৃক্ষগুলি ছত্রের অনুকরণ করিতেছিল; বৃহৎ বৃহৎ স্থাণুর (মুড়ো গাছের) মূলে সেই ক্ষেত্রগুলি ব্যাপ্ত ছিল এবং সেই স্থাণুগুলির উপরে নূতন নূতন অঙ্কুর উঠিয়াছিল; হরিতালের ন্যায় পিঙ্গলবর্ণ পাকা বাঁশের কঞ্চী দিয়া সেই ক্ষেত্রগুলির বেড়া

(१) कुक्कुटकुल…। (२) परिणतरविविम्बे। (३) ऊर्द्धीकृत…। (४)…प्ररोहस्थ…।

विटपप-टल-रचित-(१) वृतिभिर्मृग-भय-कृत-तृण-पुरुषकैर्विपाकपाण्डुभिः फलितैः (२) प्रियङ्गु-प्रायैरटवीक्षेत्रैर्विरलीकृते वनप्रदेशे (३) चिरप्ररूढस्य रक्तचन्दनतरोरुपरि बद्धम्, (क) सरस-पिशित-पिण्ड-निभैरलक्तकैः, अभिनव-शोणितारुणेन रक्तचन्दनरसेन चार्द्रम्, (४) (ख) जिह्वा-(५) लता-लोहिनीभी रक्तपताकाभिः, केशकलापकान्तिना च कृष्णचामरावचूलेन प्रत्यग्रविशसितानां जीवानामिवावयवैरुपरचित-दण्ड-मण्डनम्, (ग) परिणद्ध-(६) वराटक-घटित-

शेषु तैः। पशवो हि तादृशान् पुरुषान् विलोक्य भयान्नोपसर्पन्तीति प्रसिद्धम्। विपाकेन विशेषेण पक्वतया पाण्डुभिः पाण्डुवर्णैः। तथा फलितैः सञ्जातफलैः। प्रियङ्गवः श्यामाः प्रायेण बाहुल्येन येषु तैः। अटवीक्षेत्रैरारण्यशस्यक्षेत्रैः, विरलीकृते सङ्कोचं नीते, वनप्रदेशे वनस्यैकदेशे, चिरप्ररूढस्य बहुपूर्वमुत्पन्नस्य अतीवप्राचीनस्य, रक्तचन्दनतरोरुपरि बद्धं रज्जुभिः संयतम्। रक्तध्वजमिति वक्ष्यमाणस्य विशेषणम्। एवमन्यदपि द्वितीयान्तपदं ज्ञेयम्।

(ख) सरसेति। सरसानि आर्द्राणि रक्तानि यानि पिशितपिण्डानि मांसखण्डानि तन्निभैस्तत्तुल्यैरलक्तकैः, अभिनवं सद्योनिःसृतं यत् शोणितं रक्तं तद्वदरुणेन, रक्तचन्दनेन च आर्द्रं क्लिन्नम्। अत्रार्थोपमालुप्तोपमयोर्मिथो निरपेक्षतया संसृष्टिः।

(ग) जिह्वेति। जिह्वा रसना लता इव लम्बमानत्वात्तद्वत् लोहिनीभिः रक्तवर्णाभिः, रक्तपताकाभिः लोहितवैजयन्तीभिः। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः, तथा जिह्वालतालोहिनीभिः पताकाभिरित्यनेनैव वक्तव्यार्थनिर्वाहे रक्तपदमधिकमित्यधिकपदत्वदोषः, स च रक्तपदपरित्यागेनैव परिहरणीयः। केशकलापवत् कान्तिर्यस्य तेन, कृष्णचामरमेव अवचूलं अधोमुखी चूडा तेन च। अतएव प्रत्यग्रविशसितानां सद्योनिहतानां जीवानां अवयवैरङ्गैः उपरचितं कृतं दण्डे दण्डांशे मण्डनं भूषणं यस्य तमिव। पताकानां जिह्वातुल्यत्वात् कृष्णचामरस्य च केशसमानत्वादिति भावः। अत्र मण्डनरचनोत्प्रेक्षणात् क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

দিয়াছিল; পশুগণ শস্য ভক্ষণ করিবে—এই ভয়ে তৃণদ্বারা বহুতর কৃত্রিম পুরুষ নির্ম্মাণ করিয়া রাখিয়াছিল এবং পক্কতানিবন্ধন পাণ্ডুবর্ণ ও ফলসমন্বিত প্রিয়ঙ্গুলতাই সেই ক্ষেত্রগুলিতে বহুতর ছিল; চতুর্দ্দিকে এই জাতীয় ক্ষেত্রসমূহ থাকায় সেই বনের কোন একটি স্থান সঙ্কুচিত ছিল, সেই স্থানে অতি পুরাতন এক রক্তচন্দন গাছের উপরে সেই ধ্বজটা বাঁধা ছিল। (খ) রক্তাক্ত মাংসখণ্ডের ন্যায় গাঢ় আলতার রসে ও সদ্যোনিঃসৃত রক্তের ন্যায় অরুণবর্ণ রক্তচন্দনে সেই ধ্বজটা আর্দ্র ছিল। (গ) সেই ধ্বজটার উপরে লতার তুল্য লম্বমান জিহ্বার ন্যায় রক্তবর্ণ কতকগুলি রক্তপতাকা এবং কেশকলাপের ন্যায় সৌন্দর্য্যসম্পন্ন ও অধোমুখ কৃষ্ণবর্ণ কতকগুলি চামর বদ্ধ ছিল; তাহাতে বোধ হইতেছিল যে, সদ্যোনিহত প্রাণিগণের অঙ্গ দ্বারাই যেন সেই ধ্বজটার অলঙ্কার করা হইয়াছিল।

(१)...विटपिपटलरचित, विटपरचित···। (२) फलिनैः। (३) विरलीकृतवनप्रदेशे।
(४) अभिनवशोणितारुणेन चार्द्रम्। (५) रसेन आर्द्रं जिह्वा...। (६) परिणत···।

वुद्‌दार्द्धचन्द्र-खण्ड-खचितं, सुत-महिष-रक्षणावतीर्ण-दिनकरावतारित-शशिनेव विराजितशिखरम्, (घ) दोलायित-शृङ्ग-सङ्गि-लोह-शृङ्खलावलम्बमान-घर्घररव-घोर-घण्टया च घटित-केसरि-सटा-रुचिर-चामरया काञ्चनत्रिशूलिकया लिखित-नभस्तलम्, (१) (ङ) इतस्ततः पथिक-पुरुषोपहार-मार्गमिवावलोकयन्तम् (२) महान्तं रक्तध्वजं दूरत एव ददर्श। (च)

तदभिमुखश्च कञ्चिदध्वानं (३) गत्वा, (छ) केतकी-सूचि-षण्ड-पाण्डुरेण

(घ) परीति। परिणद्धा दण्डायदेशे समन्ताद्‌बद्धा ये वराटकाः कपर्द्दकास्तैर्घटितं निर्म्मितं यत् वुद्‌वुदवदर्द्धचन्द्रखण्डं वुद्‌वुदसमानपीनमध्यकमर्द्धचन्द्राकारभूषणमित्यर्थः तेन खचितं उपरिचिह्नितम्, अतएव सुतस्य निजपुत्रस्य यमस्य यो महिषस्तस्य रक्षणाय अवतीर्णो यो दिनकरः सूर्य्यस्तेन अवतारित आकाशादवरोहितो यः शशी चन्द्रस्तेनेव विराजितं शोभितं शिखरमुपरिभागो यस्य तम्। वराटकघटितार्द्ध-चन्द्राकाराभरणस्य प्रकृतचन्द्रवद्दृश्यमानत्वादिति भावः। अत्र वाक्यार्थहेतुकं काव्यलिङ्गं, तादृशार्द्धचन्द्रे प्रकृतचन्द्रत्वोत्प्रेक्षणात् द्रव्योत्प्रेक्षा चानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। अत्र हि चण्डिकायतने प्रत्यहमेव बहुशः प्राणिप्रलयः सम्पद्यन्ते, तेन च महिषवाहनो यमः समागत एव, तत्र च प्राणिनां प्राणहरणाय यमस्य व्यग्रतया तदीयमहिषरक्षणाय पुत्रस्नेहात् सूर्य्योऽप्यवतीर्णः, अवतरता च तेन बन्धुभूतश्चन्द्रोऽप्यवतारित इति कवेराशयः।

(ङ) दोलायितेति। किञ्च, दोलायितं घण्टान्दोलनात् दोलावच्चलितं यत् त्रिशूलिकाया एव शृङ्गं तत्सङ्गिनी या लोहशृङ्खला तत्र अवलम्बमाना बद्धतया स्थिता घर्घररवा घोरा च घण्टा यस्यां तया, तथा घटितं संयोजितं केसरिसटावत् सिंहजटावत् चामरं यत्र तया, काञ्चनत्रिशूलिकया स्वर्णनिर्म्मितत्रिशाल-त्रिशूलेन, लिखितं संस्पृष्टं नभस्तलं येन तम्। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः।

(च) इत इति। पथिकपुरुषा एवोपहारा बलयस्तेषां मार्गमागमनपथमवलोकयन्तमिव स्थितम्, अस्य रक्तत्वादर्द्धचन्द्राकारकपर्द्दकाभरणस्योन्मीलितनयनरूपत्वाच्चेति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(छ) तदिति। किञ्च। चन्द्रापीडः तस्य रक्तध्वजस्य अभिमुखः सन्, किञ्चित् कियन्तं अध्वानं

(घ) বুদ্‌বুদের স্থায় স্থূলমধ্য ও অর্দ্ধচন্দ্রের ন্যায় বক্রভাবে সকল দিকে কপর্দ্দক বন্ধন করিয়া সেই ধ্বজটার উপরিভাগ চিহ্নিত করিয়াছিল; সুতরাং বোধ হইতেছিল যে,—সূর্য্য, নিজপুত্র যমের মহিষ রক্ষা করিবার জন্য অবতীর্ণ হইয়া, চন্দ্রকেও অবতীর্ণ করিয়াছিলেন; সেই চন্দ্র দ্বারাই যেন ধ্বজটার উপরিভাগ শোভা পাইতেছিল। (ঙ) ধ্বজের উপরিভাগে স্বর্ণ-নির্ম্মিত বৃহৎ একটা ত্রিশূল,—তাহারই চঞ্চল শৃঙ্গে এক ছড়া লৌহশৃঙ্খল সংলগ্ন, তাহাতে গম্ভীরধ্বনিকারী ও ভয়ঙ্কর একটা ঘণ্টা ঝুলান ছিল এবং সেই ত্রিশূলটায় সিংহের জটার স্থায় সুন্দর একটা চামর বাঁধা ছিল; সেই ধ্বজটা এইরূপ ত্রিশূলদ্বারা আকাশ স্পর্শ করিয়াছিল (চ) এবং সেই ধ্বজটা যেন বলির উপযুক্ত পথিকগণের আগমনের পথ দেখিতেছিল।

(ছ) চন্দ্রাপীড় সেই ধ্বজের অভিমুখ হইয়া কিছু পথ অতিক্রম করিয়া একখানি চণ্ডীর

(१)···नभःस्थलम्। (२) ·आलोकयन्तं। (३) किञ्चिदध्वानं।

वन-द्विरद-दन्त-कपाटेन (१) परिवृताम्, (ज) लोहतोरणेन च रक्त-(२) चामरपरिकरां कालायस-दर्पण-मण्डल-मालां शवर-मुख-मालामिव कपिल-केशभीषणां बिभ्राणेन सनाथीकृतद्वारदेशाम्, (झ) अभिमुखप्रतिष्ठितेन च विनिहितरक्तचन्दनहस्तकतया रुधिरारुण-यम-करतलास्फालितेनेव शोणित-लव-(३) लोभ-लोल-शिवा-लिह्यमान-लोहित-लोचनेन लोह-महिषेणाध्यासिताञ्जनशिला-

पन्थानं गत्वा चण्डिकामपश्यदिति बहुदूरवर्त्तिन्या क्रिययान्वयः। अत्र स्त्रियां द्वितीयैकवचनान्तपदानि चण्डिकामिति वक्ष्यमाणस्य विशेषणानि।

(ज) केतकीति। केतक्याः पुष्पस्य सूचिवच्छवत् अग्रसमूहवत् पाण्डुरेण शुभ्रेण, वनद्विरददन्तस्य वन्यहस्तिनो दन्तस्य कपाटेन, परिवृतामावृताम्। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः।

(झ) लोहेति। किञ्च, कपिलैः पिङ्गलवर्णैः केशैर्भीषणा तां, शवराणां व्याधानां मुखमालां वदनश्रेणीमिव, रक्ता लोहितवर्णा चामरावलिः परिकरः परिच्छदो यस्यास्तां, कालं कृष्णं अयो लौहमिति कालायसं "अनम् अश्मन् अयस् सरम् जातिसंज्ञयो"रिति टजादित्वादत्, तस्य यानि दर्पणमण्डलानि, दर्पणाकारवर्त्तुलखण्डानि तेषां मालां श्रेणीं बिभ्राणेन धारयता, लोहतोरणेन लौहनिर्म्मितबहिर्द्वारेण, सनाथीकृतः सहितो द्वारदेशो यस्यास्तामिति चण्डिकामित्यस्य विशेषणम्। अत्र शवरमुखानि कृष्णवर्णानि तत्केशाश्च पिङ्गलवर्णाः, सुतरां शवरमुखमालया सह कालायसदर्पणमण्डलमालायाः तदीयकपिलकेशकलापेन सह रक्तचामरावलेः साद्दश्यमित्युपमालङ्कारः। तथा मालाशब्दस्य द्विरुपादानात् पुनरुक्ततादोषः, स च शवरमुखश्रेणीमिवेति पाठेन समाधेयः।

(ञ) अभीति। किञ्च, विनिहितास्तत्र्यजनैरर्पिताः रक्तचन्दनहस्ता रक्तचन्दनाक्तहस्तचिह्नानि यस्मिन् स तथा तस्य भावस्तया तथोक्तया हेतुना, रुधिरेण अरुणं यद्यमस्य करतलं तेन आस्फालितयाऽलनाय सन्ताडितस्तेनेव, रक्तचन्दनाक्तहस्तचिह्नानां ताड़नकाललग्न-रुधिराक्त-यमहस्तचिह्नवद्दृश्यमानत्वादिति भावः। तथा शोणितलवानां रक्तविन्दूनां लोभेन रक्तचन्दनचिह्नेषु शोणितलवभ्रमात् तत्पानलोभेनेत्यर्थः, लोलाश्चलाः याः शिवाः शृगालास्ताभिर्लिह्यमाने रसनया आस्वाद्यमाने लोहिते रक्तवर्णे लोचने चक्षुषी यस्य तेन। अभिमुखप्रतिष्ठितेन देव्याः सम्मुखस्थापितेन, लोहमहिषेण, अध्यासिता अधिष्ठिता अञ्जनशिलावेदिका कज्जलवत्कृष्णवर्णपाषाणनिर्म्मितवेदिका यस्यास्ताम्। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारो वृत्त्यनुप्रासश्चानयोः संसृष्टिः। तथा रक्तचन्दनचिह्नेषु शोणितलवभ्रमप्रतीतेर्भ्रान्तिमानलङ्कारो व्यज्यते।

মূর্ত্তি দেখিতে পাইলেন। (জ) কেতকীপুষ্পের অগ্রভাগের ন্যায় শুভ্রবর্ণ ও বন্য হস্তীর দন্তে নির্ম্মিত কপাটদ্বারা সেই চণ্ডীর মন্দির আবদ্ধ ছিল। (ঝ) দ্বারদেশে লৌহময় তোরণ ছিল, তাহাতে ব্যাধগণের পিঙ্গলবর্ণ কেশকলাপে ভয়ঙ্কর মুখশ্রেণীর ন্যায়, রক্তবর্ণ চামরশ্রেণীতে পরিবেষ্টিত ও দর্পণের ন্যায় বর্ত্তুলাকার কতকগুলি কৃষ্ণবর্ণ লৌহখণ্ড সংযোজিত ছিল। (ঞ) দেবীর সম্মুখে কজ্জলতুল্য-কৃষ্ণবর্ণ-প্রস্তর-নির্ম্মিত একটা বেদি ছিল, তাহার উপরে লৌহনির্ম্মিত একটা মহিষ ছিল; তাহার গাত্রে হস্তাকৃতি রক্তচন্দনের চিহ্ন সকল দেওয়া ছিল;

(১) কবাটেন। (২) নবারক্ত...। (৩)...নব...।

वेदिकाम्, (ञ) क्वचिद्रक्तोत्पलैः शबरनिपातितानां वनमहिषाणामिव लोचनैः क्वचिदगस्तिकुसुमकुड्मलैः (१) केसरिणामिव करजैः क्वचित् किंशुककुसुमकुड्मलैः शार्दूलानामिव सरुधिरैर्नखरैः कृतपुण्यपुष्पप्रकराम्, (२) (ट) अन्यत्राङ्कुरितामिव कुटिल-हरिण-विषाण-कोटि-कूटैः पल्लवितामिव सरस-जिह्वाच्छेदशतैः कुसुमितामिव रक्तनयनसहस्रैः फलितामिव मुण्डमण्डलैरुपहारहिंसां

(ट) क्वचिदिति। क्वचित् शबरनिपातितानां व्याधव्यापादितानां वनमहिषाणां लोचनैरिव रक्तोत्पलैः, रक्तोत्पलानां महिषलोचनसमानाकृतेरिति भावः, क्वचित् केसरिणां सिंहानां करजैर्नखैरिव अगस्तिकुसुमकुड्मलैः, वकपुष्पमुकुलैः वकपुष्पमुकुलानां सिंहनखतुल्याकृतिमत्त्वादिति भावः, क्वचिच्च शार्दूलानां व्याघ्राणां सरुधिरैर्नखरैरिव किंशुककुसुमकुड्मलैः पलाशपुष्पमुकुलैः, किंशुककुसुमकुड्मलानामपि व्याघ्रनखतुल्याकृतेरिति भावः, तत्कुड्मलानां रक्तत्वात् साम्यप्रतिपादनाय सरुधिरैरिति विशेषणम्, कृतः पुण्यः पवित्रः पुष्पप्रकरः कुसुमोपहारो यस्यास्ताम्। अत तिसृणामेव श्रौतीपमानां मिथोनिरपेक्षतया संसृष्टिः। तथा कुसुमकुड्मलैरित्यस्य द्विरुपादानात् पुनरुक्ततादोषः, स चैकत पुष्पमुकुलैरिति पाठेन समाधेयः। हिंसाप्रधानायतनत्वात् हिंसासूचकोपमानोपादानमिति बोध्यम्।

(ठ) अन्यत्रेति। अन्यत्र अन्यस्मिन्नंशे, कुटिलानि वक्राणि यानि हरिणानां विषाणानि शृङ्गाणि तेषां कोटयः अग्रदेशास्तेषां कूटैः राशिभिः हरिणहत्यापूर्वकस्थापितैरित्यर्थः, अङ्कुरितां सञ्जाताङ्कुरामिव, तद्विषाणकोटिकूटानामङ्कुरवद्दृश्यमानत्वादिति भावः। सरसा आर्द्रा रक्ताक्ता ये जिह्वाच्छेदा रसनाखण्डानि तेषां शतैः समूहैः पल्लवितां सञ्जातपल्लवामिव, जिह्वाखण्डानां पल्लवतुल्यत्वादित्याशयः। रक्तनयनसहस्रैः रक्तवर्णलोचनसमूहैः कुसुमितां सञ्जातपुष्पामिव, रक्तलोचनानामपि कुसुमसमानत्वादित्यभिप्रायः। मुण्डमण्डलैर्मस्तकनिकरैः फलितां सञ्जातफलामिव, तेषां फलतुल्याकृतेरिति भावः। उपहाराणां उपायनीभूतानां प्राणिणां हिंसां दर्शयन्तीं प्रकटयन्तीम्; हिंसापूर्वकं विषाणकोटिकूटादीनां विकीर्णत्वादिति भावः। अत्राङ्कुरादीनां जननोत्प्रेक्षणात् चतस्र एव क्रियोत्प्रेक्षास्तासाञ्चाङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। तथा सर्वा एवाभेदे तृतीयास्तथा च विषाणकोटिकूटादिरूपाङ्कुरादिप्रतीतेरुपहारहिंसाया लतारूपत्वप्रतीतेश्च साङ्गरूपकालङ्कारो व्यज्यते।

তাহাতে বোধ হইতেছিল যে,—যম যেন তাহাকে চালাইবার জন্য রক্তাক্ত হস্তে তাড়ন করিয়াছিলেন; আর রক্তবিন্দুর লোভে চঞ্চল শৃগালগণ, তাহার নয়নযুগল লেহন করিতেছিল। (ট) কোন স্থানে ব্যাধ-নিহত বন্য-মহিষের ন্যায় রক্তোৎপল, কোন স্থানে সিংহনখের ন্যায় বকপুষ্পের কলিকা এবং কোন স্থানে রক্তাক্ত ব্যাঘ্র-নখের ন্যায় পলাশপুষ্পের কলিকা বিক্ষেপ করিয়া পবিত্র পুষ্পবিক্ষেপের কার্য্য সম্পাদন করিয়াছিল। (ঠ) অন্য কোন স্থানে দেবী, উপহারভাবে প্রদত্ত পশুদিগের হিংসা দেখাইতেছিলেন; হরিণগণের বক্র শৃঙ্গাগ্ররাশিতে সেই হিংসার যেন অঙ্কুর জন্মিয়াছিল, রক্তাক্ত জিহ্বাখণ্ডসমূহে তাহার যেন পল্লব হইয়াছিল, রক্তবর্ণ নয়নপুঞ্জে যেন পুষ্প উৎপন্ন

(१) अगस्तिकुड्मलैः। (२)...प्रकरोपहाराम्।

दर्शयन्तीम्, (ठ) शाखान्तराल-निरन्तर-निलीन-(१) रक्त-कुक्कुट-कुलैः स्वभयात् (२) अकाल-दर्शित-कुसुम-स्तवकैरिव रक्ताशोकविटपैर्विभूषिताङ्गनाम्, (ड) बलि-रुधिर-पान-तृष्णया समागतैश्च वेतालैरिव तालैर्दीयमान-फलमुण्डोपहाराम्, (ढ) शङ्काज्वर-कम्पितैरिव कदलिकावनैर्भयोत्कण्ठितैरिव श्रीफलतरुषण्डैस्त्रासोर्द्ध्वकेशैरिव खर्जूरवनैः समन्ताद् गहनीकृताम्, (ण) विदलित-वन-करि-कुम्भ-विगलित-मुक्ताफलानि रुधिरारुणानि बलि-सिक्थ-(३)

(ड) शाखेति। स्वभयात् कुक्कुरभयात् शाखान्तरालेषु निरन्तरं निलीनानि घनं निभृतभावेनावस्थितानि रक्तकुक्कुटकुलानि येषु तैः, अतएव अकाले दर्शिताः कुसुमस्तवका यैस्तैरिव स्थितैः, रक्तकुक्कुटकुलानामिव कुसुमस्तवकतुल्यत्वादिति भावः, रक्ताशोकानां विटपैर्विशालशाखाभिः विभूषितं अङ्गनं चत्वरं यस्यास्ताम्। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ढ) बलीति। किञ्च, बलीनामुपहारीभूतप्राणिनां रुधिरपानतृष्णया समागतैर्वेतालैर्भूतविशेषैरिव तालैस्तालवृक्षैः, दीयमानाः फलान्येव मुण्डानि तेषामुपहारा यस्यै ताम्, तालफलानां मुण्डसमानाकृतेरिति भावः। अत्र जात्युत्प्रेक्षानिरङ्गकेवलरूपकयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ण) शङ्केति। शङ्काज्वरेण पशुवधदर्शनात् स्ववधातङ्कतापेन कम्पितैरिव, वायुना कम्पनादिति भावः, कदलिकावनैः रम्भाकाननैः। भयोत्कण्ठितैरिव भयोत्कण्ठाजनितरोमाञ्चतुल्यकण्टकराशिदर्शनादित्याशयः, श्रीफलतरुषण्डैर्बिल्ववृक्षसमूहैः। तथा त्रासोर्द्ध्वकेशैरिव, ऊर्द्ध्वपत्रनिकराणां भयेन ऊर्द्ध्वीभूतकेशवद्दृश्यमानत्वादित्यभिप्रायः, खर्जूरवनैः, समन्ताद्गहनीकृतां सर्वतो निविडीकृताम्। अत्र प्रथमा द्वितीया च क्रियोत्प्रेक्षा तृतीया तु गुणोत्प्रेक्षा, आसाञ्च मिथोनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

(त) विदलितेति। बलिसिक्थेषु पूजोपहारीभूतान्नेषु रक्तान्नेष्वित्यर्थः लुब्धा लोभवन्तः, मुग्धा मुक्ताफलेषु बलिसिक्थभ्रमान्मूढा ये कृकवाकवः कुक्कुटास्तैरादौ ग्रस्तानि बलिसिक्थभ्रमादेव कवलितानि अन-

হইয়াছিল এবং মুণ্ড-সমূহে যেন ফল জন্মিয়াছিল। (ড) কতকগুলি রক্তবর্ণ অশোকবৃক্ষ দেবীর প্রাঙ্গণভূমি অলঙ্কৃত করিয়া রহিয়াছিল; কুকুরের ভয়ে বহুতর রক্তবর্ণ বনকুকুড়া সেই অশোকবৃক্ষের ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র শাখার ভিতরে ঘনভাবে লুকাইয়াছিল, তাহাতে প্রতীতি হইতেছিল যে,—সেই অশোকবৃক্ষের বৃহৎ বৃহৎ শাখাগুলি যেন অকালে পুষ্পস্তবক সকল প্রকাশ করিয়াছে। (ঢ) বলির রক্ত পান করিবার ইচ্ছায় সমাগত বেতালগণের ন্যায় তালবৃক্ষ-সমূহ, ফলস্বরূপ মুণ্ড সকল উপহার দিতেছিল। (ণ) কদলীবন যেন আতঙ্কে কম্পিত হইতেছিল, বিল্ববৃক্ষগুলি যেন ভয়ে উৎকণ্ঠিত হইয়াছিল, আর ভয়বশতঃ খর্জ্জুরবনের কেশগুলি যেন উচু হইয়াছিল—এই অবস্থায় সেই বনসমূহ, দেবীর প্রাঙ্গণভূমিকে ব্যাপ্ত করিয়া রহিয়াছিল। (ত) সিংহবিদারিত বন্য হস্তীর কুম্ভ হইতে রক্তাক্ত মুক্তাসমূহ নির্গত হইয়া পড়িয়া রহিয়াছিল, সেগুলিকে পূজার অন্ন মনে করিয়া লোভী বনকুকুড়াগুলি, প্রথমে গ্রাস করিয়া পরে ছাড়িয়া

(१) शाखान्तरालनिलीन...। (२)...कुक्कुटकुलैर्भयात्...।
(३) . वनकरिकुम्भविदलितमुक्ताफलानि, विदलितवनकरिकुम्भविगलितरक्तमुक्ताफलानि नवरुधिरारुणबलि...।]

लुब्ध-मुग्ध-ध्वाङ्क्षवाङ्क्ष-ग्रस्तमुक्तानि विकिरद्भिरम्बिकापरिग्रहदुर्ललितैः क्रीडद्भिः केशरि-किशोरकैरशून्योद्देशाम्, (त) प्रभूत-रुधिर-दर्शनोद्भूत-मूर्च्छा-पतितेनेव प्रतिबिम्बितेनास्तताम्रेण सवित्रा ताम्रतरीकृतैः (१) क्षतज-जल-प्रवाहैः (२) पिच्छिलीकृताजिराम्, (थ) अवलम्बमान-दीप-धूप-(३) रक्तांशुकेन ग्रथित-शिखि-गल-वलयावलिना पिष्ट-पिण्ड-पाण्डुरित-(४)-घन-घण्टा-मालभारिणा (५) त्रापुष-सिंह-मुख-मध्य-स्थित-स्थूल-लोह-कण्टकं दत्त-(६) दन्त-दण्डार्गलं लसत्-

न्तरं मुक्तानि काठिन्यप्रतीतेः परित्यक्तानि, रुधिरारुणानि रक्ताक्ततया अरुणवर्णानि, विदलितेभ्यो विदारितेभ्यः करिकुम्भेभ्यः विगलितानि यानि मुक्ताफलानि मौक्तिकानि तानि, विकिरद्भिः शोणिताक्ततया लोभादगृहीत्वा मांसाभावात् पुनर्विक्षिपद्भिरित्यर्थः, अम्बिकायाश्चण्डिकायाः परिग्रहेण वाहनसजातीयतया ग्रहणेन दुर्ललितैः हिंसनाभावाद्दुर्दान्तीभूतैः, क्रीडद्भिः खेलद्भिः, केशरिकिशोरकैः सिंहशावकैः अशून्यः अविरहित उद्देशः स्थानं यस्यास्ताम्। अत्र ध्वाङ्क्षवाङ्क्षूणां मुक्ताफलेषु बलिसिक्थभ्रमाद्भ्रान्तिमानलङ्कारः केशरिकिशोरकैरिति छेकानुप्रासेन संसृज्यते।

(थ) प्रभूतेति। प्रभूतरुधिरदर्शनेन उद्भूता उत्पन्ना या मूर्च्छा तया पतितेनेव, प्रतिबिम्बितेन क्षतजजलप्रवाहेष्वेव संक्रान्तमूर्त्तिना, अस्ते अस्तसमये ताम्रस्ताम्रवर्णस्तेन, सवित्रा सूर्य्येण, ताम्रतरीकृतैर्विशेषेण ताम्रवर्णीकृतैः, क्षतजानि रुधिराण्येव जलानि क्षतजानि जलानीवेति वा तेषां प्रवाहैः, पिच्छिलीकृतं क्लिन्नीकृतं अजिरं चत्वरं यस्यास्ताम्। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः, तथा क्षतजजलेति रूपकोपमयोः सन्देहसङ्करः, तयोश्च परस्परनैरपेक्ष्यात् संसृष्टिः। तथात्र रुधिरस्य जलत्वेन रूपणे जलेनौपम्ये वा न कश्चिद्विशेष इत्यपुष्टार्थतादोषः, स च जलपदपरित्यागेनैव समाधेयः।

(द) अवेति। अवलम्बमानानि अवतिष्ठमानानि दीपधूपरक्तांशुकानि यस्मिन् तेन, ग्रथिता गुम्फिता शिखिगलवलयानां मयूरकण्ठमण्डलानां आवलिर्माला यत्र तेन, पिष्टपिण्डेन तण्डुलचूर्णपिण्डेन पाण्डुरिताः शुभ्रवर्णीकृताः घना निरन्तराः या घण्टास्तासां मालां बिभर्त्तीति तेन, "थाकारी स्त्रीकृती ह्रस्वी" इति ह्रस्वः।

দিয়াছিল, এদিকে দেবীর পক্ষভুক্ত বলিয়া হিংসা না করায় দুর্দ্দান্ত সিংহশাবকগণ সেই মুক্তাগুলিকে নিক্ষেপ করিয়া খেলা করতঃ দেবীর প্রাঙ্গণে বিচরণ করিতেছিল। (থ) জলের ন্যায় রক্তের প্রবাহ দেবীর প্রাঙ্গণকে পিচ্ছল করিয়াছিল; অস্তকালীন তাম্রবর্ণ সূর্য্য সেই রক্তের প্রবাহে প্রতিবিম্বিত হইয়া তাহাকে আরও তাম্রবর্ণ করিয়াছিলেন, তাহাতে বোধ হইতেছিল যে, প্রচুর রক্ত দর্শনে মূর্চ্ছা উপস্থিত হওয়ায়ই যেন সূর্য্য পড়িয়া গিয়াছিলেন। (দ) অভ্যন্তরস্থ গৃহের দ্বারদেশ দ্বারা দেবী শোভা পাইতেছিলেন, সেই দ্বারদেশে দুই পাট কপাট ছিল; তাহাতে ধূপ, দীপ ও রক্তবস্ত্র ঝুলান ছিল, ময়ূরের কণ্ঠমালা গাঁথা ছিল, তণ্ডুলচূর্ণে শুভ্রবর্ণ ঘন ঘন ঘণ্টার মালা দুলিতেছিল, সীসার একটা সিংহ

(१) अम्बरीकृतैः। (२) क्षतजलप्रवाहैः। (३)…दीपधूम…। (४) पिष्टपाण्डुरित…।
(५)…मालाभारिणा। (६)…कण्टकदत्त…।

पीत-(१) नील-लोहित-दर्पण-स्फुरित-बुद्बुदमालं कपाट पट्टद्वयं (२) दधानेन गर्भगृहद्वारदेशेन दीप्यमानाम्, (द) अन्तःपिण्डिकापीठपातिभिश्च सर्वपशु-जीवितैरिव शरणमुपागतैरलक्तक-रस-रक्त-पटैरविरहित-चरण-मूलाम्, (ध) पतित-कृष्णचामरप्रतिबिम्बानाञ्च शिरश्छेदलग्न-केशजालकानामिव परशुपट्टिशप्रभृतीनां जीवविशसनशस्त्राणां प्रभाभिर्बहलान्धकारतया पातालगृहवासिनीं (३)

त्रपुषः सीसकस्यायमिति त्रापुषः सीसकनिर्म्मितो यः सिंहस्य मुखमध्ये स्थितं स्थूलं लोहकण्टकं यस्मिन् तत्, दत्तं दन्तदण्डो हस्तिदन्तदण्ड एव अर्गलं यस्मिन् तत्, तथा लसत्सु सम्मुखे दीप्यमानेषु पीतेषु नीलेषु लोहितेषु च दर्पणेषु स्फुरिता प्रतिबिम्बिता बुद्बुदमाला बुद्बुदतुल्यवर्त्तुललौहशङ्कुश्रेणी यस्मिन् तत् तादृशं कपाटपट्टद्वयं कपाटफलकयुगलं दधानेन, गर्भगृहस्य अन्तर्गृहस्य द्वारदेशेन, दीप्यमानां शोभमानाम्।

(ध) अन्तरिति। किञ्च, अन्तर्म्मध्ये या पिण्डिका वेदिः तस्याः यत्पीठं तत्र पतन्तीति तैः, शरणमुपागतैः सर्वेषां पशूनां जीवितैरिव, तेषामपि रक्तसम्बन्धेन रक्तत्वसम्भवादिति भावः, अलक्तकरसेन रक्ता ये पटास्तैः, अविरहितं चरणयोर्मूलं समीपं यस्यास्ताम्। अत्र काव्योत्प्रेक्षालङ्कारः।

(न) पतितेति। किञ्च, पतितानि कृष्णचामराणां प्रतिबिम्बानि येषु तेषां, अतएव शिरश्छेदे सति लग्नं केशजालं येषु तेषामिव दृश्यमानानां, कृष्णचामरप्रतिबिम्बानामेव केशजालवद्दृश्यमानत्वादिति भावः, परशुः प्रसिद्धः, पट्टिशस्तु "पट्टिशो लोहदण्डो यस्तीक्ष्णधारः क्षुरोपमः।" इति वैजयन्त्युक्तः, तत्प्रभृतीनां जीवविशसनशस्त्राणां प्राणिहिंसाशस्त्राणां, प्रभाभिर्बहुल उत्पादितः, बहलः प्रचुरः अन्धकारो यत्र गृहे तस्य भावस्तया हेतुना, पातालगृहवासिनीमिवोपलक्ष्यमाणाम्। अत्र केशजाललग्नक्रियोत्प्रेक्षणात् प्रथमा पातालगृहवासोत्प्रेक्षणाद्द्वितीया च क्रियोत्प्रेक्षैव, तयोश्च परस्परनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

ছিল, তাহার মুখের ভিতর মোটা একটা লোহার পেরেক ছিল, হস্তিদন্তের অর্গল দেওয়া ছিল, এবং সেই কপাটে বুদ্বুদের ন্যায় বর্ত্তুলাকার কতকগুলি পেরেক মারা ছিল, সম্মুখবর্ত্তী পীতবর্ণ, নীলবর্ণ ও রক্তবর্ণ দর্পণে সেই পেরেকগুলির প্রতিবিম্ব পড়িয়াছিল। (ধ) ঘরের ভিতরে দেবীর চরণের নিকটে একটা বেদি, তাহার উপরে একখানা পীড়ি, তাহার উপরে আবার আলতার রসে রঞ্জিত একখানা কাপড় পাতা ছিল; তাহাতে বোধ হইতেছিল যে, সমস্ত পশু-দিগের জীবন আসিয়া যেন শরণাগত হইয়া রহিয়াছে। (ন) ঘরের ভিতরে পরশু ও পট্টিশ প্রভৃতি কতকগুলি জীবিহত্যা করিবার অস্ত্র ছিল, তাহার উপরে কৃষ্ণবর্ণ চামরের প্রতিবিম্ব পড়িয়াছিল, তাহাতে বোধ হইতেছিল যে, শিরশ্ছেদ হইয়া গেলে তাহার কেশকলাপই যেন সেই অস্ত্রগুলিতে লাগিয়া রহিয়াছে; এই জাতীয় অস্ত্রের প্রভায় ঘরের ভিতরে প্রচুর অন্ধকার হইয়াছিল বলিয়া দেবীকে পাতালগৃহবাসিনীর ন্যায় দেখা যাইতেছিল। (প) দেবীর গলদেশে

---

(१) गलत्पीत...। (२) कपाटपटद्वयं। (३) पातालनिवासिनीं।

द्रवोपलक्ष्यमाणाम् (न) रक्तचन्दन-खचित-स्फुरत्-फल-पल्लव-कलितैश्च बिल्व-पत्रदामभिः (१) बालकमुण्डप्रालम्बैरिव कृतमण्डनाम् (प) शोणित-ताम्र-(२) कदम्ब-स्तबक-कृतार्चनैश्च पशूपहार-पटह-पटु-रटित-रसोल्लासितरोमाञ्चैरिवाङ्गैः (३) क्रूरतामुद्वहन्तीम्, (फ) चारु-चामीकर-पट्ट-(४) प्रावृतेन च ललाटेन शबर-सुन्दरी-रचित-सिन्दूर-तिलक-बिन्दुना दाड़िम-(५) कुसुम-कर्णपूर-प्रभा-सेक-लोहितायमान-कपोलभित्तिना रुधिर-ताम्बूलारुणिताधरपुटेन भ्रूकुटि-कुटिल-

---

(प) रक्तेति। किञ्च, रक्तचन्दनेन खचिता रञ्जिता अतएव स्फुरन्ती दीप्यमाना ये बिल्वस्यैव फल-पल्लवास्तैः कलिताः संयोजितास्तैः, अतएव बालकमुण्डानां प्रालम्बैः सरललम्बिनीभिर्मालाभिरिव स्थितैः, बिल्वपत्राणां दामभिर्मालाभिः कृतमण्डनां विहितभूषणाम्। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः। बालकमुण्डगत-रक्तसाम्यप्रतिपादनार्थं रक्तचन्दनखचितपदम्। बालकपदन्तु तन्मुण्डानामापेक्षिकक्षुद्रतया बिल्वफलसाम्यद्योतनार्थम्।

(फ) शोणितेति। किञ्च, शोणितेन रक्तसंसर्गेण ताम्रा ये कदम्बस्तबकाः कदम्बपुष्पगुच्छास्तैः कृतं अर्चनं येषां तैः संलग्नकदम्बकुसुमरेणुभिरित्यर्थः, अतएव पशूपहारे पशुबलिदानसमये पटहस्य ढक्काया यत् पटुरटितं उच्चशब्दस्तस्य रसेन श्रवणोत्साहेन उल्लसन्ति उद्गच्छन्तीति ते तथोक्ता रोमाञ्चा येषु तैरिव, अङ्गैः, क्रूरतां रौद्रतां उद्वहन्तीं धारयन्तीम्। अत्र रोमाञ्चोद्गमोत्प्रेक्षणात् क्रियोत्प्रेक्षा छेकानु-प्रासयानयोरेकाश्रयानुप्रवेशरूपः सङ्करः।

(ब) चार्विति। किञ्च, चारुः सुन्दरो यश्चामीकरपट्टः स्वर्णफलकं तेन प्रावृतमाच्छादितं तेन, तथा शबरसुन्दरीभिः रचितः कृतः सिन्दूरतिलकबिन्दुर्यत्र तेन तादृशेन ललाटेन। दाड़िमकुसुमे एव कर्णपूरौ तयोः प्रभायाः सेकेन संसर्गेण लोहितायमाने कपोलभित्ती गण्डयुगलं यस्य तेन, रुधिरताम्बूलाभ्यां अरुणितं रक्तवर्णीकृतं अधरपुटं यस्य तेन, तथा भ्रुकुट्या भ्रूभङ्गेन कुटिले वक्रे बभ्रुणी पिङ्गलवर्णे नयने चक्षुषी यस्य तेन

কতকগুলি বিল্বপত্রের মালা দিয়া অলঙ্কার করা হইয়াছিল, তাহাতে রক্তচন্দন-রঞ্জিত সুন্দর বহুতর বিল্বফল ও বিল্বপল্লব সংযোজিত ছিল; সুতরাং সেই মালাগুলিকে বালকের মুণ্ডমালার ন্যায় বোধ হইতেছিল। (ফ) রক্তে রক্তবর্ণ কদম্বপুষ্পের রেণুদ্বারা দেবীর অঙ্গে পূজা করিয়াছিল, তাহাতে প্রতীতি হইতেছিল যে,—পশু বলিদান করিবার সময়ে ঢক্কার উচ্চ শব্দ শ্রবণে উৎসাহবশতঃ দেবীর সমস্ত অঙ্গে যেন রোমাঞ্চ উদ্গত হইয়াছে; সুতরাং সেই অঙ্গসমূহ দ্বারা দেবী ভয়ঙ্করতা ধারণ করিতেছিলেন। (ব) দেবীর ললাটদেশ, সুন্দর একখানি স্বর্ণফলকে আবৃত ছিল এবং শবররমণীগণ তাহাতে ক্ষুদ্র একটি সিন্দূরের তিলক দিয়াছিল; কর্ণযুগলে দাড়িম্বপুষ্পের দুইটি কর্ণপূর ছিল, তাহার প্রভায় কপোলযুগল রক্তবর্ণ হইয়াছিল; রক্তসংস্রবে ও তাম্বূলের রসে ওষ্ঠযুগলকে অরুণবর্ণ করিয়াছিল, স্বভাবতই পিঙ্গলবর্ণ নয়নযুগল

---

(१) बिल्वदामभिः। (२) शोणितताम्र...। (३)...चाङ्गैः। (४)...पट...।
(५) दाड़िमी...।

भ्रू-नयनेन (१) मुखेन कुसुम्भ-पाटलित-दुकूल-कल्पितया च देहलतया महाकालाभिसारिकावेश-विभ्रमं बिभ्रतीम्, (ब) सम्पिण्डित-नील-गुग्गुलु-(२) धूप-धूमारुणी-कृताभिश्च प्रचलन्तीभिर्गर्भगृहदीपिकालताभिरङ्गुलीभिरिव महिषासुर-शोणित-लवालोहिनीभिः स्कन्धपीठ-कण्डूयन-चलित-त्रिशूलदण्ड-कृतापराधं वनमहिषमिव तर्जयन्तीम्, (भ) प्रलम्ब-(३) कूर्चधरैश्छागैरपि धृतव्रतैरिव, स्फुरदधरपुटैराखुभिरपि जपपरैरिव, कृष्णाजिनप्रावृताङ्गैः कुरङ्गैरपि प्रति-

ताडशेन मुखेन। तथा कुसुम्भेन रञ्जनद्रव्यविशेषेण पाटलितं श्वेतरक्तीकृतं यत् दुकूलं वस्त्रं तेन कल्पितया आवृतया देहलतया च करणेन, महाकालस्य अभिसारिकावेशविभ्रमं बिभ्रतीं धारयन्तीमिव स्थिताम्। अत्र प्रतीयमाना क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ब) सम्पिण्डितेति। किञ्च, सम्पिण्डितः पुञ्जीभूतो यो नीलगुग्गुलुधूपयोर्धूमस्तेन अरुणीकृताभिः, प्रचलन्तीभिर्वायुभरात् कम्पमानाभिः, गर्भगृहस्य अन्तर्गृहस्य दीपिकालताभिः वायुवशात् प्रचलनेनैव लतावल्लम्बमानैर्भूरैर्दीपैः, महिषासुरस्य शोणितलवैः रक्तबिन्दुभिः आलोहिन्यः आरक्ताभिरङ्गुलीभिरिव स्थिताभिः सतीभिः, स्कन्धपीठस्य स्कन्धदेशस्य कण्डूयनेन चलितो यस्त्रिशूलदण्डस्तेन कृतः अपराधो येन तं वनमहिषं तर्जयन्तीमिव स्थिताम्। चूर्णहरिद्राभ्यां रञ्जनेनारुणवर्णवत् नीलेनापि गुग्गुलुधूपयोर्धूमेनारुणवर्णो जायते संयुक्तद्रव्यस्वभाववैचित्र्यादिति बोध्यम्। अतएवात्र कारणविरुद्धकार्योत्पत्तेर्विषमालङ्कारः, तथा प्रथमा जात्युत्प्रेक्षा द्वितीया च क्रियोत्प्रेक्षा, द्वयोरेतेषामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। देवीमन्दिरस्यारण्यान्तर्गततया वनमहिषप्रवेशसम्भव इति ज्ञेयम्।

(भ) प्रलम्बेति। अन्येषु का कथा, प्रलम्बकूर्चधरैर्दीर्घश्मश्रुधरैश्छागैरपि धृतव्रतैर्गृहीततपोनियमैः सद्भिराराध्यमानामिव, प्रलम्बकूर्चधरत्वादिति भावः। स्फुरन्ति स्पन्दमानानि अधरपुटानि येषां तैः, आखुभिरुन्दुरुभिरपि जपपरैर्मन्त्रजपप्रवृत्तैः सद्भिराराध्यमानामिव, जपप्रवृत्तवत् स्फुरदधरपुटत्वादित्याशयः। अधरपुट-

भ্রূকুটি করায় বক্র হইয়াছিল ; আর কুসুমফুলের রসে রঞ্জিত বস্ত্রদ্বারা দেহলতা আবৃত ছিল — এই সকল কারণে দেবী যেন মহাকালের প্রতি অভিসারিকার বেশবিলাস ধারণ করিতেছিলেন। (ভ) ঘরের ভিতরে কতকগুলি প্রদীপ ছিল, গুগ্‌গুলু ও ধূপের নীলবর্ণ ধূমপুঞ্জে সেই প্রদীপগুলিকে অরুণবর্ণ করিয়াছিল এবং সেই প্রদীপগুলি বায়ুভরে চলিতে থাকিয়া লতার ন্যায় লম্বমান হইতেছিল ; তাহাতে সেই প্রদীপগুলিকে মহিষাসুরের রক্তবিন্দুতে লোহিতবর্ণ অঙ্গুলীর ন্যায় দেখা যাইতেছিল ; এদিকে একটা বন্য মহিষ স্কন্ধ কণ্ডূয়ন করায় ত্রিশূলটা কাঁপিতেছিল বলিয়া সে, অপরাধ করিয়াছিল ; তাই দেবী যেন অঙ্গুলীর ন্যায় সেই প্রদীপগুলি দ্বারা মহিষটাকে তর্জ্জন করিতেছিলেন। (ম) দীর্ঘশ্মশ্রুধারী ছাগগণও যেন ব্রতাবলম্বন করিয়া দেবীর আরাধনা করিতেছিল ; ওষ্ঠযুগল অবিশ্রান্ত স্পন্দিত হওয়ায় মূষিকগণও যেন জপে প্রবৃত্ত হইয়া

(१) भ्रुकुटिकुटिलभ्रूणा रक्तनयनेन, भ्रकुटिकुटिलभ्रूणा रक्तनयनेन, भ्रुकुटि...।
(२)...गुग्गुल...। (३) प्रबल...।

शयितैरिव (१) ज्वलित-लोहित-मूर्द्ध-रत्न-रश्मिभिः कृष्णसर्पैरपि शिरो-धृत-मणिदीपकैरिवाराध्यमानाम्. (म) सर्वतः कठोरवायसगणेन च रटता (२) स्तुतिपरेणेव स्तूयमानाम्, (य) स्थूलस्थूलैः शिराजाल-कैर्गोधा-गोधिका-(३) कृकलासकुलैरिव दग्धस्थाणुशाशङ्कया समारूढैर्गवाक्षि-तेन (र) अलक्ष्मी-समुत्खात-लक्षण स्थानैरिव विस्फोटव्रणविन्दुभिः कल्माषित-

स्फुरणं मूषिकाणां स्वभावः। कृष्णाजिनं कृष्णवर्णं स्वकीयं चर्म्म कृष्णसारचर्म्म च तेन प्रावृतमङ्गं येषां तैः कुरङ्गैर्हरिणैरपि प्रतिशयितैः कृतप्रतिशयनैः भक्तिराराध्यमानामिव, तद्वत् कृष्णाजिनप्रावृताङ्गत्वादित्यभिप्रायः। विपत्प्रतीकाराय अभीष्टलाभाय वा दिनमासादिनियतं भोजनादिपरित्यागपूर्वकं देवतायै शयनं प्रतिशयनम्। तथा ज्वलिता दीप्ताः, लोहिता रक्तवर्णाः, मूर्द्धरत्नस्य शिरोमणे रश्मयः किरणा येषां तैः, कृष्णसर्पैर्विजातीय-विषधरैरपि शिरःसु धृता मणय एव दीपा मणिवह्नीपाय येस्तैः भक्तिराराध्यमानामिव, शिरःसु दीपधारणादिति भावः। अन्योऽपि शिरसि दीपधारणपूर्वकं देवतामाराध्नोति। अत्र प्रत्येकवाक्य एव क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः, तथा आराध्यमानामित्येकया क्रियया बहूनां कर्तृतयाभिसम्बन्धात्तुल्ययोगिता चानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। तेन च महोपासनास्थानत्वं व्यज्यत इत्यलङ्कारेण वस्तुध्वनिः।

(य) सर्वत इति। किञ्च, सर्वतः समन्तात् रटता रुवता, कठोरः कर्कशस्वरो यो वायसगणः काक-समूहस्तेन, स्तुतिपरेण स्तवप्रवृत्तेन सता स्तूयमानामिव, स्तुतिप्रवृत्तवत् सर्वतोरवणात्। स्तुतिप्रवृत्तस्य प्रादक्षिण्येन भ्रमणपूर्वं स्तवरवं करोति। अत्रापि क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(र) स्थूलेति। दग्धो यः स्थाणुः शाखापत्रविहीनो वृक्षस्तस्य आशङ्कया भ्रमेण समारूढैर्गात्रारूढैः, गोधागोधिकाकृकलासकुलैरिव, स्थूलस्थूलैरपरापरापेक्षया अतीवस्थूलैः शिराजालकैर्धमनीसमूहैः, गवाक्षमस्य सञ्जातमिति गवाक्षितस्तेन जालकमयीभूतेन जरद्द्रविडधार्म्मिकेणाधिष्ठितामिति बहुदूरवर्त्तिन्या क्रिययान्वयः। अत्र भ्रान्तिमान् जात्युत्प्रेक्षा चालङ्कारस्तयोश्चाङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। इतः पुंसि तृतीयैकवचनान्तपदानि जरद्द्रविडधार्म्मिकेणेति वक्ष्यमाणस्य विशेषणानि।

(ल) अलक्ष्मीति। अलक्ष्म्या देव्या समुत्खातानि समूलमुत्पाटितानि यानि लक्षणानि शुभचिह्नानि तेषां स्थानैरिव विस्फोटव्रणविन्दुभिः कल्माषितं विचित्रीकृतं सकलं शरीरं यस्य तेन। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः।

দেবীর উপাসনা করিতেছিল ; কৃষ্ণাজিনে সমস্ত অঙ্গ আবৃত করিয়া হরিণগণও যেন প্রতিশয়ন করিয়া (হত্যা দিতে আরম্ভ করিয়া) দেবীর আরাধনা করিতেছিল এবং মস্তকমণির রক্তবর্ণ কিরণজাল জ্বলিতে থাকায় কৃষ্ণসর্পগণও যেন মস্তকে মণিপ্রদীপ ধারণ করিয়া দেবীর উপাসনা করিতেছিল। (য) সকল দিকে রব করতঃ কর্কশস্বর কাকগণও যেন স্তবে প্রবৃত্ত হইয়া আরাধনা করিতেছিল। (র) দ্রবিড়দেশীয় বৃদ্ধ একটা উপাসক দেবীর আয়তনে অধিষ্ঠান করিতেছিল ; দগ্ধ স্থাণু মনে করিয়া গাত্রে আরূঢ় গুইল, গোসাপ ও কাঁকলাস সমূহের ন্যায় অত্যন্ত স্থূল শিরাসমূহ থাকায় তাহার গাত্রে গবাক্ষজাল জন্মিয়াছিল। (ল) অলক্ষ্মীদেবী শুভলক্ষণসমূহ উন্মূলন করিয়া ফেলিয়াছিলেন, তাহার স্থানের ন্যায় বিস্ফোটব্রণবিন্দুতে তাহার

(১) प्रतिशयनैरिव। (२) रुवता। (३) गोधार…, गोधागोधिका…।

सकल-शरीरेण, (ल) कर्णावतंससंस्थापितया च चूड़या रुद्राक्षमालिकामिव (१) दधानेन, (व) अम्बिका-पाद-पतन-श्याम-ललाट-वर्द्धमानार्बुदेन, (२) (श) कुवादि-(३) दत्त-सिद्धाञ्जनदानस्फुटितैक-(४) लोचनतया त्रिकालमितरलोचनाञ्जनदानादर-श्लक्ष्णीकृत-दारुशलाकेन, (ष) प्रत्यहं कटुकालावु-स्वेद-प्रारब्ध-दन्तुरता-प्रतीकारेण, (स) कथञ्चिदस्थान-दत्तेष्टका-प्रहारतया शुष्कैक भुजोप-

(व) कर्णेति। किञ्च, कर्णावतंसे कर्णभूषणस्थाने संस्थापितया चूड़या हेतुना, रुद्राक्षमालिकां दधानेनेव, शिखिपुच्छनिर्म्मितायास्तस्याश्चूड़ायाः कण्ठपर्य्यन्तपातित्वेन रुद्राक्षमालावत् प्रतीतिरिति भावः। क्रियोत्प्रेक्षा।

(श) अम्बिकेति। अम्बिकायाः पादपतनेन श्यामे श्यामीभूते ललाटे वर्द्धमानः अर्बुदो रोगो यस्य तेन, सततभूतलघर्षणादिति भावः।

(ष) कुवादीति। कुवादिना कौतुकाय मिथ्यावादिना जनेन दत्तस्य सिद्धाञ्जनस्य नेत्रौषधस्य दानेन अर्पणेन स्फुटितं नष्टं एकं लोचनं यस्य तस्य भावस्तया हेतुना, त्रिकालं प्रातर्मध्याह्नसायाह्नेषु, इतरलोचने अञ्जनदाने साधारणकज्जलार्पणे नतु कुवादिदत्तसिद्धाञ्जनदाने इत्यर्थः आदरेण यत्नेन श्लक्ष्णीकृता दारुशलाका दारुनिर्म्मिता कज्जलदानशलाका येन तेन, कुवादिदत्तसिद्धाञ्जनदोषेण वा अश्लक्ष्णासुखशलाकादोषेण वा लोचनमेकं स्फुटितमित्युभयथाप्याशङ्कावशादिति भावः।

(स) प्रत्यहमिति। कटुकालावुः कटुतुम्बी तस्याः स्वेदेन प्रारब्धो दन्तुरतायाः उन्नतदन्ततायाः प्रतीकारश्चिकित्सा येन तेन। तादृशस्वेदेन दन्तपातावश्यम्भावात् वर्व्वरताप्रतीतिः।

(ह) कथञ्चिदिति। कथञ्चित् केनापि प्रकारेण अस्थाने अविहितस्थाने दत्त इष्टकाप्रहारो यस्य तस्य भावस्तया हेतुना, शुष्के शुष्कीभूते एकस्मिन् भुजे उपशान्तं प्रयोजनाभावज्ञानाद्विरतं मर्द्दनव्यसनं वातविनाशकतैलमर्द्दनाग्रहो यस्य तेन। "आमवातजड़ीकृतदेहस्य तद्वातविनाशाय" तैलविशेषमर्द्दनानन्तरं स्थानविशेषे कारणाग्नितप्तेष्टकानां प्रहारश्चिकित्साशास्त्रनिर्द्दिष्टः, तस्मिंश्चास्थाने कृते कश्चिद्भुजः शुष्कतामापद्यते सा च शुष्कतास्य जाता, तथा चासौ तस्मिन् भुजे वातो विनष्ट इति मत्वा तैलमर्द्दनाग्रहं परिहृतवानिति सरलार्थः।

देह विचित्र करিয়াছিল। (ব) কর্ণাভরণের স্থানে একটি চূড়া পরিধান করিয়াছিল, তাহা বক্ষঃস্থল পর্য্যন্ত পতিত হওয়ায় সে, যেন রুদ্রাক্ষের মালা ধারণ করিতেছিল। (শ) চণ্ডীর চরণে পতিত হওয়ায় ললাটদেশ শ্যামবর্ণ হইয়াছিল এবং তাহাতেই ললাটের অর্ব্বুদরোগটা বৃদ্ধি পাইয়াছিল। (ষ) কোন মিথ্যাবাদি-প্রদত্ত সিদ্ধকজ্জল প্রয়োগ করায় একটি চক্ষু বিনষ্ট হইয়াছিল বলিয়া তিন বেলা অন্য চক্ষুতে সাধারণ কজ্জল দান করিবার সময়ে যত্নপূর্ব্বক দারু-শলাকাটিকে পালিশ করিয়াছিল। (স) প্রতিদিন তিতলাউর স্বেদ দিয়া উচু দাঁতগুলির চিকিৎসা আরম্ভ করিয়াছিল। (হ) কোন প্রকারে অস্থানে ইষ্টক প্রহার করায় একখানা হাত শুকাইয়া গিয়াছিল, সুতরাং তাহাতে তাহার তৈল মর্দ্দন করিবার আগ্রহ নিবৃত্তি

(१) क्वचित् इवशब्दो नास्ति। (२)···वर्द्धुदेन। (३) कुवादिक···, कुवादी···।
(४)···स्फोटितैक···, ···सिद्धाञ्जनस्फुटितैक···।

श्रान्त-सहन-व्यसनेन, (ऋ) उपर्य्युपर्य्यविश्रान्त-(१) कटुकवर्त्ति-प्रयोग-वर्द्धित-तिमिरेण, (क) अश्मभेद-संगृहीत-वराह-दंष्ट्रेण, (ख) इङ्गुदीकोष-कृतौषधाञ्जनसंग्रहेण, (ग) सूची-स्यूत-शिरा-सङ्कोचित-वाम-कराङ्गुलिना, (घ) कौशेयक-कोषावरण-(२) चति-व्रणित-चरणाङ्गुष्ठकेन, (ङ) असम्यक्कृत-रसायनानीताकाल-ज्वरेण, (च) जरां गतेनापि दक्षिणापथाधिराज्य-वर-प्रार्थना-कदर्थित-दुर्गेण, (छ) दुःशिक्षित-श्रमणादिष्ट-(३) तिलकाबद्ध-विभव-

---

(ऋ) उपरीति। उपर्य्युपरि अधिकाधिकं अविश्रान्तञ्च यथा स्यात्तथा यः कटुकवर्त्तिप्रयोगः कटुपदार्थनिर्म्मितनेत्ररोगनाशकवर्त्तिकादानं तेन वर्द्धितं तिमिरं नेत्ररोगविशेषो यस्य तेन।

(क) अश्मेति। अश्मभेदाय पाषाणभङ्गाय संगृहीता वराहदंष्ट्रा येन तेन।

(ख) इङ्गुदीति। इङ्गुदीकोषे इङ्गुदीफलकोषे कृत औषधाञ्जनस्य नेत्ररोगौषधीभूतकज्जलस्य संग्रहो येन तेन।

(ग) सूचीति। सूच्या स्यूताभिरीन्नत्यनिवृत्त्यर्थं सूत्रेण ग्रथिताभिः शिराभिः सङ्कोचिता दृढाकर्षणेन खर्वीकृता वामकराङ्गुलयो यस्य तेन।

(घ) कौशेयकेति। कौशेयककोषेण कृमिसूत्रकोषेण यदावरणं तेन या चतिः संघर्षस्तेन व्रणितः चतश्चरणाङ्गुष्ठं यस्य तेन। कुशादिसंघर्षवारणाय कौशेयककोषेणाङ्गुष्ठावरणम्।

(ङ) असम्यगिति। असम्यक् कृतेन अयथाविधि विहितेन रसायनेन जराव्याधिविध्वंसिभेषजसेवनेन आनीतः अकालज्वरो येन तेन। "यज्जराव्याधिविध्वंसि भेषजं तद्रसायन"मिति चरकः।

(च) जरामिति। जरां गतेनापि, नितान्तवृद्धेनापि सता, दक्षिणापथस्य दाक्षिणात्यदेशस्य यदधिराज्यं तस्य वरप्रार्थनया कदर्थिता विरक्तीकृता दुर्गा चण्डिका येन तेन।

(छ) दुरिति। दुःशिक्षितेन कुशिक्षाप्राप्तेन श्रमणेन केनचित् सन्न्यासिविशेषेण आदिष्टे तिलके आबद्धा कृता विभवप्रत्याशा धनसम्पदाकाङ्क्षा येन तेन।

পাইয়াছিল। (ঋ) সর্ব্বদা বেশি বেশি করিয়া কটু বর্ত্তি প্রয়োগ করায় নেত্ররোগ বৃদ্ধি পাইয়াছিল। (ক) পাথর ভাঙ্গিবার জন্য শূয়রের দাঁত সংগ্রহ করিয়াছিল। (খ) ইঙ্গুদী-ফলের কোষে নেত্ররোগের ঔষধ কজ্জল সংগ্রহ করিয়াছিল। (গ) সূচ দিয়া শিরাগুলিকে সেলাই করায় বাম হাতের আঙ্গুলগুলি সঙ্কুচিত হইয়াছিল। (ঘ) ক্রিমির চাক দিয়া আবরণ করায় তাহার ঘসাতে পায়ের বুঁড়ে আঙ্গুল ক্ষত-বিক্ষত হইয়াছিল। (ঙ) অসম্যগ্‌ভাবে রসায়ন সেবন করায় অকালে জ্বর আনয়ন করিয়াছিল। (চ) প্রাচীন হইলেও দাক্ষিণাত্য-দেশের রাজত্বের বর প্রার্থনা করায় দুর্গাদেবীকে বিরক্ত করিতেছিল। (ছ) কুশিক্ষায় শিক্ষিত কোন সন্ন্যাসীর আদেশে তিলক ধারণ করিয়া, তাহাতেই ধনসম্পত্তির প্রত্যাশা

---

(১) উপর্য্যবিশ্রান্ত...। (২) কৌশেয়কাস্তরণ...। (৩)...শ্রবণাদিষ্ট...।

प्रत्याशेन, (छ) हरित-पत्र-रसाङ्गार-मसी-(१) मलिन-शम्बूकवाहिना, (ज) पट्टिका-लिखित-दुर्गास्तोत्रेण, (झ) धूम-रक्तालक्तकाक्षर-ताल-पत्र-कुहक-तन्त्र-मन्त्र-पुस्तिका-संग्राहिणा, (ञ) जीर्ण-पाशुपतोपदेश-(२) लिखित महा-काल-मतेन, (ट) आविर्भूत-निधि-वाद-व्याधिना, (ठ) सञ्जात-धातु-वाद-वायुना, (ड) लग्नासुर-विवर-प्रवेश-पिशाचेन, (ढ) प्रवृत्त-यक्ष-कन्यका-कामित्व-मनोरथ-व्यामोहेन, (ण) वर्द्धितान्तर्धान-मन्त्रसाधनसंग्रहेण, (३) (त)

(ज) हरितेति। हरितपत्ररसेन हरिद्वर्णपर्णनिर्य्यासेन युक्ता या अङ्गारमसी तया मलिनं शम्बूकं वहतीति तेन शम्बूकमयमसीपात्रधारिणेत्यर्थः।

(झ) पट्टिकेति। पट्टिकायां काष्ठफलके लिखितं दुर्गास्तोत्रं येन तेन।

(ञ) धूमेति। धूमेन रक्तानि रञ्जितानि अलक्तकाक्षराणि अलक्तकलिखितवर्णा येषु तेस्तालशैस्ताल-पत्रैर्या कुहकाय इन्द्रजालाय तन्त्रमन्त्राणां पुस्तिका तां संग्टह्णातीति तेन।

(ट) जीर्णेति। जीर्णो वृद्धो यः पाशुपतः शैवस्तस्य उपदेशेन लिखितं महाकालमतं येन तेन।

(ठ) आविरिति। आविर्भूतो निधिवादः 'अनेनानुष्ठानेन निधिर्लभ्येत' इति धनभाण्डवाद एव व्याधिर्यस्य तेन।

(ड) सञ्जातेति। सञ्जातो धातुवादः 'अनेनानुष्ठानेन लौहं स्वर्णं भवति' इति धातुविषयकप्रवाद एव वायुर्वायुरोगो यस्य तेन।

(ढ) लग्नेति। लग्नः असुरविवरे प्रवेशः प्रवेशाग्रह एव पिशाचो यस्मिन् तेन।

(ण) प्रवृत्तेति। प्रवृत्तो जातो यक्षकन्यासु कामित्वमनोरथेन सम्भोगाभिलाषेण व्यामोहो विशेषेण मतिभ्रमो यस्य तेन।

(त) वर्द्धितेति। वर्द्धितो वृद्धिं प्रापितः अन्तर्धानमन्त्रसाधनाय संग्रह आग्रहो येन तेन।

করিতেছিল। (জ) হরিদ্বর্ণ পাতার রস ও আঙ্গারের কালী এই উভয়ে মলিনবর্ণ একটা ঝিনুক লইয়া চলিত। (ঝ) একখানা কাষ্ঠফলকে দুর্গার স্তব লিখিয়া রাখিয়াছিল। (ঞ) ইন্দ্রজালের জন্য একখানা তান্ত্রিক মন্ত্রের পুস্তক সংগ্রহ করিয়াছিল, তাহার তাল-পাতাগুলিতে আলতার রস দিয়া অক্ষর লেখা ছিল, তাহা আবার ধূমে রঞ্জিত করিয়াছিল। (ট) কোন প্রাচীন শৈবের উপদেশে মহাকালের মত লিখিয়া রাখিয়াছিল। (ঠ) 'এই অনুষ্ঠান করিলে নিধি (ধনের মাঠী) লাভ করা যায়' এই জাতীয় প্রবাদরূপ ব্যাধি তাহার হৃদয়ে আবির্ভূত হইয়াছিল। (ড) 'এই কার্য্য করিলে লোহা সোণা হয়', এই প্রবাদমূলক তাহার বায়ুরোগ জন্মিয়াছিল। (ঢ) অসুরের হ্রদে প্রবেশ করিবার আগ্রহরূপ পিশাচ তাহার পিছনে লাগিয়াছিল। (ণ) যক্ষকন্যাগণের সহিত সম্ভোগ করিবার অভিলাষ হওয়ায় তাহার মতিভ্রম জন্মিয়াছিল। (ত) অন্তর্ধান করিবার উপযোগী মন্ত্র সাধন করিবার জন্য

(१)...मषी...। (२) जीर्णमहापाशुपतोपदेश। (३)...अन्तर्धानमन्त्रसंग्रहेण।

श्रीपर्वताश्चर्य्यवार्त्तासहस्राभिज्ञेन, (थ) असकृदभिमन्त्रित-सिद्धार्थक-प्रहति-प्रधावितैः (१) पिशाचगृहीतकैः करतल-ताड़न-चिपिटीकृत-(२) श्रवणपुटेन, (द) अविमुक्त-(३) शैवाभिमानेन, (ध) दुर्गृहीतालावुवीणा-वादनोद्वेजित-पथिक-परिहृतेन, (न) दिवसमेव मशककणितानुकारि किमपि कम्पितोत्तमाङ्गं गायता, (प) स्वदेशभाषा-निबद्ध-भागीरथी-भक्ति-स्तोत्र-नर्त्तकेन, (फ) गृहीत-तुरग-ब्रह्मचर्य्यतया अन्यदेशागतोषितासु जरत्प्रव्रजितासु बहुकृत्वः सम्प्रयुक्त-

(थ) श्रीति। श्रीपर्वते यदाश्चर्य्यवार्त्तासहस्रं अद्भुतकिंवदन्तीसमूहस्तस्याभिज्ञेन। पुरा किल कस्मिंश्चित् पर्वते सरस्वत्या अपि सौभाग्यमभिलषन्ती लक्ष्मीर्भृशं तपस्यन्ती स्वकीयस्तनं छित्त्वा अग्नौ जुहाव, ततः प्रभृति पर्वतोऽसौ श्रीपर्वत इति प्रथितोऽभूदिति पौराणिकप्रवादः।

(द) असकृदिति। असकृदभिमन्त्रितानां सिद्धार्थकानां सर्षपाणां प्रहत्या भूतापसारणार्थं तद्गात्रेषु वारं वारं प्रक्षेपेण प्रधावितैः क्रोधाद् द्रुतमागतैः पिशाचगृहीतकैर्भूताविष्टैर्जनैः करतलताड़नेन चिपिटीकृतं चिपीटकावत् प्रसारितीकृतं श्रवणपुटं कर्णपुटं यस्य तेन।

(ध) अवीति। अविमुक्तः अपरित्यक्तः शैवाभिमानः शैवोऽहमित्यहङ्कारो येन तेन।

(न) दुर्गृहीतेति। दुर्गृहीता अयथाविधि धृता या अलावुवीणा तुम्बीनिर्म्मितवीणायन्त्रं तस्य वादनेन उद्वेजितैर्विरक्तीकृतैः पथिकैः परिहृतः परित्यक्तस्तेन।

(प) दिवसमिति। दिवसमेव यन्मशकस्य कणितं शिञ्जितं तदनुकर्त्तुं शीलं यस्य तद्यथा तथा, कम्पितं उत्तमाङ्गं मस्तकं यस्मिन् कर्म्मणि तद्यथा तथा च किमपि अनिर्वचनीयं गायता। दिवसमिति "तत्प्रत्ययेऽसंज्ञं कालादि प्रौव्यस्य"ेति कर्म्मत्वम्।

(फ) स्वदेशेति। स्वदेशभाषा द्राविड़ी, तया निबद्धं यद्भागीरथ्या भक्तिस्तोत्रं तेन नृत्यतीति तेन।

(ब) गृहीतेति। गृहीतं तुरगस्य अश्वस्येव ब्रह्मचर्य्यं येन स तथोक्तस्तस्य भावस्तया हेतुना, यथा तुरगाः सततबन्धनप्रतिबन्धादेव ब्रह्मचर्य्यमवलम्बन्ते न पुनर्धर्म्मलाभलोभात् तथा अयमपि स्त्रीलाभाभावादेव ब्रह्मचर्य्यमवलम्बितवान् न पुनर्धर्म्मार्जनप्रत्याशयेति भावः। अन्यदेशादागताः तत्र उषितास्तत्रावस्थितास्तासु, जरत्प्रव्रजितासु जराजीर्णसन्न्यासिनीषु बहुकृत्वो बहून् वारान् सम्प्रयुक्तं निक्षिप्तं स्त्रीवशीकरणचूर्णं येन तेन।

তাহার আগ্রহ বৃদ্ধি পাইয়াছিল। (থ) সে, শ্রীপর্ব্বতের আশ্চর্য্য বৃত্তান্তসমূহ জানিত। (দ) মন্ত্রপাঠ করিয়া বারংবার গাত্রে সর্ষপ নিক্ষেপ করায় ভূতাবিষ্ট লোকগুলি দ্রুত আসিয়া হস্ত তাড়ন করিয়া তাহার কাণ দুইখানি চেপ্টা করিয়া দিয়াছিল। (ধ) সে, নিজের শৈবাভিমান ত্যাগ করিয়াছিল না। (ন) বিপরীতভাবে ধরিয়া অলাবুর বীণা বাদন করায় পথিকগণ বিরক্ত হইয়া তাহাকে পরিত্যাগ করিয়া যাইত। (প) সে, মস্তক কম্পিত করিয়া দিনের বেলায়ই মশক-শব্দের ন্যায় অনির্ব্বচনীয় গান করিতেছিল। (ফ) স্বদেশীয় ভাষায় গঙ্গার ভক্তি-স্তোত্র রচনা করিয়া তাহা পাঠ করতঃ নৃত্য করিতেছিল। (ব) অশ্বের ন্যায় ব্রহ্মচর্য্য অবলম্বন করায়, অন্যদেশ হইতে আসিয়া সেই স্থানে অবস্থিত বৃদ্ধ সন্ন্যাসিনীগণের

(१)...आहतिधावितैः। (२)...निविडीकृत...। (३) अनवमुक्त..., अवमुक्त...।

स्त्रीवशीकरणचूर्णेन, (ब) अतिरोषणतया कदाचिद्न्यस्ताष्ट-पुष्पिका-पातोत्पादित-क्रोधेन चण्डिकामपि मुखभङ्गिविकारैर्भृशमुपहसता, (भ) कदाचिन्निवार्य्यमाणावास-रुषिताध्वगारब्ध-बहु-बाहुयुद्ध-पात-भग्न-पृष्ठकेन, (म) कदाचित् कृतापराध-बालक-पलायनामर्ष-पश्चात्-प्रधावित-स्खलिताधोमुख- पात-स्फुटित-शिरः-कपाल-भुग्न-ग्रीवेण, (य) कदाचिज्जानपद-कृत-(१) नवागतापर-धार्म्मिकादर-मत्सरोद्बद्धात्मना, (२) (र) निःसंस्कारतया यत्किञ्चन-कारिणा, (ल)

(भ) अतीति। अष्टानां पुष्पाणां समाहार इत्यष्टपुष्पी अष्टाता अष्टपुष्पीत्यष्टपुष्पिका अप्राणि कप्रत्ययः यानि कानिचिदष्टौ पुष्पाणीत्यर्थः। तथा च अतिरोषणतया नितान्तक्रोधशीलतया, कदाचित् दुर्भ्मसाया अयथाभावेन स्थापिताया अष्टपुष्पिकायाः, पातेन कौतुकाद्वाहा केनचिज्जनेन चण्डिकापीठात् पातनेन उत्पादितः क्रोधो यस्य तेन, अतएव मुखभङ्गिविकारैश्चण्डिकामपि भृशमुपहसता, तानि पुष्पाणि रचितुमशक्तत्वादिति भावः।

(म) कदाचिदिति। निवार्य्यमाणेन 'अत्र न वासः कर्त्तव्य' इति निषिध्यमानेन आवासेन वासस्थानेन हेतुना, रुषितैः क्रुद्धैः अध्वगैः पथिकैरारब्धेषु बहुषु बाहुयुद्धेषु पातेन भग्नं पृष्ठं यस्य तेन।

(य) कदाचिदिति। कृतो धूलिपत्रनिक्षेपादिना विहितः अपराधो येन तस्य तादृशस्य बालकस्य पलायनेन योऽमर्षः क्रोधस्तेन यत् पश्चात् प्रधावितं प्रधावनं तेन यत् स्खलितं प्रच्युतिस्तस्मादधोमुखपातेन स्फुटितं क्षतं शिरः कपालं भुग्ना वक्रीभूता च ग्रीवा यस्य तेन।

(र) कदाचिदिति। जानपदैर्देशवासिभिर्जनैः कृतो यो नवागतस्य अपरधार्म्मिकस्य आदरस्तस्मिन् मत्सरेण विद्वेषेण उद्बद्ध आत्महत्यार्थं उद्बन्धनाश्रयीकृतः आत्मा देहो येन तेन।

(ल) निरिति। निःसंस्कारतया शिक्षाजनितज्ञानोत्पत्तिहीनतया, यत्किञ्चनकारिणा तुच्छकार्य्यकारिणा।

গাত্রে স্ত্রীবশীকরণের চূর্ণ নিক্ষেপ করিয়াছিল। (ভ) একে সে অত্যন্ত কোপনস্বভাব ছিল, তাহাতে আবার চণ্ডীর নিকটে যে আটটি ফুল পাতাইয়া রাখিয়াছিল, তাহা কেহ ফেলাইয়া দেওয়ায় নূতন ক্রোধ জন্মিয়াছিল; সুতরাং সেই ফুল রক্ষা করিতে না পারায়, নানাবিধ মুখভঙ্গী করিয়া চণ্ডীদেবীকেও অত্যন্ত উপহাস করিতেছিল। (ম) পথিকগণ আসিয়া থাকিবার ইচ্ছা করিলে সে বাধা দিত, তাহাতে পথিকগণ ক্রুদ্ধ হইয়া গেলে তাহাদের সহিত তাহার অনেক বাহুযুদ্ধ আরম্ভ হইয়া যাইত কোন সময় তাহাতে পড়িয়া যাওয়ায় তাহার পিঠ ভাঙ্গিয়া গিয়াছিল। (য) কোন সময় কোন বালক অপরাধ করিয়া পলায়ন করিলে সে, ক্রোধবশতঃ তাহার পশ্চাৎ ধাবন করিবার সময়ে পদস্খলন হওয়ায় অধোমুখ হইয়া পড়িয়া গিয়াছিল, তাই তাহার মাথার খুলি ফুটিয়াছিল ও গলা বাঁকা হইয়াছিল। (র) দেশবাসী সমস্ত লোক, নবাগত অন্য কোন ধার্ম্মিককে আদর করিয়াছিল, সুতরাং তাহাতে বিদ্বেষ হওয়ায় সে, আত্মহত্যা করিবার নিমিত্ত গলায় দড়ি দিয়াছিল। (ল) শিক্ষাজনিত কোন জ্ঞান ছিল না

(१)...जनपदकृत...। (२)...उद्बद्धात्मना।

खञ्जतया मन्दमन्द-सञ्चारिणा, (१) (व) बधिरतया संज्ञाव्यवहारिणा, (श) रात्र्यन्धतया दिवाविहारिणा, (ष) लम्बोदरतया प्रभूताहारिणा, (स) अनेकशः फल-पातन-कुपित-वानर-नखोल्लेख-च्छिद्रितनासापुटेन, (ह) बहुशः कुसुमावचय-चलित-भ्रमर-सहस्र-दंश-शीर्णीकृत-शरीरेण, (क्ष) सहस्रशः शयनीकृतासंस्कृत-शून्य-देवकुल-कालसर्प-दष्टेन, (क) शतशः श्रीफलतरु-शिखर-च्युति-चूर्णितोत्तमाङ्गेन, (ख) असकृदुत्सन्न-देवमातृ-गृह-वास्तव्यर्क्ष-नख-(२) जर्जरित-कपोलेन, (ग) सर्वदा वसन्तक्रीड़िना जनेनोत्क्षिप्त-खण्ड-खट्वा-

---

(व) खञ्जेति। खञ्जतया मन्दं मन्दं सञ्चरितुं शीलं यस्य तेन।

(श) बधिरेति। बधिरतया, संज्ञया अङ्गुल्यादिसङ्केतेन व्यवहर्तुं शीलं यस्य तेन।

(ष) रात्र्यन्धेति। रात्र्यन्धतया दिवाविहारिणा दिवससञ्चारिणा।

(स) लम्बोदरेति। लम्बोदरतया प्रभूताहारिणा प्रचुरभोजिना।

(ह) अनेकश इति। फलपातनेन कुपितानां वानराणां नखैरुल्लेखेन अनेकशश्छिद्रितं सञ्जातच्छिद्रं नासापुटं यस्य तेन।

(क्ष) बहुश इति। बहुशः कुसुमावचये पुष्पचयनसमये चलितस्य धावितस्य भ्रमरसहस्रस्य दंशेन दशनेन शीर्णीकृतं शरीरं यस्य तेन।

(क) सहस्रश इति। सहस्रशः शयनीकृतेषु शयनस्थानीकृतेषु असंस्कृतेषु अपरिष्कृतेषु शून्येषु मानवरहितेषु देवकुलेषु देवतागृहेषु कालसर्पदंष्टेन।

(ख) शतश इति। शतशः श्रीफलतरोः शिखरादुपरिदेशात् च्युत्या पतनेन चूर्णितं उत्तमाङ्गं मस्तकं यस्य तेन।

(ग) असकृदिति। असकृत् उत्सन्नदेवमातृगृहेषु भग्नब्राह्मीप्रभृतिगृहेषु वसन्तीति तथोक्ता ये ऋक्षा भल्लुकास्तेषां नखैर्नखाघातैः जर्जरितः क्षतविक्षतीकृतः कपोलौ गण्डौ यस्य तेन।

বলিয়া সে, অতিতুচ্ছ কার্য্য করিত। (ব) খোঁড়া বলিয়া ধীরে ধীরে চলিত। (শ) বধিরতা-নিবন্ধন সঙ্কেতদ্বারা অন্যের সহিত ব্যবহার করিত। (ষ) রাত্র্যন্ধ বলিয়া দিনে বিচরণ করিত। (স) লম্বোদর বলিয়া প্রচুর আহার করিত। (হ) ফল পাড়িবার সময়ে বানরগণ ক্রুদ্ধ হইয়া নখের আঘাতে অনেকবার তাহার নাসিকাগ্র ছিদ্র করিয়া দিয়াছিল। (ক্ষ) পুষ্প চয়ন করিবার সময়ে ধাবিত ভ্রমরগণ দংশন করিয়া বহুবার তাহার শরীর জীর্ণ-শীর্ণ করিয়াছিল। (ক) অপরিষ্কৃত শূন্য দেবগৃহে শয়ন করায় কালসর্পে সহস্রবার তাহাকে দংশন করিয়াছিল। (খ) শ্রীফল-বৃক্ষের উপর হইতে পতিত হওয়ায় শতবার তাহার মস্তক চূর্ণ হইয়াছিল। (গ) ব্রাহ্মী-প্রভৃতি দেবমাতৃগণের ভগ্ন-গৃহ-স্থিত ভল্লুকগণ নখের আঘাতে বারংবার তাহার গণ্ডদেশ জর্জ্জরিত করিয়াছিল। (ঘ) বসন্তোৎসবে মত্ত নাগরিকগণ একখানা ভগ্ন খট্বা উত্তোলন

---

(१) मन्दं मन्दं सञ्चारिणा। (२)...वासि ऋक्षनख...।

रोपित-वृद्धदासी-विवाह-प्राप्त-विडम्बनेन, (घ) अनेकायतन-प्रतिशयित-निष्फलो-त्थानेन, (ङ) दौःस्थित्यमपि (१) विविध-व्याधि-परिवृतं स्वकुटुम्बमिवोद्वहता, (च) मूर्खतामपि बहुव्यसनानुगतां प्रसूतानेकापत्यामिव दर्शयता, (छ) क्रोधमप्यनेकदण्डाघात-(२) निर्म्मित-बहुगात्रगण्डकं (३) फलितमिव प्रकाशयता, (ज) क्लेशमपि सर्वावयवज्वलित-दीपिका-दाह-व्रण-विभावितं बहु-

---

(घ) सर्वदेति। सर्वदा वसन्तक्रीडिना वसन्तोत्सवकारिणा जनेन उत्थितायां उत्तोलितायां खण्डायां भग्नायां खट्वायां आरोपिता या वृद्धदासी तया विवाहेन प्राप्तं विडम्बनं कदर्थना येन तेन।

(ङ) अनेकेति। अनेकेषु आयतनेषु देवतास्थानेषु यानि प्रतिशयितानि प्रागुक्तलक्षणानि प्रतिशयनानि तेभ्यो निष्फलमुत्थानं यस्य तेन।

(च) दौःस्थित्यमिति। विविधव्याधिभिः परिवृतं, दुःस्थितस्य भावो दौःस्थित्यं तदपि दुर्गतिमपि स्वकुटुम्बमिव निजपरिजनमिव उद्वहता दधता। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः, तेन च दौःस्थित्यव्याधीनां सातत्यं व्यज्यत इत्यलङ्कारेण वस्तुध्वनिः।

(छ) मूर्खतामिति। बहुभिर्व्यसनैर्मद्यपानाद्यासक्तिभिरनुगता अनुसृता तां, मूर्खतामपि, प्रसूतानि अनेकानि अपत्यानि यया तामिव, दर्शयता आचारेण प्रकटयता, व्यसनानामेवापत्यरूपत्वादिति भावः। अत्रा-नेकापत्यप्रसवोत्प्रेक्षणात् क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ज) क्रोधमिति। अनेकैर्दण्डाघातैरपक्वान्तर्जनकर्णकलगुडप्रहारैर्निर्म्मिता बह्वी गात्रगण्डका शरीर-व्रणविशेषा येन तं, क्रोधमपि फलितमिव सञ्जातफलमिव, प्रकाशयता, गात्रगण्डकानामेव क्रोधफलरूपत्वादिति भावः। क्रियोत्प्रेक्षा।

(झ) क्लेशमिति। सर्वेषु अवयवेषु अङ्गेषु ज्वलितास्तदुत्पीडितजनैः प्रज्वालिता या दीपिकाः प्रदीपास्तासां दाहेन ये व्रणाः क्षतानि तैर्विभावितं परिचायितं क्लेशमपि बहुसुखमिव प्रकटयता सहासवदनेन जनसमाजे निवेदयता। अत्र गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः।

করিয়া, তাহাতে একটা বৃদ্ধ দাসীকে বসাইয়া, তাহার সহিত বিবাহ দেওয়ায় সে, সর্ব্বদা বিড়ম্বনা পাইত। (ঙ) সে, অনেক দেবতার দুয়ারে হত্যা দিয়া, আবার নিষ্ফলভাবেই উঠিয়াছিল। (চ) নানাবিধ রোগে পরিবেষ্টিত দুর্গতিকেও সে, নিজ পরিজনের ন্যায় বহন করিতেছিল। (ছ) সে, যে মূর্খতা প্রকাশ করিতেছিল, তাহার পিছনে পিছনে মদ্যপান-প্রভৃতির আসক্তি চলিতে থাকায়, সেই মূর্খতা যেন অনেক সন্তান প্রসব করিয়াছিল। (জ) অনেক লাঠির আঘাতে তাহার গায়ে মাড়ুয়া পড়াইয়াছিল, সুতরাং নিজের ক্রোধটাকেও যেন সে, ফলবানের ন্যায় লোকসমাজে ব্যক্ত করিতেছিল। (ঝ) তাহার ব্যবহারে উৎপীড়িত লোকেরা প্রদীপ জ্বালিয়া তাহার সমস্ত অঙ্গ পোড়াইয়া দেওয়ায় সেই ঘায়ের চিহ্ন সকল তাহার কষ্টের পরিচয় দিত; কিন্তু সেই কষ্টকেও সে, সহাস্যমুখে বহুতর সুখের ন্যায় প্রকাশ করিত।

---

(१) दौःस्थित्यमपि। (२)...अभिघात...। (३)...गण्डकं।

सुखमिव प्रकटयता, (झ) परिभवमपि निष्कारणाक्रुष्ट-(१) जनपद-दत्त-पदाक्रष्टि-शत-सम्प्रवाहमिव (२) दधानेन, (ञ) शुष्क-वनलता-विनिर्म्मित-वृहत्-कुसुमकरण्डकेन, (ट) वेणुलता-रचित-पुष्प-पातनाङ्कुशिकेन, (ठ) क्षण-मप्यमुक्त-काल-कम्बल-खण्ड-खोलेन, (३) जरद्द्रविड़धार्म्मिकेणाधिष्ठितां चण्डिका-मपश्यत (ड)। तस्यामेव च वासमरोचयत् (४)। (ढ)

अथावतीर्य्य तुरगात् प्रविश्य भक्तिप्रवणेन चेतसा तां प्रणनाम। कृतप्रदक्षिणश्च पुनः प्रणम्य प्रशान्तोद्देशदर्शनकुतूहलेन परिभ्रमन्नश्वैरारटन्तमाक्रोशन्तञ्च कुपितं

(ञ) परीति। परिभवमपमानमपि, निष्कारणं आक्रुष्टास्तिरस्कृता ये जनपदा जनपदवासिनो जनास्तैर्दत्तस्य पदाक्रष्टिशतस्य पादप्रहारसमूहस्य सम्प्रवाहं विशालस्रोत इव दधानेन। अत्युत्प्रेक्षा।

(ट) शुष्केति। शुष्काभिर्वनलताभिर्विनिर्म्मितं वृहत् कुसुमकरण्डकं पुष्पपात्रं येन तेन।

(ठ) वेण्विति। वेणुलतया वंशकञ्चिकया रचिता विहिता पुष्पपातनाय अङ्कुशिका येन तेन।

(ड) क्षणमिति। क्षणमपि अमुक्तः अपरित्यक्तः कालकम्बलखण्डस्य खोलः शिरस्त्राणं येन तेन। "खोलकः पाकवल्मीकपूगकोषशिरस्त्रके।" इति विश्वः। जरन् वृद्धो यो द्रविड़धार्म्मिको द्रविड़देशीयो-पासकस्तेन, अधिष्ठितामाश्रिताम्। अत्र जरद्द्रविड़धार्म्मिकवर्णनसमुदाये विविधविशेषणपरिपुष्ट एक एव स्वभावोक्तिरलङ्कारः प्रधानः।

अहो! एषा किल कविकल्पना सुप्रसूतिरिव महाकौतुकप्रसविनी स्वभावेनैवाकर्षति काव्यरसिकान्, इतरांश्च विरक्तीकरोति बाहुल्यात्।

(ढ) तस्यामिति। तस्यामेव चण्डिकायां चण्डिकायतन इत्यर्थः वासमरोचयत् रात्रौ निवासं कर्त्तुमैच्छत्, चन्द्रापीड इति सम्बन्धः।

(ण) अथेति। भक्त्या प्रवणेन प्रह्वेन। प्रशान्ताः शमगुणोद्दीपका ये उद्देशाः स्थानानि तेषां दर्शन-कुतूहलेन। आरटन्तं शब्दायमानं, आक्रोशन्तं सैनिकानधिक्षिपन्तम्।

(ঞ) বিনা কারণে গালি দেওয়ায় দেশীয় লোকেরা তাহাকে যে সকল পদাঘাত করিয়াছিল, তাহার প্রবাহের ন্যায় সে, অপমানও বহন করিতেছিল। (ট) শুষ্ক বনলতাদ্বারা বৃহৎ একটা পুষ্পপাত্র নির্ম্মাণ করিয়াছিল। (ঠ) ফুল পাড়িবার জন্য বাঁশের কঞ্চী দিয়া একটা কৌটা তৈয়ার করিয়াছিল। (ড) এবং কৃষ্ণবর্ণ একখণ্ড কম্বল দ্বারা মাথার একটা টুপি করিয়াছিল, তাহা ক্ষণকালের জন্যও পরিত্যাগ করিত না। (ঢ) চন্দ্রাপীড় রাত্রিতে সেই স্থানেই বাস করিতে ইচ্ছা করিলেন।

(ণ) তদনন্তর চন্দ্রাপীড় অশ্ব হইতে অবতরণ করিয়া, চণ্ডীর গৃহে প্রবেশপূর্ব্বক ভক্তিযুক্ত-চিত্তে তাঁহাকে প্রণাম করিলেন এবং প্রদক্ষিণ করিয়া পুনরায় প্রণামপূর্ব্বক শান্তিকর স্থান-

(१)...आक्रुष्ट...। (२)...शतं प्रवाहमिव,...शतं सम्प्रवाहमिव।

(३) क्षणमप्यामुक्तकालकम्बलखण्डखोलेन। (४) अरचयत्।

द्रविड़धार्म्मिकमेकदेशे ददर्श (ण)। दृष्ट्वा च कादम्बरीविरहोत्कण्ठोद्वेगदूयमानोऽपि सुचिरं जहास। न्यवारयच्च तेन सार्द्धं प्रारब्धकलहान् (१) उपहसतः स्वसैनिकान्। उपशान्त्वनैश्च कथमपि प्रियालापशतानुनयैः प्रशममुपनीय क्रमेण जन्मभूमिं जातिं विद्याञ्च कलत्रमपत्यानि विभवं वयःप्रमाणं प्रव्रज्यायाश्च कारणं स्वयमेव पप्रच्छ (त)। पृष्टश्चासाववर्णयदात्मानम्, अतीत-स्वशौर्य्य-रूप-विभव-वर्णन-वाचालेन तेन सुतरामरज्यत राजपुत्त्रः। विरहातुरहृदयस्य विनोदनतामिवागात्। उपजात-परिचयश्चास्मै ताम्बूलमदापयत् (थ) अस्तमुपगते च भगवति सप्तसप्तौ, आवासितेषु यथासम्पन्न-पादपतलेषु राजसूनुषु, शाखावसक्तापनीतपर्य्याणेषु (२) क्षितितल-लुण्ठन-(३) पांशुल-सटावधूननानुमितोत्-

* (त) दृष्टेति। कादम्बर्य्यां विरहेण या उत्कण्ठा तथा य उद्वेगश्चित्तस्यास्थिरता तेन दूयमानोऽपि सन्तप्यमानोऽपि। प्रियालापानां शतानि च अनुनयाश्च तैः। कथमपि कष्टेन प्रशमं शान्तभावं उपनीय प्रापय्य। विभवं धनसम्पदं। वयःप्रमाणं वयसः परिमाणं। प्रव्रज्यायाः परिव्राजकतायाः।

(थ) पृष्ट इति। असौ द्रविड़धार्म्मिकः। अतीतानां स्वशौर्य्यरूपविभवानां वर्णनेषु वाचालो मुखरस्तेन, तेन द्रविड़धार्म्मिकेण करणेन। सुतरामत्यन्तं। विरहातुरहृदयस्य राजपुत्त्रस्य विनोदनतां विरहजनिताशान्तिनिह्नत्युपायतामगादिव, द्रविड़धार्म्मिक इति शेषः। किञ्चोपजातपरिचयश्चन्द्रापीडः, अस्मै द्रविड़धार्म्मिकाय।

(द) अस्तमिति। सप्त सप्तयः अश्वा यस्य तस्मिन् सप्तसप्तौ सूर्य्ये। राजसूनुषु राजपुत्त्रेषु, यथासम्पन्ना यथाप्राप्ता ये पादपास्तेषां तलेषु आवासितेषु स्थत्यं वासं प्रापितेषु सत्सु। शाखासु अवसक्तानि संलग्नानि अपनीतपर्य्याणानि गात्रव्यापितपल्ययनानि येषां तेषु, क्षितितले लुण्ठनेन पांशुला धूलिव्याप्ता याः सटा जटा-

समूह दर्शन করিবার কৌতুকে পরিভ্রমণ করতঃ এক দিকে ক্রুদ্ধ• দ্রবিড়ধার্ম্মিককে উচ্চৈঃস্বরে চীৎকার করিতে ও সৈন্যগণকে তিরস্কার করিতে দেখিলেন। (ত) দেখিয়া, কাদম্বরীর বিরহে উৎকণ্ঠা ও উদ্বেগবশতঃ সন্তপ্ত হইয়াও বহু সময় হাস্য করিলেন এবং নিজের সৈন্যগণ তাহার সহিত কলহ আরম্ভ করিয়া উপহাস করিতেছিল, তাহাদিগকে নিবারণ করিলেন। তাহার পর সান্ত্বনা, বহুতর প্রিয়বাক্য ও অনুনয় দ্বারা কোন প্রকারে তাহাকে শান্ত করিয়া, ক্রমশঃ জন্মভূমি, জাতি, বিদ্যা, স্ত্রী, সন্তান, ধনসম্পত্তি, বয়সের পরিমাণ ও প্রব্রজ্যার কারণ নিজেই জিজ্ঞাসা করিলেন। (থ) চন্দ্রাপীড় জিজ্ঞাসা করিলে সে, আপনাকে বর্ণনা করিতে লাগিল; সে নিজের অতীত শৌর্য্য, সৌন্দর্য্য ও ধনসম্পত্তি •বর্ণনায় একেবারে মুখর হইয়া উঠিলে, রাজপুত্র তাহা দ্বারা অত্যন্ত আনন্দিত হইলেন; সুতরাং সে যেন বিরহাতুরহৃদয় চন্দ্রাপীড়ের অশান্তি-নিবৃত্তির উপায় হইয়া উঠিল এবং পরিচয় জন্মিলে চন্দ্রাপীড় তাহাকে তাম্বূল দান করাইলেন। (দ) তাহার পর ভগবান্ সূর্য্যদেব অস্তমিত হইলেন, রাজপুত্রগণ যথাপ্রাপ্ত বৃক্ষের তলে সংস্থাপিত হইলেন, ঘোড়াগুলির পালান খুলিয়া গাছের ডালে ঝুলাইয়া

(१) संरब्धकलहान्। (२) शाखावसक्तपनीयपर्य्याणेषु। (३)···लुठन···।

स्नाद्दिषु गृहीत-कतिपय-शष्प-कवलेषु पीतोदकेषु स्नानार्द्र पृष्ठतया विगतश्रमेषु पुरोनिखातकुन्तयष्टिषु संयतेषु वाजिषु, वाजि-समीप-विरचित-पर्णसंस्तरे (१) च दिवस-गमन-खिन्न-परिवर्त्तितयामिके (२) सुषुप्सति सैनिकजने, कृत-बहु-पावक-प्रभा-पीत-तमसि दिवस इव विराजमाने सेनानिवेशे चन्द्रापीड़: परिजने-नैकदेशे संयतस्येन्द्रायुधस्य पुरः परिकल्पितं प्रतीहार-(३) निवेदितं शयनीय-मगात् (द)। निषस्स्य चास्य तत्क्षणमेव पस्पर्श दुःखासिका हृदयम्, अरति-गृहीतश्च विसर्जयाम्बभूव राजलोकम्, अतिवल्लभानपि नाललाप पार्श्वस्थान्,

साभ्यां अवधूननेन कम्पनेन अनुमित उत्साहः पुनर्गमनोद्यमो येषां तेषु, गृहीताः कतिपये शष्पकवला घास-ग्रासा यैस्तेषु, पीतानि उदकानि जलानि यैस्तेषु, स्नानेन आर्द्राणि पृष्ठानि येषां तेषां भावस्तया तथोक्तया हेतुना विगतश्रमेषु, वाजिषु अश्वेषु पुरः अग्रतः निखाताः प्रोथिता याः कुन्तयष्टयस्तासु, संयतेषु बद्धेषु सत्सु। वाजिनामश्वानां समीपेषु विरचिताः शयनाय निर्म्मिताः पर्णसंस्तराः पत्रमयास्तरणानि येन तस्मिन्, दिवसं यावद्गमनेन खिन्नाः किञ्चित् परिश्रान्ता अतएवान्ये परिवर्त्तिता यामिका प्रहरिणो येन तस्मिन्, सुषुप्सति स्वप्तुमिच्छति सति। तथा कृतानां उत्पादितानां बहूनां पावकानामग्नीनां प्रभाभिः पीतानि ग्रस्तानि नाशितानि तमांसि अन्धकारा यस्य तस्मिन् तथोक्ते सेनानिवेशे, रात्रावपि दिवस इव विराजमाने सति। प्रतीहारेण दौवारिकेण निवेदितं, शयनीयं शय्याम्।

(ध) निषस्स्येति। किञ्च, दुःखस्य आसनं आसिका प्राप्तिरिति दुःखासिका। "भावमात्र च दृश्यते" इति वृत्तिस्थितेः "पर्य्यायार्हर्णेषु च" इति आस्धातोर्भावे वुञ्। निषस्स्य शय्यायां स्थितस्य, अस्य चन्द्रापीड़स्य। किञ्च, अरतिगृहीतः सर्व्वेष्वेव विषयेष्वरुचिसम्पन्नः। निमीलितलोचनो मुद्रितनयनः।

রাখিল, তখন ভূতলে লুণ্ঠন করায় তাহাদের জটাগুলি ধূলিতে পরিপূর্ণ হইয়া গেল, আবার সেই জটাগুলি কম্পিত করায় তাহাদের পুনরায় গমনোৎসাহ অনুমিত হইতে লাগিল, কয়েকটি ঘাসের গ্রাস গ্রহণ করিল, জল পান করিল এবং স্নান করায় পৃষ্ঠদেশ আর্দ্র হইয়াছিল বলিয়া পরিশ্রম দূরীভূত হইল; তাহার পর সম্মুখে কুন্ত (শস্ত্রবিশেষ) প্রোথিত করিয়া তাহাতে অশ্বদিগকে বন্ধন করিয়া রাখিল; আর সমস্ত দিন গমন করায় পরিশ্রান্ত প্রহরীদিগকে পরি-বর্ত্তিত করিয়া সৈন্যগণ শয়নের নিমিত্ত অশ্বের নিকটে পর্ণময় শয্যানির্ম্মাণপূর্ব্বক শয়ন করিতে ইচ্ছা করিল; বহুতর অগ্নি প্রজ্বালন করায় তাহার আলোকে অন্ধকার বিনষ্ট করিলে সেনানি-বেশটি দিনের ন্যায় শোভা পাইতে লাগিল; —এমন সময় কোন ভৃত্য, ইন্দ্রায়ুধকে বন্ধন করিয়া তাহার সম্মুখে শয্যা নির্ম্মাণ করিল, কোন দৌবারিক যাইয়া সে সংবাদ জানাইল, তখন চন্দ্রাপীড় সেই শয্যায় শয়ন করিতে গেলেন। (ধ) এবং তিনি সেই শয্যায় অবস্থান করিলে, তখনই দুঃখ আসিয়া তাঁহার হৃদয় স্পর্শ করিল এবং সকল বিষয়েই অরুচি হওয়ায় রাজগণকে বিদায় দিলেন; অত্যন্তপ্রীতিভাজন পার্শ্বচরদিগের সহিতও আলাপ করিলেন না, মুদ্রিতনয়নে

(१)···प्रस्तरे। (२)...परिकल्पितयामिके। (३)...प्रतिहार...।

निमीलितलोचनो मुहुर्मुहुर्मनसा जगाम किम्पुरुषविषयम्, अनन्यचेताः सस्मार हेमकूटस्य, (१) निष्कारण-बान्धवतामचिन्तयन्महाश्वेतापादानाम्, जीवितफलमभिललाष पुनः पुनः कादम्बरीदर्शनम्, अपगताभिमानपेशलाय नितरामस्पृहयन्मदलेखापरिचयाय, तमालिकां द्रष्टमाचकाङ्क्ष, केयूरकागमनमुत्प्रैक्षत, हिमगृहकमपश्यत्, उष्णमायतं (२) पुनरुक्तं निशश्वास, बबन्ध चाधिकां (३) प्रीतिं शेषहारे, पश्चात् स्थितां पुण्यभागिनीममन्यत पत्रलेखाम्।—एवञ्चानुपजातनिद्र एव तामनयन्निशाम् (ध)। उषसि चोत्थाय तस्य जरद्‌द्रविड़धार्म्मिकस्येच्छया निसृष्टैर्धनविसरैः पूरयित्वा मनोरथम्, अभिमतमभिरमणीयेषु (४) प्रदेशेषु निवसन्नल्पैरेवाहोभिरुज्जयिनीमाजगाम। (न)

किम्पुरुषविषयं किन्नरदेशं मनसा जगाम चिन्तितवानित्यर्थः। हेमकूटस्येति "अधीगर्थदयेषां कर्म्मणीति" कर्म्मणि षष्ठी। महाश्वेतापादानां महाश्वेताया इत्यर्थः, तपस्वितया गुरुत्वात् पादशब्दप्रयोगो बहुवचनञ्च सङ्गच्छते। जीवितफलं जीवनप्रयोजनस्वरूपं कादम्बरीदर्शनं। अपगतेन अभिमानेन हेतुना पेशलो मनोहरस्तस्मै। उत्प्रैक्षत सम्भावितवान् आत्मतुलनया कादम्बर्य्या अप्युत्कण्ठितत्वेन तथैव प्रेषणसम्भवादिति भावः। अपश्यनसीति शेषः, चिन्तितवानित्यर्थः। आयतं दीर्घं, पुनरुक्तं वारंवारम्। शेषहारे शेषाख्यायां मुक्तामालायां। बबन्ध चकार। पुण्यभागिनीममन्यत कादम्बरीदर्शनप्राप्तेरिति भावः। एवञ्च अनेनैव प्रकारेण। एषु प्रायेणैव कादम्बर्य्या उत्कण्ठावशादिति भावः।

(न) उषसीति। इच्छया निसृष्टैस्तदभिलाषानुसारेणैव दत्तैः, धनानां विसरैः समूहैः। अभिरमणीयेषु सर्व्वत एव मनोहरेषु प्रदेशेषु अभिमतं यथा स्यात्तथा निवसन्नित्यन्वयः।

বারংবার কিন্নরদেশ ভাবিতে লাগিলেন, অনন্যমনে হেমকূটপর্ব্বত স্মরণ করিলেন, মহাশ্বেতার অকারণ বন্ধুতা চিন্তা করিলেন, বারংবার কাদম্বরীর দর্শন করাই জীবনের ফল মনে করিয়া তাহাই ইচ্ছা করিতে লাগিলেন, মদলেখার সহিত আলাপ-ব্যবহারে তাহার কোন অহঙ্কার ছিল না বলিয়া সে আলাপ-ব্যবহার বড়ই মনোহর ছিল, তাই পুনরায় সেই আলাপ-ব্যবহার করিতে ইচ্ছা করিলেন; তমালিকাকে দেখিতে আকাঙ্ক্ষা করিলেন, কেয়ূরকের আগমন সম্ভব বলিয়া মনে করিলেন এবং তাঁহার সেই হিমগৃহের কথা মনে পড়িল; তাহার পর তিনি বারংবার উষ্ণ ও দীর্ঘ নিশ্বাস ত্যাগ করিতে লাগিলেন, শেষনামক হারছড়াকে খুব ভালবাসিতে লাগিলেন এবং পশ্চাৎ-বর্ত্তিনী পত্রলেখাকে পুণ্যবতী বলিয়া মনে করিলেন—এই ভাবে সে রাত্রিতে তাঁহার নিদ্রা জন্মিল না; তাই জাগরিত অবস্থাতেই সে রাত্রি অতিবাহিত করিলেন। (ন) এবং প্রভাতকালে গাত্রোত্থান করিয়া সেই বৃদ্ধ দ্রবিড়-ধার্ম্মিকের ইচ্ছানুসারে বহুতর ধন দানপূর্ব্বক তাহার অভিলাষ পূর্ণ করিয়া, পথে সুন্দর সুন্দর স্থানে ইচ্ছানুসারে বাস করতঃ অল্পদিনেই উজ্জয়িনীতে আসিলেন।

---

(१) हेमकूटस्य रम्यतां। (२) उष्णमुष्णमायतं। (३) बबन्ध बान्धवेभ्यश्चाधिकां। (४) अभिमतेष्वतिरमणीयेषु।

आकस्मिकागमनप्रहृष्टसम्भ्रान्तानां पौराणामर्घकमलानीव नमस्काराञ्जलिसहस्राणि प्रतीच्छन्नतर्कित एव विवेश (१) नगरीम् (प)। अहमहमिकया च प्रधावितादतिहर्षरसविह्वलात् परिजनात् (२) "देव! द्वारि चन्द्रापीड़ो वर्त्तते" इत्युपलभ्यास्य पिता निर्भरानन्दमन्दगमनो मन्दर इव क्षीरोदजलमुत्तरीयांशुकममलमागलितमाकर्षन्, प्रहर्षनेत्रजलविन्दुवर्षी मुक्तमुक्ताफलासार इव (३) कल्पपादपः, प्रत्यासन्नवर्त्तिभिर्जरापाण्डुमौलिभिश्चन्दनविलेपनैरनुपहतक्षौमधारिभिः केयूरिभिरुष्णीषिभिः किरीटिभिः शेखरिभिर्बहुकैलासामिव बहुक्षीरोदामिव क्षितिं दर्शयद्भिः प्रतिपन्नासि-वेत्र-च्छत्र-केतु-चामरैरनुगम्यमानो राजसहस्रैश्चरणा-

---

(प) आकस्मिकेति। आकस्मिकेन असम्भावितेन आगमनेन प्रहृष्टाश्च ते सम्भ्रान्ताः सत्वराश्चेति ते तथोक्तास्तेषां। अर्घकमलानीव पूजार्थपद्मानीव। प्रतीच्छन् गृह्णन्। अत्रोपमालङ्कारः।

(फ) अहमिति। किञ्च। उपलभ्य ज्ञात्वा। अस्य चन्द्रापीड़स्य, पिता तारापीड़ः। निर्भरेण अतिमात्रेण आनन्देन मन्दं मन्थरं गमनं यस्य सः। मन्दरः समुद्रमन्थनसमये मन्दराचलः क्षीरोदस्य सागरस्य जलमिव, आगलितं स्कन्धदेशाद्विच्युतं अमलं उत्तरीयांशुकं आकर्षन्। अत्रोपमावृत्त्यनुप्रासयोः संसृष्टिः। प्रहर्षनेत्रजलविन्दून् आनन्दाश्रुकणान् वर्षतीति सः, अतएव मुक्तस्त्यक्तः मुक्ताफलानां आसारो धारा येन स तादृशः कल्पपादप इव विद्यमानः। अत्रोपमालङ्कारः। प्रत्यासन्नवर्त्तिभिः सर्वदा सहचारिभिरित्यर्थः। जरया वार्द्धकेन पाण्डवः शुभ्राः मौलयो मस्तकानि येषां तैः। अनुपहतानि अच्छिन्नानि क्षौमाणि पट्टवसनानि धारयन्तीति तैः। बहवः कैलासाः पर्वता यस्यां तामिव, तथा बहवः क्षीरोदाः समुद्रा यस्यां तामिव, क्षितिं भुवं दर्शयद्भिः प्रकटयद्भिः, समानशुभ्रत्वादात्मनामिव कैलासक्षीरोदयोस्तुल्यत्वादिति भावः। अत्र जात्युत्प्रेक्षयोर्मिथो निरपेक्षतया संसृष्टिः। तथा प्रतिपन्नानि विनयप्रदर्शनाय धृतानि असि-वेत्र-छत्र-केतु-चामराणि यैस्तैः, राजसहस्रैः सामन्तसमूहैरनुगम्यमानः सन्।

(प) চন্দ্রাপীড়ের আকস্মিক আগমনে পুরবাসিগণ আনন্দে ব্যস্ত হইয়া পড়িল, তখন পূজার পদ্মের ন্যায় নমস্কার করিবার সময়ে তাহাদের অঞ্জলিসমূহ গ্রহণ করতঃ চন্দ্রাপীড়, সকলের আতর্কিতভাবেই রাজধানীতে প্রবেশ করিলেন। (ফ) তাহার পর রাজ-পরিজনবর্গ আনন্দে বিহ্বল হইয়া, 'আমি আগে আমি আগে' এইরূপে ধাবিত হইয়া রাজার নিকট যাইয়া বলিল—"মহারাজ! চন্দ্রাপীড় দ্বারে উপস্থিত হইয়াছেন।" চন্দ্রাপীড়ের পিতা তারাপীড় পরিজনবর্গের নিকট এই সংবাদ জানিয়া, অত্যন্ত আনন্দবশতঃ মন্থর গতিতে চরণ দ্বারাই চন্দ্রাপীড়ের প্রত্যুদ্গমন করিলেন; তখন মন্দর পর্ব্বত যেমন ক্ষীরোদসাগরের জল আকর্ষণ করিয়াছিল, সেইরূপ তিনি বিগলিত নির্ম্মল উত্তরীয় বসন আকর্ষণ করিতেছিলেন এবং আনন্দাশ্রু বর্ষণ করায় তিনি মুক্তাবর্ষী কল্পবৃক্ষের ন্যায় বিরাজ করিতেছিলেন; আর সর্ব্বদা সহচর, বার্দ্ধক্যনিবন্ধন শুভ্রমস্তক, চন্দনাঙ্গরাগশালী ও অচ্ছিন্ন পট্টবসনধারী এবং কেয়ূর, উষ্ণীষ, কিরীট ও শিরো-

---

(१) आविवेश। (२) प्रधावितानतिरभसहर्षविह्वलान् परिजनान्। (३) क्वचित् मुक्तपदं नास्ति।

भ्यामिव प्रत्युज्जगाम (फ)। चन्द्रापीडोऽपि दृष्ट्वा (१) पितरं दूरादेवावतीर्य्य वाजिनश्चूडामणिमरीचिमालिना मौलिना महीमगच्छत् (ब)। अथ प्रसारितभुजेन "एह्येहि" इत्याहूय पित्रा गाढ़मुपगूढ़ः सुचिरं परिष्वज्य तत्-कालसन्निहितानाञ्च माननीयानां कृतनमस्कारः करे गृहीत्वा विलासवतीभवन-मनीयत राज्ञा (भ)। तयापि तथैव सर्वान्तःपुरपरिवारया प्रत्युद्गम्याभि-नन्दितागमनः (२) कृतागमनमङ्गलाचारो दिग्विजयसम्बद्धाभिरेव कथाभिः कञ्चित् कालं स्थित्वा शुकनासं द्रष्टुमाययौ (म)। तत्राप्यमुनैव क्रमेण सुचिरं स्थित्वा निवेद्य वैशम्पायनं स्कन्धावारवर्त्तिनं कुशलिनं, आलोक्य च मनोरमां, आगत्य विलासवतीभवन एव सर्वाः स्नानादिकाः परवश इव क्रिया निरवर्त्तयत। अपराह्ने

(ब) चन्द्रेति। वाजिनो घोटकात्। चूडामणेर्मरीचिमाला अस्यास्तीति तेन, मौलिना मस्तकेन, महीं भूमिं, अगच्छत् प्राप्नोत् अस्पृशदित्यर्थः, नमस्कारार्थमिति भावः। अत्र छेकानुप्रासोऽलङ्कारः।

(भ) अथेति। उपगूढ़ आलिङ्गितः सन् सुचिरं परिष्वज्य पितरं प्रत्यालिङ्ग्येत्यर्थः। माननीयानां जनानामिति सम्बन्धविवक्षया षष्ठी। कृतो नमस्कारो येन स तथोक्तश्चन्द्रापीडः।

(म) तयेति। सर्वाणि अन्तःपुराणि अन्तःपुरस्थजनाः परिवारा यस्यास्तया, तयापि विलासवत्यापि। अभिनन्दितं आगमनं यस्य सः, तथा कृत आगमनस्य मङ्गलाचारो यस्य स चन्द्रापीडः।

(य) तत्रेति। परवश इव पराधीन इव, कादम्बर्य्युत्कण्ठया शून्यहृदयत्वादिति भावः। निरवर्त्तयत् निष्पादितवान्।

মাল্য-সমন্বিত সামন্তরাজগণ, পৃথিবীকে বহুতর কৈলাসপর্ব্বত এবং বহুতর ক্ষীরোদসাগর-সম্পন্নের ন্যায় দেখাইতে দেখাইতে, তরবারি, বেত্র, ছত্র, ধ্বজ ও চামর ধারণ করিয়া মহারাজ-তারাপীড়ের অনুগমন করিলেন। (ব) চন্দ্রাপীড়ও পিতাকে দেখিয়া দূর হইতেই অশ্ব হইতে অবতরণ করিয়া চূড়ারত্নের কিরণজালব্যাপ্ত মস্তক দ্বারা ভূতল স্পর্শ করিলেন। (ভ) তদনন্তর পিতা তারাপীড় "এস এস" এই ভাবে আহ্বান করিয়া বাহুযুগল প্রসারণ-পূর্ব্বক গাঢ় আলিঙ্গন করিলেন; চন্দ্রাপীড়ও বহুকাল যাবৎ পিতাকে প্রত্যালিঙ্গন করিয়া, সেই সময়ে নিকটবর্ত্তী মাননীয় ব্যক্তিদিগকে নমস্কার করিলেন; তাহার পর রাজা হস্ত ধারণ করিয়া চন্দ্রাপীড়কে বিলাসবতীর গৃহে নিয়া গেলেন। (ম) বিলাসবতীও সেই ভাবেই অন্তঃপুরস্থ সকল রমণীগণে পরিবৃত হইয়া প্রত্যুদ্গমনপূর্ব্বক, চন্দ্রাপীড়ের আগমনের অভি-নন্দন করিয়া মঙ্গলাচরণ সম্পাদন করিলেন; তাহার পর চন্দ্রাপীড় দিগ্বিজয়সংক্রান্ত নানাবিধ কথোপকথনে সেখানে কিছুকাল থাকিয়া শুকনাসকে দেখিতে গেলেন। (য) সেখানেও সেই ভাবেই অনেক সময় থাকিয়া 'বৈশম্পায়ন সৈন্যগণের ভিতরে রহিয়াছেন এবং ভাল আছেন' এই কথা জানাইয়া, মনোরমার সহিত সাক্ষাৎ করিয়া, ফিরিয়া আসিয়া, বিলাসবতীর গৃহেই স্নানাদি সমস্ত কার্য্য পরাধীনের ন্যায় হইয়া সম্পাদন করিলেন এবং অপরাহ্নে নিজের

(१) क्वचित् चन्द्रापीडोऽपीति न दृश्यते। दृष्ट्वा च। (२) प्रत्युद्गमाभिनन्दितागमनः।

निजमेव भवनं (१) आयासीत् (य)। अत्र च रणरणक-खिद्यमान-मानसः कादम्बर्य्या विना न केवलमात्मानं स्वभवनमवन्तीनगरं वा सकलमेव महीमण्डलं शून्यममन्यत (र) ततो गन्धर्वराजपुत्रीवार्त्ताश्रवणोत्सुकश्च महोत्सवमिव ईप्सितवरप्राप्तिकालमिव अमृतोत्पत्तिसमयमिव पत्रलेखागमनं प्रत्यपालयत्। (ल)

ततः कतिपयदिवसापगमे मेघनादः पत्रलेखामादायागच्छत्, उपानयच्चे-नाम्। कृतनमस्काराञ्च दूरादेव स्मितेन प्रकाशितप्रीतिश्चन्द्रापीड़ः प्रकृतिवल्लभा-मपि कादम्बरीसकाशात् प्रसादलब्धापरसौभाग्यामिव वल्लभतरतामुपागता-मुत्थायातिशयदर्शितादरमालिलिङ्ग पत्रलेखाम्, मेघनादञ्च प्रणतं पृष्ठे करकिसलयेन पस्पर्श (व)। समुपविष्टश्च (२) अब्रवीत्—"पत्रलेखे! कथय, तत्रभवत्या महाश्वेतायाः मदलेखाया देव्याः कादम्बर्य्याश्च कुशलम्? कुशली वा सकलः (३) तमालिका-केयूरकादिपरिजनः?" इति। साब्रवीत्—"देव! यथाज्ञापयसि भद्रम्। त्वामर्च्चयति शेखरीकृताञ्जलिना ससखीजना सपरिजना देवी कादम्बरी"

(र) तत्रेति। रणरणकेन कादम्बर्य्या उत्कण्ठोद्वेगेन खिद्यमानं पीड्यमानं मानसं यस्य सः।

(ल) तत इति। प्रत्यपालयत् प्रतीक्षितवान्। अत्रोपमात्रयस्य मिथोनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

(व) तत इति। एनां पत्रलेखां, उपानयत् चन्द्रापीड़समीपे उपास्थापयत्। प्रकृत्या स्वभावेनैव वल्लभा दयिता तामपि, प्रसादेन अनुग्रहेण लब्धमपरं सौभाग्यं यया तामिव, अतएव वल्लभतरतां अतिशयेन वाल्लभ्यं, उपागतां प्राप्तां पत्रलेखाम्। अतिशयेन दर्शित आदरो यस्मिन् कर्म्मणि तद्यथा तथा आलिलिङ्ग। अत्र क्रियोत्प्रेक्षापदार्थहेतुककाव्यलिङ्गयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(श) समुपेति। मदलेखया सहेति समदलेखा तस्याः। शेखरीकृतः शिरोभूषणीकृतो योऽञ्जलिस्तेन।

বাড়ীতেই গেলেন। (র) সেথানে উৎকণ্ঠাবশতঃ মন অস্থির হইয়া পড়িল এবং কাদম্বরীর বিরহে কেবল আপনাকে, নিজের বাটীকে এবং উজ্জয়িনী নগরীকে নহে—সমস্ত ভূমণ্ডলকেই শূন্য বলিয়া মনে করিতে লাগিলেন। (ল) তাহার পর গন্ধর্ব্বরাজনন্দিনী কাদম্বরীর বৃত্তান্ত শুনিবার জন্য উৎসুক হইয়া, মহোৎসবের ন্যায়, অভীষ্ট বর-লাভ-সময়ের ন্যায় এবং অমৃতের উৎপত্তিকালের ন্যায় পত্রলেখার আগমনের প্রতীক্ষা করিতে লাগিলেন।

(ব) তাহার পর কয়েক দিন অতীত হইলে মেঘনাদ পত্রলেখাকে নিয়া আসিল এবং তাহাকে চন্দ্রাপীড়ের নিকটে উপস্থিত করিল; তখন পত্রলেখা নমস্কার করিলে চন্দ্রাপীড় দূর হইতেই ঈষৎ হাস্য করিয়া তাহার প্রতি প্রণয় প্রকাশ করিলেন এবং সে, স্বভাবতই প্রীতিভাজন হইলেও কাদম্বরীর নিকট হইতে অনুগ্রহে অন্য সৌভাগ্য লাভ করিয়াছিল বলিয়াই যেন আরও বেশী প্রীতিভাজন হইয়াছিল; তাই চন্দ্রাপীড় উঠিয়া অত্যন্ত আদর দেখাইয়া তাহাকে আলিঙ্গন করিলেন এবং মেঘনাদ নমস্কার করিলে করপল্লব দ্বারা তাহার পৃষ্ঠে স্পর্শ করিলেন। (শ) তাহার পর উপবেশন করিয়া বলিলেন—"পত্রলেখে! বল,—মাননীয়া মহাশ্বেতাদেবী ও

(१) कुमारभवनं। (२) समुपविष्टश्च। (३) बाह्यः सकलः।

इति (ञ)। एवमुक्तवतीं पत्रलेखामादाय मन्दिराभ्यन्तरं विसर्जितराजलोको विवेश। तत्र चोत्ताम्यता मनसा धारयितुमपारयन् कुतूहलम्, अतिप्रीत्या दूरमुत्सारित-परिजनः प्रविश्यागार-प्ररूढ़ायाः स्थलकमलिन्याः पृथुभिरुन्नालैः पलाशैरुपरचितातपत्रकृत्यायाः (१) मध्यास्य मध्यभागमन्यतरस्य मरकतपताकायमानस्य पत्रमण्डपस्य तले चरणारविन्देन समुत्सार्य्य सुखप्रसुप्तं हंसमिथुनमुपविश्याप्राक्षीत् (ष) "पत्रलेखे! कथय, आगते मयि (२) कथमसि स्थिता? कियन्ति वा दिनानि? कीदृशो वा देवीप्रसादः? का वा गोष्ठ्यः समभवन्? कीदृश्यो वा कथाः समजायन्त? को वातिशयेनास्मान् स्मरति? कस्य वा गरीयसी प्रीतिः" इति (स)। एवं पृष्टा च व्यजिज्ञपत्—"देव! दत्तावधानेन श्रूयताम्, यथा स्थितास्मि, यावन्ति वा दिनानि, यादृशो वा देवीप्रसादः

(ष) एवमिति। विसर्जितः परित्यक्तो राजलोकः सामन्तवर्गो येन स तथोक्तश्चन्द्रापीडः। उत्ताम्यता कादम्बरीविरहेण अस्थिरतां गच्छता। धारयितुं सम्वरीतुं। अगारप्ररूढ़ाया गृहाभ्यन्तरजातायाः, पृथुभिर्विशालैः, तथा उन्नतानि उच्छ्रितानि नालानि येषां तैः, पलाशैः पत्रैः, उपरचितं कृतं आतपत्रकृत्यं छत्रकार्य्यं यया तस्याः स्थलकमलिन्याः, मध्यभागं अध्यास्य अधिष्ठाय। मरकतपताकायमानस्य मरकतमणिनिर्म्मित-पताकावदाचरतः।

(स) पत्रेति। कियन्ति वा दिनानि स्थितासीति शेषः। देव्या कादम्बर्य्याः प्रसादोऽनुग्रहः। गोष्ठ्यः परस्परालापाः। "गोष्ठी सभायां संलापे" इति विश्वः। प्रीतिर्म्मयीति शेषः।

মদলেখার সহিত কাদম্বরী দেবীর মঙ্গল ত? এবং তমালিকা ও কেয়ূরক প্রভৃতি সমস্ত পরিজনবর্গ ভাল আছে ত?।" পত্রলেখা বলিল—"রাজপুত্র! আপনি যেরূপ বলিতেছেন; তাহাদের সকলেরই মঙ্গল। সখীজন ও পরিজনগণের সহিত কাদম্বরী দেবী মস্তকে অঞ্জলিপুট স্থাপন করিয়া আপনাকে নমস্কার করিয়াছেন।" (ষ) পত্রলেখা এইরূপ বলিলে তাহাকে লইয়া এবং রাজগণকে বিদায় দিয়া গৃহমধ্যে প্রবেশ করিলেন; সেখানেও উতলা মনে কৌতুক সংবরণ করিতে না পারিয়া, অত্যন্ত প্রীতিবশতঃ পরিজনদিগকে দূরে সরাইয়া ভিতরে প্রবেশ করিলেন; সেই গৃহের অভ্যন্তরদেশেই একটি স্থলপদ্মিনী জন্মিয়াছিল, সে বিস্তৃত ও উন্নাল পত্র সমূহ দ্বারা ছত্রের কার্য্য করিতেছিল; তাহার মধ্য এবং মরকতমণি-নির্ম্মিত পতাকার ন্যায় অপর একটি পত্রমণ্ডপের তলে উপবেশন করিয়া চন্দ্রাপীড় চরণারবিন্দদ্বারা সুখসুপ্ত দুইটি হংসকে সরাইয়া জিজ্ঞাসা করিলেন। (স) "পত্রলেখে! বল, আমি আসিলে পর তুমি কি ভাবে ছিলে? কয় দিনই বা ছিলে? কাদম্বরীদেবীর অনুগ্রহই বা তোমার উপর কিরূপ হইয়াছিল? পরস্পর আলাপই বা কি হইয়াছিল? প্রস্তাবই বা কিরূপ হইত? কেই বা আমাকে অধিক স্মরণ করিত? এবং আমার প্রতি কাহারই বা অধিক প্রীতি জানিয়াছ?।"

(१) अगारमचिरप्ररूढ़ायाः। (२) क्वचित् आगते मयीति पाठो नास्ति।

यथा वा गोष्ठ्यः समभवन्, यादृश्यश्च कथाः समजायन्त, यो वातिशयेन तव स्मरति, यस्य वा त्वयि गरीयसी प्रीतिरस्तीति। (ङ)

"ततः खल्वागते देवे केयूरकेण सह प्रतिनिवृत्याहं तथैव कुसुम-शयनीय-समीपे समुपाविशम्, अतिष्ठञ्च सुखं नवनवाननुभवन्ती देवीप्रसादान् (च)। किं बहुना, प्रायेण मम चक्षुषि चक्षुः, वपुषि वपुः, करे करपल्लवः, (१) नामाक्षरेषु वाणी, प्रीतौ हृदयं देव्याः सकलमेव तं दिवसमभवत् (क)। अपराह्णे च मामेवावलम्ब्य निष्क्रम्य हिमगृहकात् सञ्चरन्ती यदृच्छया निषिद्धपरिजना वल्लभबालोद्यानं जगाम। तत्र सुधाधवलां कालिन्दीजलतरङ्गमय्येव मरकत-

(ङ) एवमिति। किञ्च, एवं पृष्टा पत्रलेखेति शेषः। दत्तं यदवधानमेकायतता तेन।

(च) तत इति। तथैव पूर्व्ववदिव, कुसुमशयनीयसमीपे कादम्बर्याः पुष्पशय्यानिकटे।

(क) किमिति। मम चक्षुषि चक्षुरित्यनेन मद्दर्शनातिरेकः, वपुषि वपुरित्यनेन सम्मेलनाधिक्यं, करे करपल्लव इत्यनेन मयि प्रेमातिशयः, मम नामाक्षरेषु वाणी वाक्यं एतेन वारं वारं मम नामोच्चारणं, मम प्रीतौ च हृदयमित्यनेन च मम प्रीतिजनने चित्तैकायतता व्यज्यते। अत्र अभवदित्येकया क्रियया बहूनां कर्त्तृतयाभिसम्बन्धात्तुल्ययोगितालङ्कारः। दिवसमिति "अभिविधौ कालाध्वमाना"दिति द्वितीया।

(ख) अपेति। यदृच्छया स्वेच्छया। वल्लभं प्रियं यद्बालोद्यानं नूतनोपवनं तत्। कालिन्द्या यमुनायाः जलतरङ्गैर्निर्म्मितेति कालिन्दीजलतरङ्गमयी तयेव, नीलत्वसाम्यादिति भावः, मरकतसोपानमालया करणेन, सुधया चूर्णलिप्तेन धवला तां, प्रमदवनस्य वेदिका परिष्कृतोच्चभूमिस्ताम्। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ঙ) এইরূপ জিজ্ঞাসা করিলে পত্রলেখা জানাইল—"রাজকুমার! মনোযোগ দিয়া শুনুন, আমি যে ভাবে ছিলাম, যতদিন ছিলাম, কাদম্বরীর যেরূপ অনুগ্রহ হইয়াছিল, পরস্পর যে সকল আলাপ হইত, যেরূপ প্রস্তাব চলিত, যে আপনাকে অধিক স্মরণ করিত এবং আপনার প্রতি যাহার অধিক প্রণয় জানিয়াছি।"

(চ) "আপনি সেখান হইতে আসিলে আমি কেয়ূরকের সহিত ফিরিয়া যাইয়া, পূর্ব্বের ন্যায় কাদম্বরীদেবীর পুষ্পশয্যার নিকটে উপবেশন করিলাম এবং তাঁহার নূতন নূতন অনুগ্রহ অনুভব করতঃ সুখে অবস্থান করিতে লাগিলাম। (ক) অধিক আর কি বলিব, সেই সমস্ত দিনটার মধ্যে প্রায়ই আমার চোখে চোখ, আমার শরীরে শরীর, আমার হস্তে হস্তপল্লব, আমার নাম-বর্ণে বাক্য এবং আমার সন্তোষ-সাধনেই দেবীর মন ছিল। (খ) তাহার পর অপরাহ্ণকালে আমাকে লইয়াই হিমগৃহ হইতে বাহির হইয়া ইচ্ছানুসারে বিচরণ করতঃ, পরিজনদিগকে সঙ্গে আসিতে নিষেধ করিয়া, প্রীতিকর নূতন উপবনে গমন করিলেন ; সেখানে যমুনার জলতরঙ্গ দ্বারা নির্ম্মিতের ন্যায় মরকতমণির সোপানশ্রেণী দ্বারা প্রমদবনের শুভ্রবর্ণ বেদিকার উপরে আরোহণ করিলেন। (গ) সেই বেদিকার উপরে একটি মণিময়স্তম্ভ অবলম্বন

(१) करपल्लवं।

सोपानमालया प्रमदवनवेदिकामध्यारोहत् (ख)। तस्याश्च मणिस्तम्भावष्टम्भस्थिता स्थित्वा च मुहूर्त्तमिव हृदयेन सह दीर्घकालमवधार्य्य किमपि व्याहर्त्तुमिच्छन्ती निश्चलधृततारकेण निष्पन्दपक्ष्मणा चक्षुषा मुखं मे सुचिरं व्यलोकयत् (ग)। विलोकयन्त्येव च कृतसङ्कल्पा मदनाग्निं प्रविष्टमिच्छन्ती सस्नाविव स्वेदाम्भसः स्रोतसि, (१) स्रोतसेव तरलीकृता समकम्पत, कम्पिताङ्गी च पतनभियेवाग्रह्यत विषादेन। (घ)

अथ मया विदिताभिप्रायया तन्मुख-विनिवेशित-निष्कम्प-नयन-दत्तावधानया 'आज्ञापय' इति विज्ञापिते निजावयवैरपि वेपथुमद्भिर्निवार्य्यमाणेव, रहस्य-श्रवण-लज्जया आत्मप्रतिमामपि लिखित-मणिकुट्टिमेन चरणाङ्गुष्ठेनापक्रमायेवा-

(ग) तस्यामिति। किञ्च। मणिस्तम्भस्य अवष्टम्भेन आश्रयेन अवलम्बनेन स्थिता हृदयेन सह दीर्घकालमवधार्य्य मनसा सह बहुकालं सम्मन्त्रयेन निश्चित्य। व्याहर्त्तुं वक्तुं। निश्चलं यथा स्यात्तथा धृता तारका यस्य तेन, निष्पन्दानि पक्ष्माणि लोमानि यस्य तेन।

(घ) विलोकेति। कृतसङ्कल्पा वक्तुं मर्त्तुञ्चेति शेषः। सस्नाविव स्नानं कृतवतीव। अन्योऽपि मर्त्तुकामोऽग्निं प्रवेष्टुमिच्छन् पूर्वं स्नाति। स्रोतसा घर्म्मप्रवाहेण तरलीकृतेव चालितेव सती समकम्पत। अन्योऽपि स्रोतसा तरलीकृतः सन् कम्पते। विषादेन विरहदुःखेन, कम्पिताङ्गी कादम्बरी, पतनभियेव तस्या एव पतनभयेनेव अग्रह्यत अवालम्ब्यत। अन्यमपि मूर्च्छागमादिना कम्पिताङ्गं पतनभयेनापरो गृह्णाति। अत्र प्रथमे द्वे क्रियोत्प्रेक्षे, तृतीया च गुणोत्प्रेक्षा।

(ङ) अथेति। विदितः अभिप्रायः कादम्बर्य्या मनोभावप्रकाशाशयो यया तया, तस्याः कादम्बर्य्याः मुखे विनिवेशिते स्थापिते निष्कम्पे नयने यया सा चासौ दत्तमवधानं यया सा चेति तया। विज्ञापिते विज्ञापने कृते। वेपथुमद्भिः कम्पवद्भिः। अन्योऽपि वेपथुमान् सन् बन्धुमनिष्टान्निवारयति। अत्र क्रियोत्-

पূর্ব্বক কিছুকাল থাকিয়া, মনের সহিত বহুকাল যাবৎ স্থির করিয়া, কোন বিষয় বলিতে ইচ্ছা করতঃ বহুকাল যাবৎ আমার মুখের দিকে চাহিয়া রহিলেন; তখন তিনি নয়নযুগলের তারা দুইটি আমার মুখের উপরে নিশ্চলভাবে রাখিয়াছিলেন এবং নয়নের লোমগুলি নিস্পন্দ হইয়াছিল। (ঘ) এই ভাবে দৃষ্টিপাত করতঃ কৃতসঙ্কল্প হইয়া মদনানলে প্রবেশ করিতে ইচ্ছা করিয়া ঘর্ম্মজলের স্রোতেই যেন স্নান করিলেন, সেই স্রোতে সঞ্চালিত হইয়াই যেন কাঁপিতে লাগিলেন এবং তখন তাঁহার পড়িয়া যাইবার ভয়েই যেন বিষাদ আসিয়া কম্পিতাঙ্গ অবস্থায় তাঁহাকে ধারণ করিল।

(ঙ) তাহার পর আমি অভিপ্রায় বুঝিতে পারিয়া, তাঁহার মুখমণ্ডলে নিশ্চলভাবে নয়নযুগল সংস্থাপন করিয়া, মনোযোগপূর্ব্বক বলিলাম—'দেবি! আপনার মনের ভাব ব্যক্ত করুন' এইরূপ জানাইলে তাঁহার নিজের অঙ্গগুলিও কম্পিত হইয়া যেন তাঁহাকে বারণ

(१) स्वेदाम्भःस्रोतसि।

स्पृशन्ती, भवनकलहंसान् कुट्टिमोल्लेखमुखर-नूपुरेण चरणारविन्देन विसर्जयन्ती, कर्णोत्पलमधुकरानपि खिद्यद्वदन-व्यजनीकृतेन (१) अंशुकपल्लवेनोत्सारयन्ती, ताम्बूलवीटिका-शकलमुत्कोचमिव दन्तखण्डितं शिखण्डिने ददती, वनदेवता-श्रवणशङ्कितेव मुहुर्मुहुरितस्ततो विलोकयन्ती, वक्तुकामापि न शक्नोति स्म किञ्चिदपि लज्जाकलितगद्गदा गदितुम्, (ङ)। प्रयत्नतोऽपि चास्या निःशेषं ज्वलता मदनानलेनेव दग्धा, प्रवहता नयनोदकेनेवोढ़ा, प्रविशद्भिर्दुःखैरिवाक्रान्ता, पतद्भिः कुसुमचापशरैरिव शकलीकृता, निष्पद्भिर्निःश्वसितैरिव (२) निर्वासिता,

प्रेक्षालङ्कारः। रहस्यस्य गुप्तविषयस्य श्रवणलज्जया। अयन्तु उत्तरवाक्येष्वपि हेतुरिति बोध्यम्। लिखितं संघृष्टं मणिकुट्टिमं येन तेन चरणाङ्गुष्ठेन, अपक्रमायेव अपसरणायेव, आत्मप्रतिमामपि स्वप्रतिविम्बमपि आमृशन्ती स्पृशन्ती। क्रियोत्प्रेक्षा। कुट्टिमस्य उल्लेखेन घर्षणेन मुखरं शब्दायमानं नूपुरं यस्य तेन, चरणारविन्देन, भवनकलहंसान् विसर्जयन्ती अपसारयन्तीव। अत्र प्रतीयमाना क्रियोत्प्रेक्षा। खिद्यतो घर्माक्तीभवतो वदनस्य व्यजनीकृतेन अंशुकपल्लवेन चेलाञ्चलेन, कर्णोत्पलमधुकरानपि उत्सारयन्तीव। प्रतीयमाना क्रियोत्प्रेक्षा। शिखण्डिने भवनमयूराय, दन्तैः खण्डितं चर्वितं, ताम्बूलवीटिकायाः शकलं खण्डं उत्कोचमिव अपसरणस्येति भावः, ददती। अन्योऽप्यपसर्त्तुं कस्मैचिदुत्कोचं ददाति। क्रियोत्प्रेक्षा। तथा वनदेवतानां श्रवणात् शङ्कितेव सती। क्रियोत्प्रेक्षा। लज्जया कलितौ विहितौ गद्गदः अस्पष्ट-स्वरो यस्याः सा। गदितुं वक्तुम्।

(च) प्रयत्नत इति। अस्याः कादम्बर्य्या वाणी, निःशेषं सम्पूर्णावयवं यथा स्यात्तथा ज्वलता मदनानलेन दग्धेव सती, प्रवहता नयनोदकेनाम्बुना ऊढ़ा सम्वाह्य नीतेव सती, प्रविशद्भिर्दुःखविवरद्वारेण हृदयं गच्छद्भिर्दुःखैराक्रान्तेव सती, पतद्भिः कुसुमचापस्य मदनस्य शरैः शकलीकृता खण्डीकृता छिन्नेव सती,

করিতে লাগিল; গুপ্ত বিষয় শুনিবার লজ্জায় চরণের অঙ্গুষ্ঠদ্বারা মণিময় ভূতল কর্ষণ করিয়া সরিয়া যাইবার নিমিত্তই যেন নিজের প্রতিবিম্বকেও স্পর্শ করিতে লাগিলেন; মণিময়ভূতল কর্ষণ করায় শব্দায়মান-নূপুর-সংযুক্ত চরণপদ্মদ্বারা গৃহপালিত হংসদিগকে যেন সরাইয়া দিতে লাগিলেন; ঘর্ম্মাক্ত মুখমণ্ডলে বাতাস করিবার জন্য সঞ্চালিত বসনাঞ্চলদ্বারা কর্ণোৎপলস্থিত ভ্রমরদিগকেও যেন তাড়াইয়া দিতেছিলেন; গৃহপালিত ময়ূরটিকে উৎকোচের ন্যায় দন্তচর্বিত তাম্বূলখণ্ড দান করিতে লাগিলেন এবং বনদেবতারা শুনিবেন, এই আশঙ্কায় যেন বারংবার ইতস্ততঃ দৃষ্টিপাত করিতে লাগিলেন; এদিকে লজ্জা আসিয়া কণ্ঠস্বর অস্পষ্ট করিয়া ফেলিল; তাই তিনি বলিতে ইচ্ছা করিলেও কিছুই বলিতে পারিলেন না। (চ) পূর্ণমাত্রায় প্রজ্বলিত মদনানলে যেন তাঁহার বাক্য দগ্ধ করিয়া ফেলিয়াছিল, নয়নজলপ্রবাহে যেন ভাসাইয়া নিয়াছিল, দুঃখসকল হৃদয়ে প্রবেশ করিতে থাকিয়াই যেন আক্রমণ করিয়াছিল, মদনের বাণ পতিত হইতে থাকিয়াই যেন খণ্ড খণ্ড করিয়া ফেলিয়াছিল, নিশ্বাস নির্গত

(१) खिद्यद्वदनव्यजनचितेन। (२) निःश्वसितैरिव, श्वसितैरिव।

हृदयवर्त्तिभिश्चिन्ताशतैरिव विधृता, निश्वासपायिभिः (१) मधुकरकुलैरिव निपीता, न प्रावर्त्तत वाणी (च)। केवलं दुःखसहस्रगणनाय मुक्ताक्षमालिकामिव कल्पयन्ती गलद्भिरस्पृष्टकपोलस्थलैः शुचिभिरधोमुखी नयनजलविन्दुभिर्दुर्द्दिनमदर्शयत्। (छ)

तदा च तस्याः सकाशादशिक्षतेव लज्जापि लज्जालीलाम्, विनयोऽपि विनयातिशयम्, मुग्धतापि मुग्धताम्, वैदग्ध्यमपि वैदग्ध्यम्, भयमपि भीरुताम्, विभ्रमोऽपि विभ्रमिताम्, विषादोऽपि विषादिताम्, विलासोऽपि विलासम्। (ज)

निष्पतद्भिर्निर्गच्छद्भिर्निश्वसितैर्निश्वासवायुभिः निर्वासिता बहिष्कृतेव सती, हृदयवर्त्तिभिश्चिन्ताशतैः विधृता आकृष्टेव सती, निश्वासपायिभिः सौरभातिशयादिति भावः मधुकरकुलैर्भ्रमरगणैः निपीतेव सती च, प्रयत्नेनोऽपि न प्रावर्त्तत मुखान्न निरगच्छत्। अत्र प्रत्येकविशेषण एव क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(छ) केवलमिति। कादम्बरी अधोमुखी सती दुःखसहस्रगणनाय मुक्ताक्षमालिकां मुक्तामयजपमालां कल्पयन्तीव सृजन्तीव, अधोमुखत्वादेवास्पृष्टकपोलस्थलैः सद्भिर्गलद्भिः शुचिभिः शुभ्रवर्णैर्नयनजलविन्दुभिः केवलं दुर्द्दिनं वृष्टिं अदर्शयत्। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। "घनान्धकारे वृष्टौ च दुर्द्दिनं कवयो विदु"रिति साद्यः।

(ज) तदेति। किञ्च, लज्जापि तदा तस्याः कादम्बर्याः सकाशात् लज्जालीलां लज्जाकार्य्यं सङ्कुचितभावं अशिक्षतेव। तथा च इयन्तं कालं यावत् स्थितापि लज्जा स्वकार्य्यं सङ्कुचितभावं न प्रकटितवती, किन्तु तदानीं तस्याः सकाशाच्छिक्षमाणा सती सर्व्वथैव तं प्रकटितवतीति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। तेन च तस्या लज्जातिशयेन सङ्कुचितभावो व्यज्यत इत्यलङ्कारेण वस्तुध्वनिः। अन्यत्रापीदृश एव भावोऽलङ्कारो ध्वनिर्योज्ञेयः। विभ्रमोऽपि अधीरतापि, विभ्रमितामधीरताम्।

হইতে থাকিয়া যেন নির্ব্বাসন করিয়াছিল, হৃদয়স্থিত চিন্তাসমূহে যেন আকর্ষণ করিয়া রাখিয়াছিল এবং নিশ্বাসপায়ী ভ্রমরগণ যেন পান করিয়া ফেলিয়াছিল; তাই তিনি বিশেষ যত্ন করিলেও তাঁহার মুখ হইতে বাক্য নির্গত হইতেছিল না। (ছ) অধোমুখ হইয়া সহস্র দুঃখ গণনা করিবার জন্যই যেন মুক্তাময় জপের মালা নির্ম্মাণ করিতে থাকিয়া, গণ্ড-যুগল স্পর্শ না করিয়া বিগলিত শুভ্রবর্ণ অশ্রুবিন্দুদ্বারা কেবল বৃষ্টিপ্রদর্শন করিতেছিলেন।

(জ) এবং তখন লজ্জাও যেন তাঁহার নিকট হইতে লজ্জার কার্য্য শিক্ষা করিয়াছিল, বিনয়ও যেন অত্যন্ত বিনয় অভ্যাস করিয়াছিল, মুগ্ধতাও (অনভিজ্ঞতাও) যেন মুগ্ধতা শিখিয়াছিল, সৌন্দর্য্যও যেন সৌন্দর্য্য অভ্যাস করিয়াছিল, ভয়ও যেন ভীরুতা শিক্ষা করিয়াছিল, অধৈর্য্যও যেন অধীরতা শিখিয়াছিল, বিষাদও যেন বিষাদ অভ্যাস করিয়াছিল এবং বিলাসও যেন বিলাস শিখিয়াছিল।

---

*(१) निःश्वासपातिभिः, निःश्वासपायिभिः।

तथाभूता च 'देवि! किमिदम्' इति विज्ञापिता मया प्रमृज्य लोहितायमानोदरे लोचने दुःखप्रकर्षेणात्मनः समुद्बन्धनायेव मृणालकोमलया बाहुलतया वेदिका-कुसुम-पालिका-ग्रथित-कुसुममालामवलम्ब्य समुन्नतैकभ्रूलता मृत्युमार्गं (१) इवावलोकयन्ती दीर्घमुष्णञ्च निश्वसितवती (झ)। तद्दुःखमुत्प्रेक्षमाणया च (२) कथनाय पुनः पुनरनुबध्यमाना मया व्रीड़या नख-मुख-विलिखित-केतकीदला (३) लिखित्वेव वक्तव्यमर्पयन्ती विवक्षास्फुरिताधरा निश्वासमधुकरानिवोपांशु सन्दिशन्ती क्षितितल-निहित-निश्चल-नयना सुचिरमतिष्ठत्। (ञ)

क्रमेण च भूयो मन्मुखे निधाय दृष्टिं पुनः पुनरप्यापूर्य्यमाणलोचनच्युतैर्मदनानलधूमधूसरां वाचमिव प्रक्षालयन्ती वाष्पजलविन्दुभिः, वाष्पजलविन्दुव्याजेन च

(झ) तथेति। लोहितायमाने अविरतरोदनादारक्तवर्णे उदरे अभ्यन्तरद्वयं ययोस्तादृशे लोचने प्रमृज्य। दुःखप्रकर्षेण कष्टातिरेकेण। वेदिकाकुसुमानां या पालिका रक्षिका दासी तया ग्रथिता या कुसुममाला तां। समुन्नता एका भ्रूलता यस्याः सा, अतएव मृत्युमार्गमवलोकयन्तीव सती। अत्र प्रथमा फलोत्प्रेक्षा द्वितीया क्रियोत्प्रेक्षा तयोश्च परस्परनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

(ञ) तदिति। किञ्च, तस्याः कादम्बर्य्या दुःखं उत्प्रेक्षमाणया सम्भावयन्त्या मया। अनुबध्यमाना अनुरुध्यमाना। व्रीड़या लज्जया। नखमुखेन नखाग्रेण विलिखितं संघृष्टं केतकीदलं यया सा, अतएव वक्तव्यं विषयं लिखित्वा अर्पयन्तीव। विवक्षया स्फुरितः अधरो यस्याः सा, अतएव निश्वासमधुकरान् निश्वासपानार्थागतभ्रमरान् उपांशु निभृतं सन्दिशन्तीव, क्षितितले निहिते स्थापिते निश्चले नयने यया सा तथोक्ता सती। अत्रापि क्रियोत्प्रेक्षयोः पूर्व्ववत् संसृष्टिः।

(ट) क्रमेणेति। भूयः पुनरपि। आपूर्य्यमाणाभ्यां लोचनाभ्यां च्युतैर्गलितैः वाष्पजलविन्दुभिः,

(ঝ) তিনি সেইরূপ হইলে আমি জিজ্ঞাসা করিলাম—"দেবি! এ ব্যাপারটা কি?" তখন তিনি আরক্তমধ্য নয়নযুগল মার্জ্জনা করিয়া, অত্যন্তঃখবশতঃ নিজের উদ্বন্ধনের নিমিত্তই যেন মৃণালতুল্য কোমল বাহুলতা দ্বারা বেদিকা-পুষ্প-রক্ষিণী দাসীকর্তৃক গ্রথিত পুষ্পমালা ধারণ করিয়া এবং একটি ভ্রূ উন্নমিত করিয়া মৃত্যুর পথই যেন দেখিতে লাগিয়া, দীর্ঘ ও উষ্ণ নিশ্বাস ত্যাগ করিলেন। (ঞ) আমি তাঁহার মনের দুঃখ সম্ভাবনা করিয়া বলিবার জন্য বারংবার অনুরোধ করিতে লাগিলাম; তখন তিনি লজ্জাবশতঃ নখাগ্রদ্বারা কেতকীপুষ্পের, একটি দলের উপরে রেখাপাত করিতে থাকায় বক্তব্য বিষয় লিখিয়াই যেন সমর্পণ করিতে লাগিলেন এবং বলিবার ইচ্ছা করায় অধর স্পন্দিত হইয়া উঠিল; তাই তিনি নিশ্বাসপানার্থ আগত ভ্রমরদিগের নিকটেই যেন গোপনে বলিতে লাগিলেন—এই অবস্থায় নয়নযুগল ভূতলে নিশ্চলভাবে রাখিয়া অনেক কাল রহিলেন।

(ট) ক্রমে পুনরায় আমার মুখের উপরে দৃষ্টি রাখিয়া, পরিপূর্ণ নয়ন হইতে বিগলিত

(१) मृत्युपाथं। (२) तद्दुःखकारणं। (३)···विलिखितैककेतकीदला।

विलक्ष-स्मित-स्फुरितैर्दशनांशुभिः साध्वस-विस्मृतान् पूर्वान् (१) अभिधेय-वर्णानिव ग्रथ्नती कथमपि व्याहाराभिमुखमात्मानमकरोत् (ट)। अब्रवीच्च माम्—"पत्रलेखे! वल्लभतया तस्मिन् स्थाने न तातो नाम्बा न महाश्वेता न मदलेखा न जीवितम्, यत्र मे भवती दर्शनात्प्रभृति प्रियासि। न जाने केनापि कारणेनापहसित-(२) सकलसखीजनं त्वयि विश्वसिति (३) मे हृदयम् (ठ)। कमपरमुपालभे, कस्य वान्यस्य कथयामि परिभवम्, केन वान्येन साधारणीकरोमि दुःखम् (ड)। दुःखभारमिममसह्यमद्य (४) निवेद्य भवत्यास्त्यक्ष्यामि

मदनानलस्य धूमेन धूसरां वाचं स्वयमुद्वार्यमाणं वाक्यं प्रक्षालयन्तीव सती। किञ्च, विलक्षस्मितं लज्जायुक्तं मन्दहास्यं तेन स्फुरितैर्दशनांशुभिर्दन्तकिरणैः, साध्वसेन भयेन विस्मृतान्, पूर्वान् पूर्वावधारितान् वाष्पजल-बिन्दुव्याजेन स्थितानिति शेषः, अभिधेयवर्णान् वक्तव्यार्थबोधकाक्षराणि ग्रथ्नतीव सती। अत्र वाष्पजलबिन्दूनां वर्तुलतादिरूपत्वेन वर्णसाम्यं दन्तकिरणानाञ्च विततत्वेन सूत्रसाम्यं, सुतराञ्च तेभ्यो ग्रथनमुपपद्यत इति बोध्यम्। आत्मानं व्याहाराभिमुखं कथनायोद्यतमकरोत्। अत्र सापह्नवा क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ठ) अब्रवीदिति। स्थाने विषये। भवती त्वम्। अपक्रान्तो हसादित्यपहसः स जात इत्यपहसितः, करोत्यर्थे नन्तादपहसशब्दात् कर्मणि क्तः। अपहसिता निष्कासिताः सकलाः सखीजना येन तत्, मे मम हृदयं कर्तृ, केनाप्यनिर्वचनीयेन कारणेन त्वयि विश्वसिति, इति न जाने इत्यन्वयः।

(ड) कमिति। उपालभे निन्दामि। परिभवं मदनकृतमत्याचारम्। साधारणीकरोमि विभज्यामीत्यर्थः।

(ढ) दुःखेति। भवत्यास्तव समीपे। दुःखस्य भारोऽतिरेकस्तम्। जीवितं जीवनम्।

বাষ্পবিন্দু দ্বারা, কামাগ্নির ধূমে ধূসরবর্ণ বাক্যকে বারংবার যেন প্রক্ষালন করিতে লাগিলেন এবং লজ্জার সহিত ঈষৎ হাস্য করায় দন্তের কিরণগুলি প্রকাশিত হইতে লাগিল; তাহাতে বোধ হইতেছিল যে—ভয়বশতঃ পূর্ব্বনির্দ্দিষ্ট বক্তব্য বিষয়ের বর্ণগুলি ভুলিয়া গিয়াছিলেন, বাষ্পবিন্দুচ্ছলে অবস্থিত সেই বর্ণগুলিকেই যেন দন্তরশ্মি দ্বারা গাঁথিতেছিলেন—এই অবস্থায় কোন প্রকারে আপনাকে আপনি বলিতে উদ্যত করিলেন। (ঠ) তাহার পর আমাকে বলিলেন—"পত্রলেখে! দর্শনাবধি যে বিষয়ে তুমি আমার প্রিয় হইয়াছ; সে বিষয়ে পিতা নহেন, মাতা নহেন, মহাশ্বেতা নহে, মদলেখা নহে, এমন কি, জীবনও প্রিয় নহে। আমি জানি না,—কেন যে আমার হৃদয়, সমস্ত সখীগণকেও দূরে রাখিয়া তোমার উপরেই বিশ্বাস করিতেছে। (ড) আমি অন্য আর কাহাকে নিন্দা করিব? অন্য কাহার নিকটেই বা এই অত্যাচারের কথা বলিব? এবং অন্য কাহাকেই বা এই দুঃখ ভাগ করিয়া দিব?। (ঢ) তাই আজ তোমার নিকটে এই অসহ্য দারুণ দুঃখ জানাইয়া জীবন ত্যাগ করিব।

---

(१) अपूर्वान्। (२) अपहसित...। (३) निःश्वसिति। (४) क्वचित् अद्येति पाठो नास्ति।

जीवितम् (ढ)। जीवितेनैव शपामि ते, स्वहृदयेनापि विदितवृत्तान्तेनासुना जिह्रेमि, किमुतान्यहृदयेन (ण)। कथमिव मादृशी रजनिकर-किरणावदातं कौलीनेन कलङ्कयिष्यति कुलम्, कुलक्रमागताञ्च लज्जां परित्यक्ष्यति, अकन्या-कोचिते वा चापले चेतः प्रवर्त्तयिष्यति (त)। साहं न सङ्कल्पिता पित्रा, न दत्ता मात्रा, नानुमोदिता गुरुभिः, न किञ्चित् सन्दिशामि, न किञ्चित् प्रेषयामि, नाकारं दर्शयामि, कातरेव (१) अनाथेव नीचेव बलादवलिप्तेन गुरुगर्हणीयतां नीता कुमारेण चन्द्रापीडेन (थ)। कथय, महतां किमयमाचारः, किं परि-

(ण) ननु "शोकक्षोभे च हृदयं प्रलापैरेव धार्य्यते।" इति न्यायात् सखीभ्यो निवेद्य दुःखभारोऽयं लघूक्रियतामित्याह जीवितेनैवेति।" जीवितेनैव स्वजीवनेनैव, ते तव समीपे। विदितो वृत्तान्तो येन तेन, असुना स्वहृदयेनापि जिह्रेमि लज्जे, सुतरां अन्यहृदयेन किमुत वक्तव्यमित्यर्थः। अतएव न सम्भवत्यन्यं प्रति निवेदनमिति भावः।

(त) कथमिति। मादृशी शैशवापगमादुत्पन्नविवेचनशक्तिरिति भावः। कौलीनेन, आकस्मिकात्म-समर्पणाल्लोकापवादेन, रजनिकरस्य चन्द्रस्य किरणवत् अवदातं निर्म्मलं कुलं कथमिव कलङ्कयिष्यति कलङ्कवत् कलङ्कान्वितं करिष्यति। अकन्येति अप्राशस्त्ये नञ्, तथा च अकन्यकोचिते अप्रशस्तकन्यायोग्ये, चापले कामचाञ्चल्ये स्वयमात्मार्पणे।

(थ) साहमिति। सङ्कल्पिता दातुमभिमता। गुरुभिरन्यैर्मातुलादिभिः। किञ्चित् कामोपहारादिकं न प्रेषयामि। आकारं आकृतिविकारं शृङ्गारचेष्टामित्यर्थः। अत्र तथापीति पूरणीयं। कातरा दुर्बला, अनाथा रक्षकहीना। अवलिप्तेन स्वयं प्रहर्षेर्गर्वितेन। गुरुगर्हणीयतां महानिन्दनीयतां नीता प्रापिता, स्वरूपदर्शनेनैव कामाकुलीकृतत्वादिति भावः। अत्र कारणाभावेऽपि गुरुगर्हणीयताप्रापनाद्विभावनालङ्कारः।

(द) कथयेति। अभिनवं यद्विसकिसलयं मृणालपल्लवं तस्य तन्तुवत् सुकुमारं कोमलं। परि-

(ण) আমি তোমার নিকটে নিজের জীবনের শপথ করিয়া বলিতেছি যে,—নিজের এই হৃদয়ও এই বৃত্তান্ত জানিয়াছে বলিয়া আমি লজ্জিত হইতেছি; তাঁহাতে অন্যের হৃদয়ের কথা আর কি বলিব। (ত) আমার ন্যায় কন্যা, চন্দ্র-কিরণের ন্যায় নির্ম্মল কুলকে কি করিয়া লোকাপবাদ দ্বারা কলঙ্কিত করিবে? কি করিয়াই বা কুলক্রমাগত লজ্জা পরিত্যাগ করিবে? এবং কি করিয়াই বা নিন্দনীয় কন্যার উপযুক্ত চঞ্চলতায় চিত্ত প্রবর্ত্তিত করিবে?। (থ) পিতা আমাকে দান করিবার মত করেন নাই, মাতাও দান করেন নাই এবং অপর গুরুজনেরাও অনুমোদন করেন নাই; আবার আমি কোন খবর পাঠাই নাই, সেরূপ কোন উপহারও পাঠাই নাই এবং আকৃতির কোন বিকারও দেখাই নাই; তথাপি গর্ব্বিতস্বভাব কুমার চন্দ্রাপীড়, আমাকে কাতরার ন্যায়, অনাথার ন্যায় এবং নীচজাতীয়ার ন্যায় বলপূর্ব্বক অত্যন্ত নিন্দাভাজন করিয়াছেন। (দ) বল দেখি, প্রধান লোকের কি এই ব্যবহার?

(१) कातरा च।

चयस्येदं फलम्, यदेवमभिनव-बिस-किसलय-तन्तु-सुकुमारं मे मनः परिभूयते। अपरिभवनीयो हि कुमारिकाजनो यूनाम् (द)। प्रायेण प्रथमं मदनानलो लज्जां दहति, ततो हृदयम्। आदौ विनयादिकं कुसुमेषुशराः खण्डयन्ति, पश्चान्मर्माणि (ध)। तदामन्त्रये भवतीं पुनर्जन्मान्तरसमागमाय, नहि मे त्वत्तोऽन्या प्रियतरा। प्राणपरित्यागप्रायश्चित्तेन प्रक्षालयाम्यात्मनः कलङ्कम्।" इत्यभिधाय तूष्णीमभूत्। (न)

अहन्तु यत्सत्यमविदितवृत्तान्ततया ह्रीतेव भीतेव विलक्षेव विसंज्ञेव सविषादं विज्ञापितवती—'देवि! श्रोतुमिच्छामि, आज्ञापय किं कृतं देवेन चन्द्रापीड़ेन, को वाऽपराधः समजनि, केन वा स्खल्वविनयेन खेदितमखेदनीयं देव्याः कुमुदकोमलं मनः?। श्रुत्वा प्रथमंमुत्सृष्टजीवितायां मयि पश्चात्

भूयते आक्रम्यायत्तीक्रियते। ननु तेन को दोष इत्याह अपरीति। हि यूनाम, यूनां युवभिः, कुमारिकाजनः अपरिभवनीयः न परिभवितुं योग्यः, पापप्रसक्तेरिति भावः। अत्र सामान्येन विशेषसमर्थनादैधर्म्यापुरस्कृतोऽर्थान्तरन्यासोऽलङ्कारः, तथा अपरिभवनीय इति प्रधानस्य नञर्थस्य समासे गुणीभावाद्विधेयाविमर्शदोषः, स तु न परिभवनीय इति पाठेनैव समाधेयः।

(ध) प्रायेणेति। दहति भस्मीकरोति, विनाशयतीत्यर्थः। कुसुमेषुशराः कामवाणाः खण्डयन्ति छिन्दन्ति।

(न) मर्म्मच्छेदे सत्योरवश्यम्भावादाह तदिति। तत्तस्मात्, आमन्त्रये अभ्यर्थयामि। भवतीं त्वाम्। ननु कथं मामिकामिवामन्त्रयसीत्याह नहीति। प्राणपरित्याग एव प्रायश्चित्तं तेन। कलङ्कमपवादम्।

(प) अहमिति। ह्रीतेव लज्जितेव। विलक्षेव अप्रतिभेव। विसंज्ञेव विगतचेतनेव सती। अत्र चेतनाविगमोत्प्रेक्षणात् क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः, अन्येषान्तु लज्जादीनां वास्तविकत्वेन सम्भावनाभावान्नोत्प्रेक्षा। अविनयेन अशिष्टव्यवहारेण। देव्या भवत्याः कादम्बर्य्याः। कुमुदवत् कोमलं मनः, खेदितं दैन्ययुक्तीकृतम्।

পরিচয়ের কি এই ফল? যে, নূতন-মৃণাল-সূত্রের ন্যায় আমার কোমল মনকে আকুল করিয়া তুলিয়াছেন; কারণ, যুবকদিগের পক্ষে কন্যাজনকে আকুল করা উচিত নহে। (ধ) প্রায়শই কামানল প্রথমে লজ্জাকে, তাহার পর হৃদয়কে দগ্ধ করে এবং কামের বাণ প্রথমে বিনয় প্রভৃতিকে, তদনন্তর মর্ম্মদেশ ছিন্ন করে। (ন) অতএব জন্মান্তরে আবার সম্মিলনের জন্য আমি তোমার নিকট প্রার্থনা করি; কারণ, তোমা হইতে অধিক প্রিয় ব্যক্তি আমার অন্য কেহই নাই। এখন প্রাণত্যাগরূপ প্রায়শ্চিত্ত দ্বারা নিজের কলঙ্ক প্রক্ষালন করিব।" এই কথা বলিয়া নীরব হইলেন।

(প) আমি কিন্তু বৃত্তান্ত জানি না বলিয়া নিশ্চয়ই লজ্জিতের ন্যায়, ভীতের ন্যায়, অপ্রতিভের ন্যায় এবং অচেতনের ন্যায় হইয়া বিষাদের সহিত জানাইলাম—'দেবি! আমি শুনিতে ইচ্ছা করি, আপনি বলুন,—কুমার চন্দ্রাপীড় কি করিয়াছেন, তাঁহার

समुत्स्रक्ष्यति देवी जीवितम्' (१) इति (प)। एवमभिहिता च पुनरवदत्—"आवेदयामि ते, अवहिता शृणु। स्वप्नेषु प्रतिदिवसम् (२) आगत्यागत्य मे रहस्यसन्देशेषु निपुणधूर्त्तः (३) पञ्जरशुकसारिका दूतीः करोति (फ)। सुप्तायाः श्रवणदन्तपत्त्रोदरेषु व्यर्थमनोरथमोहितमानसः सङ्केतस्थानानि लिखति (ब)। स्वेदप्रक्षालिताक्षरानपि निपतित-साञ्जनाश्रुबिन्दु-पङ्क्ति-कथितात्मावस्थान् (४) मनोहरान् सम्मोहाशानुवर्त्तिनो मदनलेखान् प्रेषयति (भ)। निजानुरागेणेव

उत्सृष्टं परित्यक्तं जीवितं यया तस्यां सत्यां। * अत्रोत्सर्गस्य विधेयत्वात्तस्य च समासे गुणीभावाद्विधेयाविमर्श-दोषः स च जीवितमुत्स्रक्ष्यामीति पाठेन समाधेयः।

(फ) एवमिति। निपुणश्चासौ धूर्त्तश्चेति निपुणधूर्त्तः धूर्त्तकार्य्येषु निपुण इत्यर्थः। रहस्यसन्देशेषु गोपनीयवाचिकेषु मे पञ्जरशुकसारिका दूतीः करोति पञ्जरवर्त्तिशुकसारिकामुखेन ममान्तिके गोपनीयवाचिकानि प्रेरयतीत्यर्थः। प्रतिदिनमीदृशमहं स्वप्नं पश्यामीति तात्पर्य्यार्थः। एवमुत्तरत्रापि बोध्यम्।

(ब) सुप्ताया इति। व्यर्थः सर्वथैवासम्भवाद्विफलो यो मनोरथस्तेन मोहितं मानसं चित्तं यस्य स चन्द्रापीडः, सुप्ताया निद्रिताया मम, श्रवणयोः कर्णयो ये दन्तपत्त्रे गजदन्तनिर्म्मितपत्त्राकारालङ्कारौ तयोरुदरेषु मध्यदेशेषु, सङ्केतस्थानानि लिखति।

(भ) स्वेदेति। स्वेदेन घर्म्मेण प्रक्षालितानि अक्षराणि येषां तानपि निपतिता रोदनेन नयनाद्गलिता साञ्जना नयनकज्जलसहिता या अश्रुबिन्दूनां पङ्क्तिः श्रेणी तया कथिताः सूचिता आत्मनोऽवस्थाः कामार्त्तदशा येषु तान् मनोहरान्, सम्मोहेन चित्तभ्रमेण या आशा मत्सङ्गमाकाङ्क्षा तामनुवर्त्तन्ते अनुसरन्तीति तान् मदनलेखान् कामसूचकानि पत्राणि प्रेषयति।

কোন্ অপরাধই বা হইয়াছে! * এবং খিন্ন করিবার অযোগ্য ও কুসুমের ন্যায় কোমল আপনার মনকে কোন্ অন্যায় আচরণে খিন্ন করিয়াছেন? —এই সকল শুনিয়া আমি প্রথম জীবন ত্যাগ করিলে, পরে আপনি জীবন ত্যাগ করিবেন।' (ফ) আমি এইরূপ কহিলে পুনরায় কাদম্বরী কহিলেন—"আমি তোমার নিকট বলিতেছি, মনোযোগ দিয়া শুন। ধূর্ত্তকার্য্যে নিপুণ চন্দ্রাপীড় প্রতিদিন আমার স্বপ্নের ভিতরে আসিয়া আসিয়া গোপনীয় সংবাদ বলিবার জন্য পঞ্জরবর্ত্তী শুক ও সারিকাদিগকে দূত করিয়া থাকেন। (ব) নিষ্ফল অভিলাষে চন্দ্রাপীড়ের চিত্ত মোহিত হইয়াছে, তাই তিনি নিদ্রিত অবস্থায় আমার কর্ণের হস্তিদন্ত-নির্ম্মিত অলঙ্কারের উপরে সঙ্কেতস্থান লিখিয়া যা'ন। ভ) সুন্দর সুন্দর যে সকল কামলিপি প্রেরণ করেন, তাহার অক্ষরগুলি ঘর্ম্মজলে প্রক্ষালিত হইলেও, নয়ন হইতে বিগলিত কজ্জলাক্ত অশ্রুবিন্দুসমূহে নিজের অবস্থা ব্যক্ত করে এবং মনের ভ্রমনিবন্ধন যে সকল আশা হইয়া থাকে, সেই কামলিপিগুলি তাহার অনুরূপ। (ম) নিজের অনুরাগের ন্যায় আলতার রসে আমার

---

(१) समुत्स्रक्ष्यसि जीवितं, समुत्स्रक्ष्यति जीवितं। (२) प्रतिदिनं। (३) निपुणो धूर्त्तः।
(४)...अवस्थानान्।

बलाद्रञ्जयत्यलक्तकरसेन चरणौ (१) (म)। अविनयनिश्चेतनो नखप्रतिविम्बित-मात्मानं बहु मन्यते (य)। उपवनेष्वेकाकिन्या ग्रहणभयपलायमानाया: पल्लव-लग्नांशुक-दशा-प्रतिहत-गमनाया गृहीतेव लतासखीभि: (२) अर्पिताया मिथ्याप्रगल्भ: पराङ्मुखाया: परिष्वङ्गं (३) आचरति (र)। स्तनस्थले मे लिखन् पत्रलतां (४) कुटिलतामिवानृजुप्रकृति: प्रकृतिमुग्धं मन: शिक्षयति (ल)। हृदयोत्कलिकातरङ्गवातैरिव शीतलैर्मुखमरुद्भि: श्रमजल-शीकर-तारकितावलोक-

(म) निजेति। निजानुरागेणेव अलक्तकरसेन "रक्तौ च क्रोधरागौ" इति कविसमयात् साम्यप्रतीति:, मम चरणौ बलात् रञ्जयति। अत्र गुणोत्प्रेक्षालङ्कार:।

(य) अविनयेति। अविनयेन अशिष्टव्यवहारेण निश्चेतनश्चेतनाहीनप्रायश्चन्द्रापीड:, नखेषु मम चरण-नखरेषु प्रतिविम्बितं आत्मानं बहु मन्यते। एतेन मानभञ्जनाय पादपतनं ध्वन्यते।

(र) उपेति। ग्रहणभयेन तत्कर्तृकधारणत्रासेन पलायमाना तस्या:, पल्लवेषु लग्नाभि: संसक्ताभि: अंशुकदशाभिर्वस्त्राञ्चलै: प्रतिहतं निवारितं गमनं पलायनं यस्यास्तस्या:, अतएव लता एव सख्यस्ताभि: गृहीत्वा धृत्वा अर्पितायास्तस्मै दत्ताया इव सख्या:। अन्या अपि सख्यो वल्लभसंसर्गभयात् पलायमानां सखीं प्रति एवमेवाचरन्ति। पराङ्मुखाया लज्जया विहस्तवदनाया मम, मिथ्याप्रगल्भ: अलीकधृष्टश्चन्द्रापीड:, परिष्वङ्गं दृढ़तं आलिङ्गनं आचरति कुरुते। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कार:।

(ल) स्तनेति। अनृज्वी असरला प्रकृति: स्वभावो यस्य स चन्द्रापीड:, मे मम स्तनस्थले-पत्रलतां कुटिलं पत्राकारं लताकारञ्च चित्रं लिखन् चित्रयन्, प्रकृतिमुग्धं स्वभावसरलं, कथमन्यथा मम स्तनस्थलं स्पृशेदिति भाव:, मम मन: कुटिलतां शिक्षयतीव, कुटिलपत्रलताचित्रणाद्देवेति भाव:। अत्रापि क्रियोत्प्रेक्षालङ्कार:, तथा प्रकृतिशब्दस्य द्विरुपादानात् पुनरुक्ततादोष:, स च स्वभावमुग्धमिति पाठेन समाधेय:।

(व) हृदयेति। अलीकचाटुकारी मिथ्याप्रियंवदश्चन्द्रापीड:, हृदये निजचित्ते या उत्कलिका उत्-

চরণযুগলকে বলপূর্ব্বক রঞ্জিত করিয়া থাকেন। (য) অশিষ্ট ব্যবহারে তিনি প্রায় চৈতন্যহীন হইয়া পড়েন; সুতরাং আপনাকে আমার পায়ের নখে প্রতিবিম্বিত দেখিয়া তাহার খুব আদর করেন। (র) উদ্যানের ভিতরে আমি একাকিনী বিচরণ করি, তখন আবার তিনি ধরিবেন, এই আশঙ্কায় পলায়ন করিতে থাকি, তখন লতার পল্লবে বস্ত্রাঞ্চল সংলগ্ন হওয়ায় পলায়নের বিঘ্ন ঘটে, তাহাতে বোধ হয় যেন, লতাসখীরা আমাকে ধরিয়া তাঁহার নিকট সমর্পণ করে, তখন আমি মুখ ফিরাইয়া থাকি, এমন অবস্থায় সেই অলীকপ্রগল্ভস্বভাব চন্দ্রাপীড় আমাকে আলিঙ্গন করেন। (ল) কুটিলস্বভাব চন্দ্রাপীড় আমার স্তনমণ্ডলে পত্রলতা চিত্র করিয়া, আমার স্বভাবমুগ্ধ মনকে যেন কুটিলতা শিখাইয়া দেন। (ব) মিথ্যা-চাটুকারী চন্দ্রাপীড় হৃদয়ের উৎকণ্ঠারূপ তরঙ্গের বায়ুর ন্যায় শীতল মুখবায়ু দ্বারা আমার

(१) निजानुरागेण...रसेनेव। (२) सखीभि:। (३) पराङ्मुखपरिष्वङ्गं। (४) पत्रलेखां।

चाटुकार: कपोलौ वीजयति (व)। स्वेदसलिल-शिथिलित-ग्रहण-गलितोत्पल-शून्येनापि करेण यवाङ्कुरानिव नखकिरणान् शुद्धान् दुर्विदग्ध: कर्णपूरीकरोति (श)। वल्लभतरबाल-वकुल-सेक-काल-कवलीकृतान् सुरागण्डूषान् सकचग्रहमसकृद्धृष्टो मां पाययति (ष)। भवनाशोकतरुताड़नोद्यतान् पादप्रहारान् दुर्बुद्धिविड़म्बित: शिरसा प्रतीच्छति (स)। मन्मथ-मूढ़-मानसस्य कथय हे पत्रलेखे! केन प्रकारेण निश्चेतनो निषिध्यते। प्रत्याख्यानमपीर्ष्यां

कण्ठाश्ला एव तरङ्गास्तं यां वातैर्वायुभिरिव शीतलैमुखमरुद्भिर्वदननिर्गतवायुभि:, श्रमजलशीकरैर्घर्म्मजलबिन्दुभि: तारकितौ सञ्जाततारकाकारचिह्नौ कपोलौ मम गण्डौ वीजयति, श्रमजलनिवारणार्थमिति भाव:। अत्र निरङ्गकेवलरूपकमाल्युत्प्रेक्षयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्कर:।

(श) स्वेदेति। दुर्विदग्धो मिथ्यावैदग्ध्यगर्वितचन्द्रापीड़:, स्वेदसलिलेन घर्म्मजलेन शिथिलितं श्लथीकृतं ग्रहणं धारणं तेन गलितं पतितं यदुत्पलं कैरवं तेन शून्यो विरहित: करो हस्तस्तेन, यवाङ्कुरानिव शुद्धान् केवलान् नखकिरणेन कर्णपूरीकरोति मम कर्णाभरणीकरोति, कैरवभ्रमादिति भाव:। श्रौतोपमालङ्कार:, तथा भ्रान्तिमानलङ्कारो व्यज्यत इति वस्तुनालङ्कारध्वनि:।

(ष) वल्लभेति। धृष्ट: प्रगल्भस्वभावश्चन्द्रापीड़:, वल्लभतराणां ममातीवप्रियाणां बालवकुलानां सेककाले तत्पुष्पविकासनाय मत्कर्त्तृकमुखमद्यसेचनसमये कवलीकृतान् स्वयमेव मुखे धृतान् सुरागण्डूषान्, कचग्रहेण मम केशपाशधारणेन सहेति सकचग्रहं असकृत् वारंवारं मां पाययति, तेषु बालवकुलेषु सेचनार्थमिति भाव:।

(स) भवनेति। दुर्बुद्धिविड़म्बित: कुबुद्धिप्रतारितश्चन्द्रापीड़:, भवनाशोकतरूणां ताड़नाय पुष्पविकासार्थमिति भाव:, उद्यतान् विधातुमुद्यतान् मम पादप्रहारान् शिरसा प्रतीच्छति गृह्णाति, आदरातिशयद्योतनार्थमिति भाव:।

(ह) अहो यद्येतान्यनिष्टान्येव मन्यन्ते तर्हि कथं न निषधादय: क्रियन्त इत्याह मन्मथेति। किञ्च, हे पत्रलेखे! त्वं कथय, मन्मथेन कामाविर्भावेन मूढ़ं सदसद्विवेकहीनं मानसं मनो यस्य स:,

---

घर्म্মবিন্দুব্যাপ্ত গণ্ডযুগলে ব্যজন করেন। (শ) ঘর্ম্মজলে ধারণ করাটা শিথিল হইয়া যায়, তাহাতে উৎপলটি পড়িয়া যায়, তখন সেই শূন্য হস্ত দ্বারাও, মিথ্যানৈপুণ্যগর্ব্বিত চন্দ্রাপীড় যবাঙ্কুরের ন্যায় কেবল নখের কিরণগুলিকেই আমার কর্ণের আভরণ করিয়া থাকেন। (ষ) পুষ্পবিকাসের নিমিত্ত অত্যন্তপ্রীতিভাজন নূতন বকুলবৃক্ষে মুখমদ্য সেচন করিবার সময়ে চপলস্বভাব চন্দ্রাপীড়, নিজের মুখে মদ্য লইয়া, পিছনের দিকে আমার কেশপাশ ধারণ করিয়া, সেই মদ্যগুলি বারংবার আমাকে পান করাইয়া দেন। (স) আমি যখন গৃহস্থিত অশোকবৃক্ষকে তাড়ন করিবার জন্য পাদপ্রহার করি, তখন চন্দ্রাপীড় দুর্বুদ্ধিপ্রতারিত হইয়া সেই পাদপ্রহারগুলি মস্তকে ধারণ করেন। (হ) কন্দর্প চন্দ্রাপীড়ের চিত্তকে সদসদ্বিবেচনাহীন করিয়া ফেলিয়াছেন, তাহাতে তিনি চৈতন্যহীনপ্রায় হইয়া পড়িয়াছেন; অতএব বল দেখি পত্রলেখে! কি করিয়া আমি তাঁহাকে নিষেধ করি? আমি প্রত্যাখ্যান করিলেও তিনি তাহা ঈর্ষ্যা বলিয়া

सम्भावयति, आक्रोशमपि परिहासमाकलयति, असम्भाषणमपि मानं मन्यते, दोषसङ्कीर्त्तनमपि स्मरणोपायमवगच्छति, अवज्ञानमप्यनियन्त्रणं प्रणयमुत्प्रेक्षते, (१) लोकापवादमपि यशो गणयति" इति। (छ)

तामेवंवादिनीमाकर्ण्य प्रहर्षरसनिर्भरा मनस्यकरवम्—'अहो! चन्द्रापीड़मुद्दिश्य सुदूरमाकृष्टा खल्वियं मकरकेतुना। यदि च सत्यमेव कादम्बरीव्याजेन साक्षान्मनोभवचित्तवृत्तिः प्रसन्ना (२) देवस्य चन्द्रापीड़स्य, ततः सहजैः सादरं संवर्द्धितैः प्रत्युपकृतमस्य गुणैः, यशसा धवलिताः ककुभः, यौवनेन रतिरससागर-

अतएव निश्चेतनश्चैतन्यहीनप्रायश्चन्द्रापीड़ः केन प्रकारेण निषिध्यते। क्रियमाणेऽपि निषेधे मन्मथमूढ़मानसत्वेन निश्चेतनत्वेन च निषेधफलस्य निवृत्तेरसम्भवादिति भावः। अत कथय हे पत्रलेखे! इति वाक्यस्य वाक्यान्तरे प्रवेशेऽपि आवेगातिशयसूचनेन चमत्कारातिशयान्न गर्भितत्वदोषः प्रत्युत गुण एव "गर्भितत्वं गुणः क्वापि" इति दर्पणोक्तेः। प्रत्याख्यानमपि तादृशाचरणवेलायां मया क्रियमाणं निराकरणमपि ईर्ष्यासूया सम्भावयति चन्द्रापीड़ इति शेषः, मां प्रति प्रियतमाज्ञानादिति भावः। एवमन्यत्रापि तात्पर्यं बोध्यम्। आक्रोशं तिरस्कारं। आकलयति मन्यते। मानं प्रणयकोपं अवज्ञानमवहेलां। अनियन्त्रणं अनिर्बाधं। अदत्तां प्रत्येव तथाचरणाल्लोकापवाद, इति भावः। अत्र विरोधाभासोऽलङ्कारः।

(च) तामिति। तामेवंवादिनीमाकर्ण्य तस्या एवंविधं वचनमाकर्ण्येत्यर्थः, प्रहर्षरसेन आनन्दरसेन निर्भरा परिपूर्णा अहम्। योग्यसमागमोपक्रमादिति भावः। मकरकेतुना कन्दर्पेण। देवस्य चन्द्रापीड़स्योपरि कादम्बरीव्याजेन कादम्बरीं व्याजीकृत्य उद्दिश्येत्यर्थः, साक्षान्मनोभवस्य चित्तवृत्तिर्यदि च सत्यमेव प्रसन्ना करुणापन्ना जाता, ततस्तदा, सहजैः स्वाभाविकैः सादरं संवर्द्धितैः इयन्तं कालं यावत् सयत्नं वृद्धिं प्रापितैः, अनेन गुणान् प्रति चन्द्रापीड़स्योपकारकरणं सूचितं अस्य चन्द्रापीड़स्य गुणैः सौन्दर्यविनयादिभिः प्रत्युपकृतं प्रत्युपकारः कृतः, सर्वथा योग्याया एव समाकर्षणादिति भावः। तथा यशसा ककुभो दिशो धवलिताः शुभ्रीकृताः, पृथिव्यां कन्यारत्नभूताया एवाकर्षणादिति भावः। तथा यौवनेन रतिरसः शृङ्गाररस एव सागर-

मনে করেন, তিরস্কার করিলেও তাহা পরিহাস বলিয়া ধারণা করেন, সম্ভাষণ না করিলেও তাহা মান বলিয়া বিবেচনা করেন, দোষকীর্ত্তন করিলেও তাহা স্মরণের উপায় বলিয়া মনে করেন, অবহেলা করিলেও তাহা অবাধ প্রণয় বলিয়া ধারণা করেন এবং লোকনিন্দাকে তিনি যশ বলিয়া গণনা করেন।

(ক) কাদম্বরীর এইরূপ বাক্য শুনিয়া, আমি আনন্দে পরিপূর্ণ হইয়া মনে করিলাম—'কি আশ্চর্য্য! চন্দ্রাপীড়ের উদ্দেশে কামদেব ইহাকে বহু দূরে নিয়া গিয়াছেন। যদি সত্যই কাদম্বরীকে উদ্দেশ্য করিয়া সাক্ষাৎ কামদেবের চিত্তবৃত্তি, রাজকুমার চন্দ্রাপীড়ের উপর প্রসন্ন হইয়া থাকে; তাহা হইলে, স্বাভাবিক এবং সাদরে সংবর্দ্ধিত রূপপ্রভৃতি গুণগ্রাম চন্দ্রাপীড়ের প্রত্যুপকার করিয়াছে, যশ সকল দিক্ ধবলবর্ণ করিয়াছে; যৌবন শৃঙ্গারসাগরের তরঙ্গ দ্বারা

(१) अवज्ञामपि निर्यन्त्रणप्रणयं...। (२)...मनोभवे चित्तवृत्तिः प्रसन्ना।

तरङ्गैः पातिता रत्नवृष्टिः, यौवनविलासैर्लिखितं नाम शशिनि, सौभाग्येन प्रकाशिता निजश्रीः, लावण्येनैन्दवीभिरिव वृष्टममृतं कलाभिः (ख)। तथा च चिराल्लब्धः कालो मलयानिलेन, समासादितोऽवसरश्चन्द्रोदयेन प्राप्तमनुरूपं फलं मधुमास-कुसुमसम्पदा, गतो मदिरामददोषः (१) गुणताम्, दर्शितं सुखं मन्मथयुगाव-तारेणेति। (क)

तथाहं प्रकाशं विहस्याब्रवम् (२)—'देवि! यद्येवम्, उत्सृज कोपम्, प्रसीद, नार्हसि कामापराधेन देवं दूषयितुम्। एतानि खलु कुसुमचापस्य (३) चापलानि

सस्य तरङ्गैः रत्नवृष्टिः पातिता। अत्र वस्तुसम्बन्धेऽसम्भवन् कादम्बरीमुद्दिश्य चन्द्रापीडोपरि मनोभवस्य चित्तवृत्तेः प्रसक्तत्वं यौवनकर्तृकरतिरससागरतरङ्गकरणकरत्नवृष्टिपातनमिवेति सादृश्यमाक्षिपतीति निदर्शना-लङ्कारो निरङ्गकेवलरूपकेण सङ्कीर्यते। तथा रतिरसेति स्थायिभावरसयोरुक्तत्वात् स्वशब्दोक्तिदोषः, स तु भावसागरतरङ्गैरिति पाठेन समाधेयः। "चन्द्रापीडस्य यौवनविलासैः शशिनि नाम शशकलङ्क इत्यभिधानं लिखितं। तथा च कलङ्कवत्तया चन्द्रेण कादम्बर्या अनाकर्षणात्, निष्कलङ्कतया च चन्द्रापीडेनाकर्षणात् शशितश्चन्द्रापीड एव श्रेयानिति भावः। अत्र लिखनासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिरलङ्कारस्तेन चोक्त-रूपो व्यतिरेकालङ्कारो व्यज्यत इत्यलङ्कारेणालङ्कारध्वनिः। सौभाग्येन प्रियवाल्लभ्येन निजश्रीरात्मसौन्दर्यं प्रकाशिता प्रकटिता, कादम्बर्या वाल्लभ्यादिति भावः। इन्दोरिमा इत्यैन्दव्यस्ताभिश्चन्द्रसम्बन्धिनीभिः कलाभिरिव चन्द्रापीडस्य लावण्येन, अमृतं पीयूषं आनन्दश्च वृष्टमुत्सृष्टम्, कादम्बर्या आकर्षणेनानन्दवर्षणा-दिति भावः। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः।

(क) तथेति। तथा च अपि चेत्यर्थः। मलयानिलेन चिरात् परं कालः समयो लब्धः, परस्पर-योग्ययोरेव कादम्बरीचन्द्रापीडयोरिदानीं यथाशत्रुद्दीपनसम्भवादिति भावः। एवमन्ययोरपि भावो बोध्यः। मधुमासकुसुमसम्पदा चैत्रमासपुष्पसम्पदा। मदिरामदस्य मद्यपानजनितमत्ततायाः दोषः अयोग्ये अनुराग-जननात्मको दोषः, इदानीं गुणतां गतः योग्ययोरेव परस्परानुरागजननादिति भावः। तथा मन्मथयुगस्य कामकालस्य अवतारेण आविर्भावेन सुखं दर्शितं, केवलमनयोश्चित्तविकारजननारम्भादिति भावः।

(ख) यद्येति। कामस्य मदनस्य अपराधेन देवं चन्द्रापीडं दूषयितुं नार्हसि, परापराधेन परस्य

রত্নবৃষ্টি করিয়াছে; তাঁহার যৌবনের বিলাসিতা চন্দ্রের উপরে 'শশকলঙ্ক' এই নাম লিখিয়া দিয়াছে; সৌভাগ্য নিজের সৌন্দর্য্য প্রকাশ করিয়াছে এবং চন্দ্রের কলার ন্যায় চন্দ্রাপীড়ের লাবণ্য অমৃত বর্ষণ করিয়াছে। (ক) আর, বহুকালের পর মলয়-সমীরণ সময় পাইয়াছে; চন্দ্রোদয় অবসর লাভ করিয়াছে; চৈত্রমাসের পুষ্প সকল অনুরূপ ফল পাইয়াছে; মদ্যের মত্ততাদোষ গুণতা লাভ করিয়াছে এবং কন্দর্পযুগের আবির্ভাব সুখ দেখাইয়াছে।

(খ) তাহার পর আমি হাস্য করিয়া প্রকাশ্যভাবে বলিলাম—'দেবি! যদি এইরূপই হইয়া থাকে, তবে ক্রোধ পরিত্যাগ করুন, প্রসন্ন হউন, কন্দর্পের অপরাধে রাজপুত্রকে দোষ

(१) मदिरारसदोषः। (२) अहृष्य। (३) खलु खलस्य कुसुमचापस्य।

शठस्य, न देवस्य (ख)। इत्येवमुक्तवतीं मां पुनः सकुतूहला सा प्रत्यभाषत— "योऽयं कामो वा कोपि वा (१) कथय कानि कान्यस्य रूपाणी"ति (ग)। तामहं व्यजिज्ञपम्—'देवि! कुतोऽस्य रूपम्, अतनुरेष हुताशनः (घ)। तथाहि अप्रकाशयन् ज्वालावलीः सन्तापं जनयति, अप्रकटयन् धूमपटलमश्रु पातयति, अदर्शयन् भस्मरजोनिकरं पाण्डुतामाविर्भावयति (ङ)। न च तद्भूतमिनावति त्रिभुवने, अस्य शरशरव्यतां (२) यन्न यातं याति यास्यति वा (च)। को वाऽस्मान्न त्रस्यति, (३) गृहीत-कुसुमकार्मुको वाणैर्बलवन्तमपि विध्यति (छ)।

दूषणानौचित्यादिति भावः। शठस्य धूर्त्तस्य, कुसुमवाणस्य मदनस्य चपलानि विकारजनकव्यापाराः, किन्तु देवस्य चन्द्रापीडस्य न अन्याय्यनाचरणादिति भावः।

(ग) इतीति। सा कादम्बरी। कोऽपि अन्यो वेत्यर्थः।

(घ) तामिति। रूपमाकृतिः। एष कामः, अतनुः तासौ मूर्त्तिहीनो वह्निः, तद्दाहकत्वात्म सं-रदर्शनाञ्च, अतएवास्य नास्ति रूपमिति भावः। अत्राधिकारूढवैशिष्ट्यरूपकमलङ्कारः।

(ङ) अस्य हुताशनसादृश्यं प्रतिपादयितुमाह तथाहीति। ज्वालावलीः शिखाश्रेणीः भस्मनां रजो-निकरं कणसमूहम्। अत्र ज्वालाप्रकाशादीनां कारणानामभावेऽपि तत्कार्यसन्तापाद्युत्पत्तेः प्रत्येकवाक्य एव विभावनालङ्कारः।

(च) नेति। किञ्चेति चार्थः। तावति अतिविशाल इति तात्पर्य्यम्, त्रिभुवने, तत्ताद्दशं भूतं प्राणी न अस्तीति शेषः, यद्भूतं कर्त्तृ, अस्य कन्दर्पस्य शरशरव्यतां वाणलक्ष्यतां न यातमित्यतीतनिर्देशः, न यातीति वर्त्तमानकालोक्तिः, न यास्यतीति भविष्यत्कालप्रदर्शनम्, अतएवायं त्रिष्वपि कालेषु त्रिभुवन एवा-व्याहतप्रभावशालीति भावः। अत्र "न्यक्कारो ह्ययमेव मे यदरयः" इत्यादिवत् यच्छब्दान्वितवाक्यस्य परपाठा-द्वाक्यगतविधेयाविमर्शदोषः, स च तस्य प्राक्पाठेन समाधेयः।

(छ) क इति। अस्मात् कन्दर्पात् को वा जनो न त्रस्यति बिभेति। अत्र हेतुमाह गृहीतेत्यादि। सुतरामेतस्मात् सर्व्वेषामेव त्राससम्भव इति भावः। अत्र वाक्यार्थहेतुकं काव्यलिङ्गमलङ्कारः।

দিতে পারেন না; ধূর্ত্তপ্রকৃতি কন্দর্পেরই এই সকল চঞ্চলতা, কিন্তু রাজপুত্রের নহে।' (গ) আমি এইরূপ কহিলে তিনি পুনরায় কৌতুকের সহিত কহিলেন—"এই যে পদার্থটা—সে কামই হউক, বা অন্য কেহই হউক, ইহার কি কি রূপ আছে, তাহা বল।" (ঘ) তখন আমি তাঁহাকে জানাইলাম 'দেবি! উহার রূপ কোথায়? উনি মূর্ত্তিহীন অগ্নি। (ঙ) দেখুন—উনি শিখা প্রকাশ না করিয়া সন্তাপ জন্মাইয়া থাকেন, ধূমরাশি বাহির না করিয়া লোকদিগকে অশ্রুপাত করাইয়া থাকেন এবং ভস্মের কণাসমূহ প্রকাশ না করিয়া দেহে পাণ্ডুতা প্রকাশ করেন। (চ) এই বিশাল ত্রিভুবনের মধ্যে সেরূপ কোন প্রাণী নাই; যে, কন্দর্পের বাণের লক্ষ্য হয় নাই, বা হইতেছে না, বা হইবে না। (ছ) কোন্ ব্যক্তিই বা

---

(१) कामः कोऽपि वा। (२) शरव्यतां। (३) को वाऽस्य नत्रस्यति।

अपि चानेनाधिष्ठितानां कामिनीनां पश्यन्तीनां चिन्तया प्रियमुखचन्द्रसहस्राणि सङ्कटमम्बरतलम्, (१) लिखन्तीनां दयिताकारानविस्तीर्णं महीमण्डलम्, गणयन्तीनां वल्लभगुणानल्पीयसी संख्या, (२) शृण्वतीनां (३) प्रियतमकथाम-बहुभाषिणी सरस्वती, (४) ध्यायन्तीनां प्राणसमसमागमसुखानि क्रसीयान् कालो हृदयस्यापतति' इति। (ञ)

एतदाकर्ण्य च क्षणं विचिन्त्य प्रत्यवादीत्—"पत्रलेखे! यथा कथयसि तथा

(ञ) अपीति। अनेन कन्दर्पेण अधिष्ठितानामाविष्टानां, चिन्तया प्रियस्य वल्लभजनस्य, मुखचन्द्र-सहस्राणि पश्यन्तीनां कामिनीनां हृदयस्यान्तिके अम्बरतलं गगनं सङ्कटं तन्मुखचन्द्रव्याप्तं सत् आपतति उपस्थितं भवति, सर्वत्रैव तन्मुखचन्द्रदर्शनादिति भावः। एतेन कामिन्यश्चिन्तावशात् प्रियमुखचन्द्रमयमेव जगत् पश्यन्तीति व्यज्यते। दयिताकारान् वल्लभस्य प्रतिमूर्त्तीः लिखन्तीनां चित्रयन्तीनां कामिनीनां हृदयस्यान्तिके महीमण्डलं अविस्तीर्णमविशालं आपतति, येन हि तत्र चित्र्यमाणा दयिताकारा न मान्तीति भावः। अनेनानवरतमेव कामिन्यो दयितानां प्रतिकृतीश्चित्रयन्तीति द्योत्यते। वल्लभस्य गुणान् गणयन्तीनां कामिनीनां हृदयस्यान्तिके संख्या परार्द्धान्तापीत्यर्थः, अल्पीयसी अत्यल्पा सत्यापतति, तद्गुणगणनवेलायां परार्द्धान्ताया अपि संख्यायाः परिसमाप्तत्वादिति भावः। एतेन कामिन्यो निर्गुणानपि वल्लभाननन्तगुणसम्पन्नान् मन्यन्त इति ध्वन्यते। प्रियतमस्य कथां शृण्वतीनां कामिनीनां हृदयस्यान्तिके सरस्वती वाणी अबहुभाषिणी सत्यापतति, आशानुरूपं भाषितुमशक्तत्वादिति भावः। अनेन अनन्तयापि प्रियतमकथया कामिनीनामाशा न परिपूर्य्यत इति व्यज्यते। तथा प्राणसमस्य वल्लभस्य समागमसुखानि ध्यायन्तीनां कामिनीनां हृदयस्यान्तिके कालो क्रसीयानति-क्रस्वः सन्नापतति, सहसैवावसितत्वादिति भावः। एतेन कामिन्यः सर्वदैव दयितसङ्गमसुखानि ध्यायन्तीति द्योत्यते। अत्रापततीत्येकया क्रियया अम्बरतलादीनां कर्त्तृतयाभिसम्बन्धात्तुल्ययोगितालङ्कारः।

(झ) एतदिति। अयं मल्लक्षणो जनः। कुमारे चन्द्रापीडे। पञ्चेषुणा मदनेन। अस्य मदनस्य,

---

এই কন্দর্প হইতে ভীত না হয়; কারণ- ইনি পুষ্পময় ধনুক ধারণ করিয়া বাণ দ্বারা বলবান্ ব্যক্তিকেও বিদ্ধ করিয়া থাকেন। (ঞ) আর, রমণীগণ কামাবিষ্ট হইয়া চিন্তা দ্বারা যখন প্রিয়তমের সহস্র সহস্র মুখচন্দ্র দেখিতে থাকে, তখন তাহাদের হৃদয়ের নিকট সমস্ত আকাশমণ্ডলই প্রিয়তমের মুখচন্দ্র ব্যাপ্ত হইয়া উপস্থিত হয়, প্রিয়তমের আকৃতি চিত্র করিতে লাগিলে সমগ্র ভূমণ্ডল ক্ষুদ্র বলিয়া বোধ হয়; বল্লভজনের গুণ গণনা করিতে আরম্ভ করিলে পরার্দ্ধপর্য্যন্ত সংখ্যাও অত্যন্ত অল্প বলিয়া ধারণা হয়; প্রিয়তমের কথা শুনিতে লাগিলে ভাষাকে অল্প-ভাষিণী বলিয়া মনে হয় এবং প্রাণতুল্য প্রিয়তমের সঙ্গমসুখ ধ্যান করিতে লাগিলে সময়টাকে বড়ই অল্প বলিয়া বোধ হয়।

(ঝ) এই কথা শুনিয়া কাদম্বরী, ক্ষণকাল চিন্তা করিয়া প্রত্যুত্তর করিলেন—

---

(१) चिन्ताप्रियमुखसहस्रसङ्कटं, चिन्ताप्रियमुखचन्द्रसहस्राणि। (२) वल्लभगुणानसंख्यान्।
(३) शृण्वन्तीनां। (४) अबहुभाषिणीं सरस्वतीम्।

जनोऽयं कारितः कुमारे पक्षपातं पञ्चेषुणा। यान्यस्यैतानि रूपाणि समधिकानि वा तानि मयि वर्त्तन्ते (झ)। हृदयादव्यतिरिक्तासि, इदानीं भवतीमेव पृच्छामि। उपदिश त्वम्, (१) यदत्र मे साम्प्रतम्। एवंविधानां वृत्तान्तानामनभिज्ञास्मि। अपि च मे (२) गुरुजनवक्तव्यतां नीताया नितरां लज्जिताया जीवितान्मरणमेव श्रेयः पश्यति हृदयम्" (३) इति। (ञ)

एवंवादिनीं भूयस्तामहमिवमवोचम्—'अलमलमिदानीं देवि! किमनेनाकारणमरणानुबन्धेन, (४) अनाराधितप्रसन्नेन कुसुमशरेण भगवता ते वरो दत्तः (ट) का चात्र गुरुजनवक्तव्यता, यदा खलु कन्यकां गुरुरिव पञ्चशरः सङ्कल्पयति, मातेवानुमोदते, भ्रातेव ददाति, सखीवोत्कण्ठां जनयति, धात्रीव तरुणतायां

यान्येतानि रूपाणि सन्तापजनकत्वादीनि त्वया कथितानीति शेषः, तेभ्यः समधिकानि वा सन्तीति शेषः, तानि सर्वाण्येव मयि वर्त्तन्त इत्यर्थः, सन्तापाश्रुपातपाण्डुतादर्शनात् तत्समधिकाधीरत्वादिदर्शनाच्चेति भावः।

(ञ) हृदयादिति। अव्यतिरिक्तासि अभिन्नासि। साम्प्रतं युक्तम्। "युक्ते द्वे साम्प्रतं स्थाने" इत्यमरः। गुरुजनैः पित्रादिभिः वक्तव्यतां निन्दनीयतां नीतायाः कन्दर्पेण प्रापितायाः।

(ट) एवमिति। अलमलमेवं ब्रूहीति शेषः। अकारणं यन्मरणं तस्य अनुबन्धेन आग्रहेण। अनाराधितोऽपि प्रसन्नस्तेन। वरो दत्तः, योग्यं प्रत्येव ते अनुरागजननादिति भावः।

(ठ) केति। तरुणतायां यौवने। गुरुः पितेव। सङ्कल्पयति दातुमिति शेषः। रतौ सुरतविषये उपचारं तदुपयोगिविलासादिकं। सुतरामस्याः पञ्चशरक्रियाया अनिवार्यत्वान्नास्ति गुरुजनवक्तव्यतेति भावः। अत्र प्रत्येकवाक्य एव श्रौतोपमालङ्कारः।

"পত্রলেখে! তুমি যেরূপ বলিতেছ, কন্দর্প সেইরূপই, আমাকে কুমারের প্রতি পক্ষপাতী করিয়াছেন এবং তুমি কন্দর্পের যে সকল রূপের কথা বলিয়াছ কিংবা তদধিক যে সকল রূপ আছে, সে সমস্তই এখন আমার উপরে বর্ত্তমান রহিয়াছে। (ঞ) তুমি আমার হৃদয় হইতে অভিন্ন; সুতরাং এখন তোমাকেই আমি জিজ্ঞাসা করি। এখন আমার পক্ষে যাহা উচিত, তুমি তাহার উপদেশ দাও, কারণ, আমি এইরূপ ঘটনায় সম্পূর্ণ অনভিজ্ঞ। আরও দেখ, কন্দর্প আমাকে গুরুজনের নিন্দার ভাজন করিয়াছেন, সুতরাং আমি অত্যন্ত লজ্জিত হইয়াছি; অতএব মন বুঝিতেছে যে, জীবন অপেক্ষা আমার মরণই শ্রেয়ঃ।"

(ট) কাদম্বরী এইরূপ বলিলে পুনরায় আমি তাঁহাকে এইরূপ বলিলাম—"আপনি এখন ইহা বলিবেন না, বলিবেন না। দেবি! অকারণ মরণের জন্য আপনার এই আগ্রহ কেন? ভগবান্ কামদেবকে আরাধনা না করিয়া থাকিলেও, তিনি নিজেই আপনার উপরে প্রসন্ন হইয়া বর দিয়াছেন। (ঠ) এ বিষয়ে একটা গুরুজনের নিন্দা কি? যখন স্বয়ং কামদেব

(१) क्वचित् त्वमिति नास्ति। (२) अपि च गुरु:...। (३)...मे हृदयं।
(४) वरोरु! अनाराधित...।

रत्युपचारं शिक्षयन्ति (ठ)। कति वा (१) कथयामि ते, याः स्वयं वृतवत्यः पतीन् (ड)। यदि च नैवम्, अनर्थक एव तर्हि धर्मशास्त्रोपदिष्टः स्वयंवरविधिः (ढ)। तत् प्रसीद, देवि! अलममुना मरणानुबन्धेन, (२) अपि (३) ते पादपङ्कजस्पर्शेन, सन्दिश, प्रेषय माम्, यामि, आनयामि देवि! ते हृदयदयितम् (४)। (ण)

इत्येवमुक्ते मया प्रीतिद्रवार्द्रया दृष्ट्या पिबन्तीव मां निरुध्यमानैरपि मकरकेतु-शर-शत-जर्जरितां भित्त्वेव लज्जां लब्धान्तरैर्निपतद्भिः (५) अनुरागविभ्रमैराकुलीक्रियमाणा, प्रियवचनश्रवणप्रीत्या च स्वेदाश्लिष्टं (६) उत्क्षिप्य रोमाञ्चजाल-

(ड) कतीति। कति कन्यकाः इति शेषः। अतएवापि बह्वीनां व्यवहारान्नास्ति दोष इति भावः।

(ढ) यदीति। किञ्च, एवं यदि न स्यादित्यर्थः। अनर्थक एव, अननुष्ठानलक्षणाप्रामाण्यादिति भावः। तथा च याज्ञवल्क्यः 'गान्धर्वः समयान्मिथः।" मनुरपि—"इच्छयान्योन्यसंयोगः कन्यायाश्च वरस्य च। गान्धर्वः स तु विज्ञेयो मैथुन्यः कामसम्भवः।" गान्धर्वविधिरेव स्वयम्वरविधिरिति बोध्यम्।

(ण) तदिति। अपि शपथं करोमि। हृदयदयितानयनं प्रत्येव शपथोऽयमिति ज्ञेयम्।

(त) इतीति। मया इत्येवमुक्ते सति, कादम्बरी प्रीतिद्रवेण आनन्दरसेन आर्द्रा तया दृष्ट्या, मां पिबन्तीव। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। निरुध्यमानैरपि संव्रियमाणैरपि, मकरकेतोर्मदनस्य शरशतेन जर्जरितां, अतएव भेदनं सुकरमिति भावः, लज्जां भित्त्वेव लब्धान्तरैः प्राप्तावकाशैः, निपतद्भिराविर्भवद्भिरित्यर्थः, अनुरागविभ्रमैः स्नितानुरागसूचकविलासैः, आकुलीक्रियमाणा अस्थिरीक्रियमाणेति तात्पर्यम्। क्रियोत्प्रेक्षा। किञ्च, प्रियस्य वल्लभस्य चन्द्रापीडस्य सम्बन्धे यद्वचनं तस्य श्रवणेन या प्रीतिरानन्दस्तया, ये स्वेदा

যৌবনকালে কন্যাকে দান করিবার নিমিত্ত পিতার ন্যায় সঙ্কল্প করেন, মাতার ন্যায় তাহা অনুমোদন করেন, ভ্রাতার ন্যায় দান করেন, সখীর ন্যায় উৎকণ্ঠা জন্মান এবং ধাত্রীর ন্যায় অনুরাগের উপযোগী বিলাস প্রভৃতি শিখাইয়া দেন। (ড) আপনার নিকট কয়টি কন্যার কথা বলিব, যাঁহারা আপনা আপনিই পতিকে বরণ করিয়াছিলেন। (ঢ) যদি এইরূপই না হইবে, তবে ধর্মশাস্ত্রোপদিষ্ট স্বয়ংবরবিধান অনর্থক হইত। (ণ) অতএব দেবি! আপনি প্রসন্ন হউন; এই মরণের আগ্রহ পরিত্যাগ করুন; আমি আপনার পাদপদ্ম স্পর্শ করিয়া শপথ করিতেছি, আপনি খবর দিন, আমাকে পাঠান, আমি যাই যাইয়া আপনার প্রাণবল্লভকে আনয়ন করি।'

(ত) আমি এই কথা বলিলে কাদম্বরী, আনন্দার্দ্রতঃ স্নিগ্ধদৃষ্টিতে আমাকে যেন পান করিতে লাগিলেন; মদনের বাণসমূহে জর্জরিত করিয়াছিল বলিয়াই যেন লজ্জাকে ভেদ

(१) किमिव। (२) अलं मरणानु...। (३) शपामि।

(४) सन्दिश मां, याम्यानयामि तं देवं चन्द्रापीडं ते हृदयदयितम्।

(५) निष्पतद्भिः। (६) स्वेदश्लिष्टं।

केन दधतीवोत्तरीयांशुकम्, प्रेङ्खत्-कुण्डल-माणिक्य-पत्रमकर-कोटि-लग्नस्य शशि-किरणमयं मरणपाशमिव मकरकेतुना निहितं कण्ठे हारमुन्मोचयन्ती, प्रहर्षविह्वलान्त:करणापि कन्यकाजनसहजां लज्जामिवावलम्ब्य शनै: शनैरवदत् (१) (त) "जानामि ते गरीयसीं प्रीतिम्, केवलमकठोर-शिरीष-पुष्प-मृदु-प्रकृते: कुत: प्रागल्भ्यमेतावन्नारीजनस्य, विशेषतो बालभावभाज: कुमारीलोकस्य (थ)। साहसकारिण्यस्ता:, या: स्वयं सन्दिशन्ति समुपसर्पन्ति वा (द)। स्वयं साहसं

घर्म्मास्त राश्लिष्टं गात्रसंसक्तं उत्तरीयांशुकं, रोमाञ्चानां जालकेन पुञ्जेन उत्क्षिप्य दधतीव। क्रियोत्प्रेक्षा। किञ्च प्रेङ्खतश्चलत: कुण्डलस्य यो माणिक्यपत्रमकर: रत्ननिर्म्मितपत्रात्मकमकराकारालङ्कारस्तस्य कोटौ अग्रदेशे लग्नं, शशिकिरणमयं तद्वत् शुभ्रमित्यर्थ:, मकरकेतुना मदनेन कण्ठे क्षिप्तं स्थापितं मरणपाशमिव स्थितं हारं मुन्मोचयन्ती प्रथ्यापयन्ती। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कार:। प्रहर्षेण आनन्दातिशयेन विह्वलमन्त:करणं यस्या: सा तथाविधापि, कन्यकाजनस्य सहजा स्वाभाविकी तां, लज्जामवलम्ब्येव शनै:शनैरवदत्। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कार:।

(थ) जानामीति। प्रीतिं स्नेहं मयीति शेष:, अतएवैवं ब्रवीषीति भाव:। तर्हि सत्वरमेव स्वयं वरीतुं कथं नोद्युज्यसे इत्याह केवलमिति। केवलं किन्तु, अकठोरं नवं यत् शिरीष-पुष्पं तद्वत् मृदु: प्रकृति: स्वभावो यस्य तस्य नारीजनस्य, एतावत् स्वयंवरणात्मकं गुरुतरं प्रागल्भ्यं धार्ष्ट्यं कुत:, अपि तु कुतोऽपि न सम्भवतीत्यर्थ:। बालभावभाजो बालिकावस्थस्य कुमारीलोकस्य कन्याजनस्य। अत्र लुप्तोपमार्थापत्त्योरङ्गाङ्गिभावेन सङ्कर:।

(द) तर्हि कथं रुक्मिण्यादयस्तादृशप्रागल्भ्यं प्रकाश इत्याह साहसेति। या: स्वयं सन्दिशन्ति,

করিয়া, ঈষৎ হাস্যপ্রভৃতি অনুরাগসূচক বিভ্রমগুলি স্থান পাইয়াছিল এবং সংবরণ করিতে লাগিলেও সেগুলি আবির্ভূত হইয়া, কাদম্বরীকে একেবারে আকুল করিয়া তুলিয়াছিল; প্রাণেশ্বরের সম্বন্ধীয় বাক্য শ্রবণে আনন্দবশতঃ ঘর্ম্ম উৎপন্ন হইয়া উত্তরীয় বস্ত্রখানাকে গাত্রের সহিত সংলগ্ন করিয়াছিল; এদিকে রোমাঞ্চসমূহও উৎপন্ন হইয়াছিল; সুতরাং কাদম্বরী যেন সেই রোমাঞ্চসমূহ দ্বারা সেই উত্তরীয় বস্ত্রখানাকে উত্তোলন করিয়া ধরিয়াছিলেন। আর দোদুল্যমান কর্ণকুণ্ডলের রত্ননির্ম্মিত মকরাকারভাগের অগ্রে, চন্দ্রকিরণের ন্যায় শুভ্রবর্ণ হারছড়া সংলগ্ন হইয়াছিল; সুতরাং সেই হারছড়াকে মদন কর্ত্তৃক কণ্ঠে সমর্পিত মৃত্যুপাশের ন্যায় বোধ হইতেছিল; কাদম্বরী সেই হারছড়া উন্মুক্ত করিতেছিলেন—এই অবস্থায় তিনি অত্যন্ত আনন্দবশতঃ অন্তঃকরণ *বিহ্বল হইলেও, কন্যাজনের স্বাভাবিক* লজ্জা অবলম্বন করিয়াই যেন ধীরে ধীরে বলিলেন—(থ) "পত্রলেখে! আমার উপর যে তোমার অত্যন্ত প্রণয় আছে, তাহা আমি জানি; কিন্তু নূতন শিরীষ-কুসুমের ন্যায় কোমল-প্রকৃতি রমণীজনের এতদূর প্রগল্ভতা হইবে কিরূপে? বিশেষতঃ বালিকাকন্যার। (দ) যাঁহারা

(१) शनैरवदत्।

सन्दिशन्ती (१) बाला जिह्रेमि (ध)। किं वा सन्दिशामि। अतिप्रियोऽसीति पौनरुक्त्यम्, (न) तवाहं प्रियात्मेति जड़प्रश्नः, (प) त्वयि गरीयाननुराग इति वेश्यालापः, (फ) त्वया विना न जीवामीत्यनुभवविरोधः, (ब) परिभवति मामनङ्ग इत्यात्मदोषोपालम्भः, (भ) मनोभवेनाहं भवते दत्तेत्युपसर्पणोपायः, (म)

इत्यम्भूताय रुक्मिण्यादयः, रुक्मिण्या हि श्रीकृष्णान्तिके विप्रमुखेन सन्देशप्रेषणात्। स्वयमुपसर्पन्ति, इंहस्य-इन्दुमतीदमयन्तीप्रभृतयः, वरणार्थं ताभिः सभायां स्वयमुपसर्पणात्।

(ध) मम तु तादृक्साहसाङ्गीकारेऽपि लज्जैव बाधिकेत्याह स्वयमिति। जिह्रेमि लज्जे।

(न) लज्जाकृतबाधां निराकृत्यापि सन्देशप्रकारमेव न पश्यामीत्याह किंवेति। त्वं ममातिप्रियोऽसीति सन्देशे पौनरुक्त्यं, अतिप्रियत्वस्य तेनाप्यनुभूतत्वेन पुनःसन्देशे ज्ञातार्थज्ञापनात् पुनरुक्ततादोषप्रसङ्गेन नायं सन्देशो रोचत इति भावः।

(प) तवेति। तवाहं प्रियात्मा प्रियास्वरूपा किमिति सन्देशस्तु जड़प्रश्नो निर्बोधजनजिज्ञासा, चेष्टयैव प्रियत्वनिर्णयेऽपि पुनःप्रश्नकरणात् जड़ानान्तु तथैव व्यवहारात्, सुतरामयमपि न समञ्जस इति भावः।

(फ) त्वयीति। त्वयि गरीयान् ममानुराग इति सन्देशस्तु वेश्याया आलापः, तद्वत् स्पष्टाभिधानात्, कुलजानान्तु इङ्गितेनैवानुरागसूचनौचित्यादयमपि पक्षो न युक्त इति भावः।

(ब) त्वयेति। त्वया विना न जीवामीति सन्देशे तु अनुभवविरोधः। जीवनाभावे मरणमेव स्यात् तथात्वे च सन्देशप्रेरणासम्भवात्, सुतरामयमपि सन्देशो न सङ्गच्छत इति भावः।

(भ) परीति। अनङ्गो मां परिभवति परिभूय पीड़यतीति सन्देशे तु आत्मनो दोषस्य कामुकतारूपस्य उपालम्भो निन्दैव करणीयो न तु तन्निवृत्तये सन्देशप्रेरणं, कुलजानां कामविकारस्य नियमनीयत्वेन तत्प्रकाशानौचित्यादयमपि पक्षो न युज्यत इति भावः।

(म) मन इति। मनोभवेनाहं भवते दत्तेति सन्देशस्तु उपसर्पणस्य तदन्तिकगमनस्योपायः, दानेन निष्पन्नस्वत्वस्य वस्तुनः सम्प्रदानान्तिक एवावस्थानौचित्यात्, चातुर्य्योद्भावनपूर्वकत्वादयमपि न सङ्गच्छत इति भावः।

নিজে খবর দেন, কিংবা নিজেরাই প্রিয়তমের নিকটে উপস্থিত হ'ন, তাঁহারা সাহসের কার্য্য করেন। (ধ) আমি বালিকা; তাই নিজেই খবর দিতে লজ্জিত হইতেছি। (ন) কি খবরই বা পাঠাইব; 'আপনি আমার অত্যন্ত প্রিয়' ইহা পুনরুক্তি মাত্র; (প) 'আমি কি আপনার প্রিয়?' ইহা নির্ব্বোধের প্রশ্ন; (ফ) 'আপনার প্রতি আমার গুরুতর অনুরাগ জন্মিয়াছে' এটা বেশ্যার আলাপ; (ব) 'আপনাকে ভিন্ন আমি জীবনধারণ করিতে পারিতেছি না' এ কথা অনুভবের বিরুদ্ধ; (ভ) 'কন্দর্প আমাকে যাতনা দিতেছেন' এই খবরে সেই নিজদোষের নিন্দা করাই উচিত; (ম) 'কামদেব আমাকে আপনার হস্তে দান করিয়াছেন' এটা

---

(१) सन्दिशन्ति, दिशन्ती।

बलाद्धृतोऽसि मयेति बन्धकीधाष्टर्यम्, (य) अवश्यमागन्तव्यमिति सौभाग्य-गर्वः, (र) स्वयमागच्छामीति स्त्रीचापलम्, (ल) अनन्यरक्तोऽयं परिजन इति स्वभक्तिनिवेदनलाघवम्, (व) प्रत्याख्यानशङ्कया न सन्दिशामीत्यप्रबुद्ध-बोधनम्, (श) अनपेक्षितानुजीवित-(१) दुःखदारुणा स्यामित्यतिप्रणयिता, (ष) ज्ञास्यसि मरणे प्रीतिमित्यसम्भाव्यमेव (२)।" (स)

इति श्रीबाणभट्टविरचितः कादम्बरीपूर्वभागः।

(य) बलादिति। मया त्वं बलाद्धृतोऽसीति सन्देशे तु बन्धकीधाष्टर्यं कुलटाया धृष्टताप्रतीतिः। कुलजायास्तु तदनौचित्यादेषोऽपि पन्था न रोचत इति भावः।

(र) त्वावश्यमिति। त्वया अवश्यमागन्तव्यमिति सन्देशे तु सौभाग्यस्य प्रियवाल्लभ्यस्य गर्वोऽहङ्कारः प्रकाशते। तस्य लभावादेषोऽपि न युज्यत इति भावः।

(ल) स्वयमिति। स्वयमागच्छामीति सन्देशे तु स्त्रीचापलं स्त्रीणां स्वभावसुलभं चाञ्चल्यमात्रं प्रकाशते, वास्तविकगमनासम्भवात्, सुतरामयमप्युपेक्षणीय इति भावः।

(व) अनन्येति। अनन्यरक्तस्त्वदेकमात्रानुरक्तः अयं मत्स्वरूपः परिजन इति सन्देशेऽपि स्वभक्तेः स्वयमेव निवेदनेन लाघवं, सुतरामेषोऽपि परिहरणीय इति भावः।

(श) प्रत्याख्यानेति। प्रत्याख्यानशङ्कया सन्देष्टव्यविषयनिराकरणातङ्केन न सन्दिशामीति सन्देशेऽपि अप्रबुद्धस्य अज्ञातप्रत्याख्यानस्य बोधनं तज्ज्ञापनं, सुमहत्त्वानवदतो नेषोऽपि रोचत इति भावः।

(ष) अनेति। न अपेक्षितं स्पृहणीयतया कयापि न समीहितं अनुजीवितं वल्लभवियोगानन्तरकालवर्त्ति जीवनं येन तादृशेन दुःखेन सततताद्दृशदुःखसहनेन दारुणा कठिनप्रकृतिः स्यां सखीनां पुर इति शेषः, इति सन्देशे अतिप्रणयिता प्रतीयेत। वस्तुतस्तु अद्यापि तादृशप्रणयिताया अभावादिदमपि न सन्देश्यमिति भावः।

(स) ज्ञास्यसीति। मरणे त्वद्वियोगयातनयैव मम मृत्यौ सति प्रीतिं ज्ञास्यसि त्वयि कियती मे

তাঁহার নিকট যাইবার উপায়; (য) 'আমি আপনাকে বলপূর্ব্বক ধরিয়াছি' এটা কুলটার ধৃষ্টতা; (র) 'আপনি অবশ্য আসিবেন' এটা সৌভাগ্যের অহঙ্কার; (ল) 'আমি নিজেই আসিতেছি' ইহা স্ত্রীলোকের স্বাভাবিক চঞ্চলতা; (ব) 'এই ব্যক্তি কেবল আপনারই অনুরক্ত পরিজন' এইরূপ খবর দিলে নিজের ভক্তি নিজেই প্রকাশ করায় লঘুতা প্রকাশ পায়; (শ) 'আপনি প্রত্যাখ্যান করিবেন এই আশঙ্কায় খবর দিতেছি না' ইহাতেও, যিনি প্রত্যাখ্যান জানেন না, তাঁহাকে তাহা জানান হয়; (ষ) 'প্রিয়তমের সহিত বিচ্ছেদের পর যে দুঃখনিবন্ধন কেহই জীবনের আকাঙ্ক্ষা করে না, আমি সেই দুঃখই সহ্য করিতে থাকায় সখীগণের নিকট কঠিন হৃদয় বলিয়া পরিচিত হইতেছি' ইহাতে অত্যন্ত প্রণয় প্রকাশ পায় (স) এবং 'আমার মৃত্যু হইলে, আপনার প্রতি কতদূর প্রণয় ছিল, তাহা জানিতে পারিবেন' ইহা নিতান্তই অসম্ভাবনীয়।"

---

* (१)···अनुजीवि···। (२) ज्ञास्यसि मरणेन प्रीतिमित्यसम्भाव्यमिति।

प्रोषितासीदित्यवगमिष्यसि इति प्रीतिं ज्ञापनसम्भाव्यनेव, नितान्तमन्दभाग्यतया मे मरणस्यैवासम्भवात्, सुतरामयमपि मन्दभागी न प्रेषणीय इति भावः ।

हन्त ! अस्यां किल लौकिकमधुरिमाढ्यालिकायां मधुरणमहानन्दमनुभवन्त एवानवसरे काव्यस्य कवेश्चावसानमवगच्छन्तः शोकसागर एव सन्तरन्ति श्रोतारः ।

जानकीविक्रमं नाम नाटकं वीररौद्रवत् ।
नाटिकामुज्ज्वलरसां श्रीविराजसरोजिनीम् ॥
वियोगवैभवाख्यानं खण्डकाव्यमनन्तरम् ।
नानावर्ण्यं महाकाव्यं रुक्मिणीहरणाभिधम् ॥
स्मृतिचिन्तामणिं नाम संक्षिप्तस्मृतिसंग्रहम् ।
उत्तररामचरित-टीकां सर्वार्थबोधिनीम् ॥
मालविकाग्निमित्रस्य मालतीमाधवस्य च ।
टीकां कृत्वा, गद्यकाव्यं कुर्वाणः सरलाभिधम् ॥
कोटालिपाड़ीनगरीनिवासी नदीपुरीशस्य सभाप्रवासी ।
सत्काव्यपोऽध्यापनमुख्यकर्मा व्यधादिमां श्रीहरिदासशर्म्मा ॥
गजाग्निवह्निन्दुमिते शकाब्दे विंशेऽह्नि शुक्रे मिथुनस्थसूर्ये ।
प्रकल्पिता कल्पलता मयेयं ईशप्रसादेन समाप्तिमाप्ता ॥
सर्वाण्यभीप्सितफलानि सदा ददानां नात्यल्पपल्लववतीं सरलां समूलाम् ।
छायासमाहृतसमस्तगुणज्ञलोकासिनां समाश्रयतु कल्पलतामपूर्वाम् ॥

इति श्रीगङ्गाधरविद्यालङ्कारभट्टाचार्य्यात्मज-श्रीहरिदाससिद्धान्तवागीशभट्टाचार्य्यविरचितायां कल्पलताभिधानायां कादम्बरीटीकायां पूर्वभागः समाप्तः ॥ ० ॥

2090



